

**बाघ, सह-परभक्षी, चौपायों एवं
उनके वासस्थल का अनुश्रवण-2018
हेतु मार्गदर्शिका**



**प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी), मध्यप्रदेश
राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर, मध्यप्रदेश
2018**



बाघ, सह-परभक्षी, चौपायों एवं उनके वासस्थल का अनुभवण-2018 हेतु मार्गदर्शिका

डॉ. धर्मेन्द्र वर्मा, भा.व.से.
संचालक

श्री ओ.पी. तिवारी, भा.व.से.
उप संचालक

श्री राघवेन्द्र विसेन
सहायक संचालक

डॉ. अंजना राजपूत
प्रभारी, वन्यप्राणी शाखा

डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार
रिसर्च एसोसिएट

अन्य सहयोगी

ऋषिका ठाकुर, संदीप चौकसे, भास्कर भंडारी
प्रशांत कोरी, कृष्ण प्रकाश उपाध्याय, टिंक्ल पसारी
साजिद अली, शैलेन्द्र यादव, ऋचा पांडे, मो. अशद हुसैन, स्नेहलता मिश्रा
प्रताप राव वाघ (डिजाइनिंग)



प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी), मध्यप्रदेश

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर, मध्यप्रदेश



Quality Council of India
An ISO 9001:2008 Certified Body



9001:2008



National Accreditation Board
for Education and Training



जितेन्द्र अग्रवाल, भा.व.से.
प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) एवं
मुख्य वन्यप्राणी अभिरक्षक
मध्य प्रदेश

संदेश

भारत के हृदय स्थल के रूप में स्थित मध्यप्रदेश प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता विशेषकर वन एवं वन्यप्राणियों की विविधता के लिये जाना जाता है। वन संसाधन एवं वन्यप्राणियों के संरक्षण के लिए मध्यप्रदेश वन विभाग कार्य में अग्रणी रहा है। पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन बनाए रखने के लिए बाघ की अहम भूमिका है, बाघ का संरक्षण पूरे पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण है। वन्यप्राणी संरक्षण की दृष्टि से अखिल भारतीय बाघ गणना का आयोजन किया जाता है। अब तक तीन चरणों (2006, 2010 एवं 2014) में बाघ गणना का कार्य हो चुका है। बाघ गणना का चौथा चरण 2018 में संपन्न किया जाना है। इस चरण में राष्ट्रीय व्याघ्र संरक्षण प्राधिकरण एवं भारतीय वन्यजीव संस्थान के द्वारा M-STriPES Software को शामिल किया गया है। इस वर्ष M-STriPES के Ecological Module (Mobile based Android App) के माध्यम से गणना किया जाना सुनिश्चित किया गया है। गणना में प्रयुक्त किये जाने वाले आधुनिक उपकरण जैसे लेजर रेंज फाइंडर, कम्पास, जी.पी.एस. एवं ट्रैप कैमरे आदि का उपयोग पूर्व में केवल संरक्षित क्षेत्रों में ही सीमित था। इस वर्ष सामान्य वन मंडलों में भी इन उपकरणों का प्रयोग कर आंकड़े एकत्र किये जायेंगे।

वन्यप्राणी आंकलन की वैज्ञानिक तकनीक को वन विभाग के क्षेत्रीय अमले तक पहुंचाने में राज्य वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर की अहम भूमिका रही है। साथ ही प्रशिक्षण के माध्यम से मास्टर ट्रेनर्स तैयार किये जा रहे हैं जो कि अगले चरण में क्षेत्रीय अमले को ट्रेनिंग प्रदान करेंगे। उक्त कार्य हेतु एक मार्गदर्शिका भी तैयार की गयी है। जिसमें बाघ तेंदुआ आदि मांसाहारी एवं शाकाहारी जानवरों की जानकारी के साथ-साथ गणना नई वैज्ञानिक तकनीक (Mobile Android App "Ecological Module") के उपयोग की भी जानकारी समाहित है। वन्यप्राणी आंकलन पद्धतियां एवं आधुनिक तकनीक से इस वर्ष की जाने वाली गणना से उच्च गुणवत्ता के आंकड़े आपेक्षित हैं। जिससे प्रदेश में वन्यप्राणियों के आंकलन की सटीक जानकारी प्राप्त हो सकेगी। इस दिशा में यह मार्गदर्शिका सहायक सिद्ध होगी।

जितेन्द्र अग्रवाल



डॉ. धर्मेन्द्र वर्मा, भा.व.से.
संचालक
राज्य वन अनुसंधान संस्थान
जबलपुर

संदेश

मध्यप्रदेश वन्यप्राणियों के आवास स्थल के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं। विगत तीन चरणों में (2006, 2010 एवं 2014) अखिल भारतीय बाघ गणना आंकलन के अनुसार मध्यप्रदेश में बाघों की संख्या लगभग 2006 में 300, 2010 में 257 एवं 2014 में 308 पाई गई है। बाघ गणना का चौथा चरण वर्ष 2018-19 में निर्धारित किया गया है। विगत तीन चरणों में की गई गणना के अनुभव एवं डेटा कलेक्शन पद्धतियों में और भी सरलीकरण करने के उद्देश्यों से, इस चरण की प्रक्रिया में राष्ट्रीय व्याघ्र संरक्षण प्राधिकरण एवं भारतीय वन्यजीव संस्थान देहरादून द्वारा तकनीकी सुधार एवं संशोधन किया गया है।

गणना को और भी आधुनिक एवं वैज्ञानिक तरीकों से करने के लिए इस चरण के आंकलन के लिए "Mobile Ecological App" का उपयोग किया जाएगा। प्रदेश के सभी संरक्षित क्षेत्रों के साथ-साथ सामान्य वनमंडलों में शाकाहारी एवं मांसाहारी वन्यप्राणियों के सटीक आंकलन के लिए रेंज फाईंडर, कम्पास, कैमरा ट्रैप, जीपीएस आदि आधुनिक यंत्रों का उपयोग किया जाएगा।

क्षेत्रीय स्तर में इस आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकी को सहज रूप से उपयोग करने के उद्देश्य हेतु संस्थान की वन्यप्राणी शाखा द्वारा एक मार्गदर्शिका तैयार कि गई है। इस मार्गदर्शिका में गणना के तरीकों के बारे में विस्तृत जानकारी दर्शायी गई है। बाघ, तेंदुआ आदि मांसाहारी एवं चीतल, सांभर आदि शाकाहारी जानवरों की स्पष्ट रूप से पहचान के बारे में जानकारी के साथ-साथ उनकी प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में एकत्रित की गयी साक्ष्य की जानकारी को "Android App" की माध्यम से M-STHPES के अंतर्गत Ecological Module में प्रविष्ट करने के बारे में भी जानकारी उपलब्ध करायी गई है।

इस पुस्तिका में गणना पद्धतियों में सरलता के साथ-साथ जो आधुनिक जानकारी उपलब्ध कराई गई है, उसकी सहायता से बीट स्तर से सटीक जानकारी प्राप्त हो सकेगी जिससे गणनाओं की गुणवत्ता उच्च स्तरीय होगी एवं प्रदेश में वन्यप्राणियों के आंकलन का सटीक परिणाम प्राप्त किया जा सकेगा।

धर्मेन्द्र वर्मा

प्रस्तावना

वन्यजीव मध्यप्रदेश की धरोहर है। प्रदेश में बाघ, तेंदुआ, भेड़िया, सोनकुत्ता, भालू आदि अन्य मांसाहारी जानवर एवं घीतल, सांभर, रोजरा (नीलगाय), जंगली सुअर, बारासिंघा आदि शाकाहारी जानवर पाये जाते हैं। चूंकि वन्यजीव, पारिस्थितिकी तंत्र को संतुलित बनाये रखने में मुख्य भूमिका निभाते हैं, इस कारण उनकी आबादी के बारे में सटीक जानकारी अति आवश्यक है।

विगत वर्षों 2006, 2010, 2014 में पूरे भारत वर्ष में वन्यजीवों की संख्या का आंकलन का कार्य किया गया। पुनः वर्ष 2018 में पूरे भारत के साथ-साथ, प्रदेश स्तर पर भी वन्यप्राणियों के आंकलन का कार्य किया जाएगा। इस कार्य हेतु प्रदेश के सभी छः बाघ प्रकल्पों, राष्ट्रीय उद्यानों, अभ्यारणों तथा संलग्न क्षेत्रीय वन मंडलों में वन्यप्राणी आंकलन का कार्य प्रस्तावित है।

वन्यप्राणियों के सटीक आकड़ों के लिए उनके प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष साक्ष्यों की पहचान किया जाना अत्यंत आवश्यक है। इस आवश्यकता को देखते हुए, मध्यप्रदेश शासन, वन-विभाग के आदेशानुसार, मध्यप्रदेश राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा एक मार्गदर्शिका का संकलन किया गया है, जिसका उद्देश्य है वन विभाग के क्षेत्रीय कर्मचारियों को वन्यप्राणियों एवं उनके आवास स्थलों से अवगत कराना, साथ ही आंकलन कार्यों में उपयोग किये जाने वाले विभिन्न आधुनिक उपकरणों से परिचय, उनका क्षेत्र स्तर पर संचालन आदि के बारे में उचित जानकारी प्रदान कराना, साथ ही आंकलन कार्यों में उपयोग किये जाने वाले विभिन्न आधुनिक उपकरणों से परिचय, उनका क्षेत्र स्तर पर संचालन आदि के बारे में उचित जानकारी प्रदान कराना है।

उक्त पुस्तिका में आंकलन के बारे में दी गई जानकारी, राष्ट्रीय व्याघ्र संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) एवं भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून (WII) द्वारा तैयार की गई "बाघ, सह-परगक्षी, चौपायों एवं उनके वास स्थलों का अनुश्रवण वर्ष 2017 तथा प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) म.प्र. 2016" गाईड लाईन के आधार पर है। मार्गदर्शिका में वन्यजीवों की पहचान हेतु दी गई जानकारी, श्री विवेक मेनन द्वारा लिखित पुस्तक "एक फील्ड गाईड भारतीय स्तनपायी प्राणी" पर आधारित है। वन्यप्राणियों के साक्ष्यों की पहचान हेतु उपलब्ध जानकारी, विश्व पर्यावरण निधि (WWF) द्वारा तैयार गाईडलाईन "रीडिंग पगमार्क" से भी संकलित किया गया है, इसके अतिरिक्त शाखा के वैज्ञानिक एवं शोधार्थियों के व्यक्तिगत क्षेत्रीय अनुभवों के आधार पर एवं विभिन्न प्रकार के विषय संबंधित शोधपत्रों की मदद से संकलित किया गया है।

संकलित मार्गदर्शिका विभाग के अग्रणी स्टाफ के वन्यप्राणी आंकलन के समय अनुभव की जाने वाली कठिनाईयों के निराकरण में सहायक सिद्ध होगी।

“बाघ, सह-परमक्षी, चौपायों एवं उनके वासस्थल का अनुश्रवण-2018 हेतु मार्गदर्शिका”

विषय सूची

क्र.	विवरण	पृष्ठ क्र.
1.	बाघों, तेन्दुओं, अन्य सह-परमक्षियों एवं बड़े शाकाहारी पशु के चिन्हों की आंकलन का प्रारूप	1
2.	ट्रांसक्ट लाइन पर वन्यजीवों एवं मवेशियों की गणना का प्रारूप	6
3.	वनस्पति एवं मानवीय व्यवधान के सर्वेक्षण का प्रारूप	11
4.	चौपायों के गोबर सर्वेक्षण का प्रारूप	20
5.	मध्यप्रदेश में पाये जाने वाले प्रमुख वन्यप्राणी प्रजातियों का विवरण	
	(i) मांसाहारी वन्यप्राणियों के साक्ष्य	27
	(ii) शाकाहारी वन्यप्राणियों के साक्ष्य	32
	(iii) झाड़ी प्रजाति	35
	(iv) घास प्रजाति	37
	(v) खरपतवार प्रजाति	40
6.	बाघ (Tiger)	41
7.	तेन्दुआ (Leopard)	42
8.	स्याहगोश (Caracal)	43
9.	जंगली बिल्ली (Jungle Cat)	43
10.	रजत चित्रित बिल्ली (Rusty Spotted Cat)	44
11.	खूप्या बाघ (Fishing Cat)	44
12.	तेंदुआ बिल्ली (Leopard Cat)	45
13.	सीनकुत्ता या डोल (जंगली कुत्ता) (Asiatic Wild Dog)	45
14.	भेड़िया (Indian Wolf)	46
15.	गीदड़ या सियार (Golden Jackal)	46
16.	भारतीय लोमड़ी (Indian Fox)	47
17.	धारीदार लकड़बग्घा (Striped Hyaena)	47
18.	मालू (Sloth Bear)	48
19.	जंगली सुअर (Wild Pig)	48
20.	छोटा भारतीय मुश्कबिलाव (कस्तूरी) (Small Indian Civet)	49

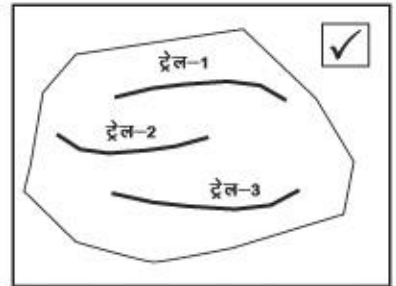
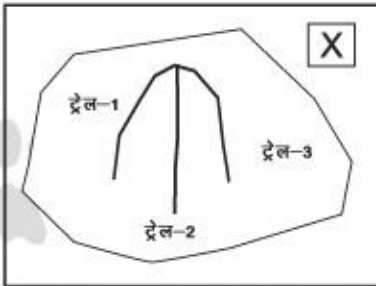
क्र.	विवरण	पृष्ठ क्र.
21.	खटस (Palm Civet)	49
22.	छोटा भारतीय नेवला (Indian Grey Mongoose)	50
23.	लाल नेवला (Rudy Mongoose)	50
24.	बिज्जु (Honey Badger or Ratel)	51
25.	भारतीय पैंगोलिन (Indian Pangolin)	51
26.	सामान्य भारतीय शश (Black Napped Hare)	52
27.	भारतीय साही (Indian Porcupine)	52
28.	भारतीय बड़ी गिलहरी (Indian Giant Squirrel)	53
37.	उड़न गिलहरी (Flying Squirrel)	53
38.	सांभर (Sambhar Deer)	54
39.	बारासिंघा (Hard Ground Barasingha)	54
40.	चीतल (Spotted Deer)	55
41.	मूषक हिरण (Mouse Deer)	56
42.	भेड़की / काकड़ (Barking Deer)	56
43.	कृष्णमृग (Black buck)	57
44.	रोजड़ा या नीलगाय (Blue bull)	57
45.	चौसिंघा (Four Horned Antelope)	58
46.	चिंकारा (Chinkara)	59
47.	गौर (Indian Bison)	59
48.	लाल जंगली मुर्गा / मुर्गी (Red Jungle Fowl)	60
49.	स्लेटी मुर्गा / मुर्गी (Grey Jungle Fowl)	60
50.	मोर (Pea Fowl)	61
51.	हनुमान लंगूर या ग्रे लंगूर (Hanuman or Gray Langur)	61
52.	लालमुख बंदर (Rhesus Macaque)	61
53.	M-STriPES Mobile App "Ecological Module" के संचालन की तकनीक	62
54.	मध्यप्रदेश के वनों में पाई जाने वाली प्रमुख वनस्पति प्रजातियाँ	85

बाघों, तेन्दुओं, अन्य सह-परभक्षियों एवं बड़े शाकाहारी पशु के चिन्हों की आंकलन का प्रारूप

बाघों, तेन्दुओं, अन्य सह-परभक्षियों एवं बड़े शाकाहारी के होने, न होने एवं उनके उपयोग की सघनता के चिन्हों के आंकलन एवं तुलनात्मक तादाद (संख्या) के आंकड़े इकटठा करने के लिए विधि :

- आंकड़े इकटठा करने के लिए बीट एक इकाई होगी ।
- बीट के अन्दर उन इलाकों की खोज की जाये, जहाँ बाघों के पाये जाने की सम्भावना अधिक हो ।
- बाघ/तेन्दुआ ज्यादातर कच्चे रास्ते, पगडंडी, नदी और नालों के किनारे इस्तेमाल करते हैं । इसलिये बीट के इन क्षेत्रों में चिन्ह ढूँढ़ने की ज्यादा कोशिश की जाये (आरेख 1) ।
- बाघ और तेंदुए के लिये सैम्पलिंग करते समय यदि किसी अन्य मौसाहारी प्राणी की उपस्थिति के चिन्ह मिलते हैं, तो उनकी जानकारी भी दर्ज की जानी चाहिये ।
- एक से तीन तक व्यक्ति जिन्हें उसी स्थान (बीट) की जानकारी हो, बाघों/तेंदुओं के चिन्हों की खोज एवं गणना करें ।
- हर बीट में 3-5 बार चिन्हों की खोज की जाये । यह खोज बीट के अलग क्वार्टरमेंट में हो या 1-5 दिन अलग व विभिन्न समय में हो । प्रत्येक खोज में कम से कम 5 कि.मी. की दूरी तय की जाये । यह खोज उन इलाकों में की जाये जहाँ बाघों/तेन्दुओं के मिलने की सम्भावना अधिक हो । इस बात का ध्यान रखा जाये कि प्रत्येक खोज में तय दूरी को माप कर सही आंकड़े दर्ज किये जायें । प्रत्येक खोज में व्यतीत किया समय अवश्य लिखें (खोज शुरू करने और अंत करने का समय) । अगर खोज के दौरान कुछ समय किसी और काम में व्यतीत किया गया हो तो व्यतीत किये गये समय को दिये गये कॉलम में दर्ज करें । हर खोज के शुरूआती स्थल का जी.पी.एस. निर्देशांक दर्ज किये जाने की आवश्यकता है ।
- सभी संरक्षित क्षेत्रों और प्रादेशिक वनों में, जहाँ जी.पी.एस. यूनिट उपलब्ध है, प्रत्येक 20 मिनट में जी.पी.एस. निर्देशांक दर्ज किये जाने की आवश्यकता है ।
- बाघों, तेन्दुओं के चिन्हों से संबंधित आंकड़े एकत्र करने के लिये प्रत्येक बीट में कम से कम 15 कि.मी. की दूरी तय की जाये ।
- बाघ, तेन्दुआ के चिन्हों को विभिन्न वर्गों में निम्नलिखित रूप में दर्ज करें । (1) पदचिन्ह मार्ग, (2) और अन्य मौसाहारियों का मल (बहुत ताजा-नरम, गीला, गन्ध वाला, ताजा परन्तु सूखा-समूया एवं घमकीली सातह बरकरार हो और पुराना-सूखा-बाल और हड्डियां दिख रही हों), (3) जमीन पर की गई खरोंध, (4) बाघ/तेन्दुआ द्वारा पेड़ पर छोड़ी गई गंध (स्रे, रगड़), (5) वृक्ष के तनों पर खुरचने के निशान, (6) दहाड़ने की आवाज (7) स्वयं बाघ/तेन्दुआ को देखना ।

- अगर पदचिन्हों की कतार देखें, पूरी कतार को एक चिन्ह माना जाये (न कि पदचिन्हों को अलग-अलग गिना जाये)। बाघ/तेन्दुआ एवं अन्य मांसभक्षियों के पदचिन्हों की कतार अगर बहुत लम्बी हो (1 किमी या अधिक) तक भी उसे एक ही चिन्ह माना जाये, और आंकड़ों के पत्रक में बाघ द्वारा बनाई पदचिन्हों की कतार की दूरी के बारे में टिप्पणी दर्ज की जाये।
- बाघ/तेन्दुआ के चिन्ह जो खोज करने के लिए चुने गये मार्गों से भिन्न पाये जाये, तब भी उन्हें दर्ज किया जाये और उसके जी.पी.एस. निर्देशांक लिये जायें। बाघ के चिन्हों की खोज के दौरान अन्य मांसभक्षी जानवरों के प्राप्त चिन्हों को भी दर्ज किया जाये।
- बाघिन/मादा तेंदुआ जो शावकों के साथ पाई जाये अथवा विश्वास किये जाने योग्य शावकों के चिन्ह (बाघिन/मादा तेंदुआ और शावकों के पदचिन्ह आदि) जो पिछले एक महीने के अन्दर प्राप्त हुये हों, दर्ज की किये जाये।
- वर्ष 2018 की गणना में बड़े शाकाहारी प्राणियों को भी सम्मिलित किया गया है। बड़े शाकाहारी प्राणियों के अंतर्गत मध्यप्रदेश में गौर पाया जाता है। अतः प्रपत्र 1 में गौर के साक्ष्य के रूप में पदचिन्ह एवं गोबर को भी दर्ज किया जाना है।
- यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि आंकड़े पूरी ईमानदारी से एकत्र किये जायें। यह संभव है कि बाघ के बीट में होने की जानकारी हो, परन्तु संभवतः खोज के दौरान कोई चिन्ह न मिले। इस स्थिति में चिन्हों का प्राप्त न होना दर्ज किया जाये और साथ ही आंकड़ों के पत्रक में बाघों/तेन्दुओं के होने के संकेत के बारे में टिप्पणी कॉलम (e) में दर्ज की जाये। बीट में बाघ के न होने के आंकड़े भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने कि पाये जाने के, सही विश्लेषण के लिये वास्तविक आंकड़े प्रस्तुत किये जायें।
- बीट में मासाहारी एवं बड़े शाकाहारी प्राणियों के साक्ष्य का सर्वेक्षण करने के लिए निम्नलिखित आरेख के अनुसार ही ट्रेल पर चलना है ताकि बीट के लगभग पूरे क्षेत्र का सर्वे हो सके।



प्रपत्र-1: बाघ/तेंदुवा अन्य परमक्षियों एवं बड़े शाकाहारी पशुओं के चिन्हों के सर्वेक्षण

वनापठक: परिषद: शीट: दिनांक:
 प्राप्य समय: जंत समय: कार्य क्र.:
 प्राप्य अवधि: N प्राप्य देशांतर: E
 जंत अवधि: N जंत देशांतर: E
 पूर्ण एवं सूरी (कि.मी.) विभाग में विद्यमान गन्ध समय:

दल के सदस्य		नाम	पद	दूरता
1				
2				

क्र. सं.	समय	अवधि		देशांतर		चिन्ह के प्रकार*	प्रजाति**	चिन्ह की अवस्था***	टिप्पणी
		दि.	मि.	से.	दि.				
1.									
2.									
3.									
4.									
5.									
6.									
7.									
8.									
9.									
10.									
11.									
12.									
13.									
14.									
15.									
16.									

चिन्ह के प्रकार: सिंग/लेकी/गोबर SCT/PLD/DNG, पादचिह्न/ट्रैक-PT, आवाज-VC, पैर पर खरोंच-BK, जमीन पर खरोंच (कुड़ेदान) -SCB, लीटान-BL, खे-SPB, खोदान-DIG, गार-B, सिंग और जमीन पर खरोंच-SS आदि कोट अवसर प्रत्येक में भरना है।
 प्रजाति: बाघ, तेंदुवा, सोन सुपा, लकड़बग्घा, गाय, भैंस/बैंगल, गोरु/सिंघार, जंगली हिरनी, लोमड़ी, सिंघार पोश/खैराबल, बंटीखोर/बंगालिन, सुन नेवला (से मोंगल), रस्सी-सॉटिड कैंट, रेडल/बिल्लू/बुलर, कस्तुरी/मुकामिलाल (संगीत इंडियन सिंगेट), लकड़ी/खलस (यंग सींगेट), साल कर वाला भैरवा (रस्की गोरु), तेंदुवा हिल्ली (सिपकै कैंट), सुया काठ (किंगडिंग कैंट) एवं बड़े शाकाहारियों में मरुअदरक में पैर को सिंग जाए।

चिन्ह की अवस्था: बहुत लज्ज-VI, लज्ज-ई, पुपान-0, बहुत पुपान-VO
 जानवर का प्रत्यक्ष दर्शन होने पर प्रतीक सफा, अन्य और सिंग का विकल्प टिप्पणी में दर्ज करें।
 नोट: 1. अवधिक चिन्ह मिलने की दशा में अतिरिक्त प्रपत्र का उपयोग करें।

- पिछले बारह महीने में बाघिन के बच्चों के होने का प्रमाण हां/नहीं यदि हाँ तो बच्चों की संख्या..... अनुमानित आयु माह
 क) वन कर्मचारी द्वारा देखा गया () ख) पदचिन्ह पाये गये ()
 ग) स्थानीय निवासी द्वारा सूचना () ग) अधिकारी द्वारा देखे गये ()
 (उपरोक्त उचित व्याख्या को ✓ करें)
- अगर बाघ होने के प्रमाण बीट में हों, परंतु खोज के दौरान कोई चिन्ह न मिला हो, तब किस आधार पर बाघ होने को प्रमाणित किया गया पदचिन्ह (), प्रत्यक्ष (), विष्ठा (), अन्य चिन्ह () और अनुमानित तिथि/माह लिखें।
- पिछले बारह महीने में तेन्दुआ के बच्चों के होने का प्रमाण, हां/नहीं यदि हाँ तो बच्चों की संख्या अनुमानित आयु दिनांक/माह
 क) वन कर्मचारी द्वारा देखा गया () ख) पदचिन्ह पाये गये ()
 ग) स्थानीय निवासी द्वारा सूचना () ग) अधिकारी द्वारा देखे गये ()
 (उपरोक्त उचित व्याख्या को ✓ करें)
- अगर तेन्दुआ के मौजूद होने के प्रमाण बीट में हो, परन्तु खोज के दौरान कोई चिन्ह न मिला हो, तब किस आधार पर तेन्दुआ के होने को प्रमाणित किया गया। पदचिन्ह (), प्रत्यक्ष (), विष्ठा (), अन्य चिन्ह () और अनुमानित तिथि/माह लिखें।
- इस बीट में पिछले 3 महीनों में पालतू जानवरों के शिकार की जानकारी, परभक्षियों द्वारा शिकार की संख्या, बाघ तेन्दुआ जंगली कुत्ता और अन्य परभक्षी (परभक्षी का विवरण)। घटनाओं की संख्या:
- सुझाव एवं टिप्पणी

प्रपत्र 1- मरने के अतिरिक्त मार्गदर्शी बिन्दु

- वितरित की गई फील्ड गाईड एवं वन्यप्राणियों के चिन्ह/साक्ष्य की पहचान पुस्तिका में दिये गये बाघ/तेंदुआ अन्य सह परभक्षियों एवं बड़े शाकाहारी पशुओं के चिन्हों का प्रारूप इस प्रपत्र को मरने के पूर्व ध्यान से पढ़ें।
- प्रपत्र-1 को अलग-अलग दिनांकों के लिये पृथक-पृथक प्रपत्र में करें।
- मुख्य डाटा कलेक्शन प्रारंभ करने के पूर्व जी.पी.एस. द्वारा प्रारंभ बिन्दु का अक्षांश एवं देशांतर अनिवार्य रूप से लिया जाकर प्रपत्र 1 में भरें।
- सभी संरक्षित क्षेत्र और प्रादेशिक वनों में जहां जी.पी.एस. यूनित उपलब्ध है, प्रत्येक 20 मिनट में जी.पी.एस. निर्देशांक दर्ज किये जाने की आवश्यकता है जिसकी जानकारी टिप्पणी में दर्ज की जाये।
- सामान्यतः गारे के पास ही मांसाहारी प्राणी की विष्ठा बहुत पास-पास कई जगह पायी जाती है। इन सभी को एक ही चिन्ह माना जाये बशर्त सभी विष्ठाएँ एक ही समय की हों।
- बाघ/तेंदुआ के आने एवं जाने के निशानों की पंक्ति को दो अलग-अलग चिन्ह माना जाये। अगर कोई पंक्ति मादा तथा बच्चों द्वारा बनाई गई हो तो बच्चों एवं मादा की संख्या के अनुसार चिन्हों की संख्या दें।
- बाघ एवं तेंदुआ की विष्ठा एवं खरोंच अगर कतार में मिलें तो उसको अलग-अलग साक्ष्य माना जायेगा।
- मांसभक्षियों के चिन्हों की खोज धीरज एवं सावधानी के साथ प्रतिदिन लगातार 5 कि.मी. (6 घण्टे) तक की जाये।

आरेख 1- बाघ के चिन्हों की गणना



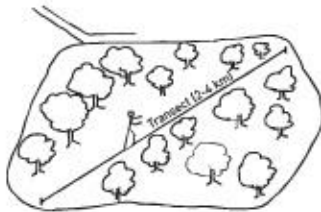
ट्रांसेक्ट लाइन पर वन्यजीवों एवं मवेशियों की गणना का प्रारूप

02

यह प्रारूप चौपायों की गणना का आसान और कारगर तरीका है। इस विधि के द्वारा रेखांकित किये गये मार्ग (ट्रांसेक्ट) पर चलना होगा। इस मार्ग को रेखांकित और उस पर गणना करने की विधि निम्नलिखित है -

- आंकड़े इकट्ठा करने के लिए बीट एक इकाई होगी।
- बीट, उनकी बनावट, क्षेत्रफल, वनस्पति और भूमिस्थिति विशेषताओं के आधार पर 2 किमी से 4 किमी तक लंबे रेखांकित मार्ग की पहचान गणना इकाई के रूप में की जायेगी।

आरेख 2- बीट में लाइन ट्रांसेक्ट को चिन्हित करना



अ) लाइन ट्रांसेक्ट उस बीट में जहाँ एक तरह की वनस्पति

ब) लाइन ट्रांसेक्ट जहाँ पर बीट में तरह-तरह की वनस्पति हो



- यह लाइन ट्रांसेक्ट बीट में एक ही तरह की वनस्पति में डाला जायेगा। यदि बीट में दो, या दो से अधिक तरह की वनस्पतियां हों, उदाहरण के तौर पर मिश्रित सागौन वन 40% और बचा हुआ 60% क्षेत्रफल बांस का मिश्रित वन का हो तब दो लाइन ट्रांसेक्ट दोनों वनस्पतियों में बनाने होंगे, जिसमें प्रत्येक ट्रांसेक्ट की लम्बाई 2 कि.मी. होगी (आरेख-2ब)।
- जैसा कि आरेख 2 (ब) में बताया गया है, बीट में लाइन ट्रांसेक्ट को दो हिस्सों में बांटा गया है। प्रत्येक हिस्से में कम से कम 2 किमी का रेखांकित मार्ग होना चाहिये।

- इस बात का ध्यान रखा जाये कि लाइन ट्रांसैक्ट व्यस्त सड़क, नदी अथवा भूदृश्य के रेखीय लक्षणों के समानांतर न हो।
- प्रत्येक बीट में लाइन ट्रांसैक्ट के प्रारम्भिक एवं अन्तिम हिस्से का जी.पी.एस. द्वारा अक्षांश और देशांतर लेना होगा।
- ट्रांसैक्ट पर बहुलता से पाये जाने वाले वन* एवं भौतिकी* का प्रकार लिखें।
- एक या दो व्यक्तियों को लाइन ट्रांसैक्ट पर प्रातः (6.30 – 8.30) चलना होगा। मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति को वनस्पतियों एवं जानवरों के बारे में ज्ञान होना चाहिये।
- प्रत्येक जानवर जो देखा गया हो, उसके बारे में डाटा शीट (नमूना देखें) में जानकारी दर्ज करें: 1) जानवर देखे जाने की संख्या, 2) जानवर देखे जाने का समय, 3) जानवर की प्रजाति का नाम (उदाहरण: चीतल, सांभर, जंगली सुअर, लंगूर, मोर, आदि), 4) झुण्ड में जानवरों की संख्या, जो एक ही जाति के हों (जितना हो सके जानवरों की संख्या सावधानीपूर्वक एकत्र करें), प्रत्येक झुण्ड की संख्या अलग लिखें। यह पहचान कि जानवर एक या अधिक झुण्ड में हैं— अगर जानवर दो झुण्ड में महसूस हों और सबसे करीबी दो झुण्डों के सदस्यों में दूरी 30 मी. या अधिक हो तब जानवरों को दो झुण्डों में गिना जाये। (5) वन और भौतिकी का प्रकार जहाँ से जानवर देखे गये, 6) समूह के केन्द्र से जानवर की दूरी और 7) विशेषतः प्राणी समूह की बेयरिंग दर्ज करने के लिए कम्पास का उपयोग करें। 8) ट्रांजेक्ट मार्ग पर जिस स्थान से जानवर देखें गए है उसका जी.पी.एस. निर्देशांक दर्ज करें।
- अगर हो सके तो झुण्ड में बच्चों (एक साल से कम उम्र) की गणना भी की जाये।
- प्रत्येक झुण्ड की गिनती के साथ, उस जगह की वनस्पति* एवं भूस्थिति** की जानकारी भी दर्ज की जाये। उदाहरणस्वरूप, 12 चीतल (10 व्यस्क, 2 बच्चे) समय: 6:40 बजे प्रातः, मिश्रित सागौन वन, मध्यम लहरदार, 20 मी. की दूरी और 175° कोण।
- प्रत्येक चार वर्ष में होने वाले देशव्यापी अनुश्रवण के दौरान प्रत्येक ट्रांसैक्ट पर प्रातः तीन बार अलग-अलग चलना होगा और आंकड़े एकत्र करने होंगे।

*वनो के प्रकार इनमें से एक होना चाहिए: मिश्रित शुष्क, पर्णपाती वन, सागौन वन, साल वन, कृषि/वृक्षारोपण, बांस, चट्टानी वन, धोंकवन (कस्थई वन), परती भूमि, मिश्रित सदाबहार जंगल, मिश्रित नम पर्णपाती वन, मिश्रित अर्ध-सदाबहार जंगल, बगीचा, चारागाह, क्षुपभूमि (झाड़ीदार जंगल), छोटे घास का मैदान, बड़े घास का मैदान, कांटा वन, नदीयां एवं अर्धभूमि।

**भौतिकी के प्रकार इनमें से एक होना चाहिए: पहाड़ी, समतल, ढलान, लहरदार, घाटी, तीव्र ढलान।

प्रपत्र-2: ट्रांसेक्ट लाइन पर वन्यजीवों एवं मवेशियों की गणना

वनपट्टक: परिशिष्ट: दिनांक:
 ट्रांसेक्ट आई.डी.: ट्रांसेक्ट शिकेट: ट्रांसेक्ट पुरी (कि.मी.):
 प्रारंभ समय: अंत समय: वन प्रकार:
 प्रारंभ अक्षांश: N प्रारंभ देशांतर: E वन प्रकार:
 अंत अक्षांश: N अंत देशांतर: E
 मौसम: साफ ()/बादल ()/बर्फ ()

दल के सदस्य	नाम	पद	सुलभाप
1			
2			

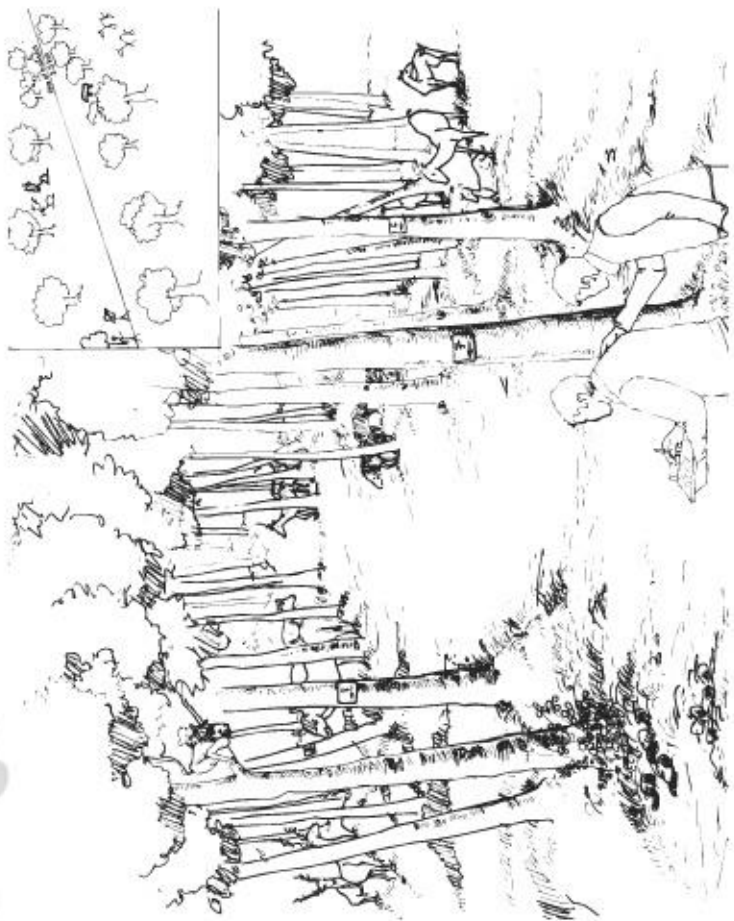
क्र.	समय	अक्षांश			देशांतर			प्रजाति*	कुल संख्या (संपन्न एवं बन्ने)	बन्ने	जंगलर की पुरी	कन्यास विवरण		वन प्रकार**	भौतिकी के प्रकार***	टिप्पणी
		दि.	मि.	से.	दि.	मि.	से.					जानवर	पक्षि			
1.																
2.																
3.																
4.																
5.																
6.																
7.																
8.																
9.																
10.																
11.																
12.																
13.																
14.																
15.																

* प्रजाति का बचन करें: गिर, किलास, चीतल, सांबर, गीरिंगा, जंगली बूढ़ा, सैनागा, कालगा, हनुमान लंगूर, लाल मुँह बंदर, कपरी, बालशेख, भेड़, भेड़की/घुंटी/काकर, भैस, उड़न गिलहरी, चउल/खरबोस, खैरी-पुष्प, दुक डियर, मीर, लाल जंगली मुर्गा, सैटी जंगली मुर्गा, सैती, ।
 ** वन प्रकार इनमें से एक होना चाहिए: मिश्रित बूझ, पर्वतीय वन, सागरी वन, साल वन, सूँघे/बुझाईका, बंस, घटतीनी वन, शीतल (मर्याई वन), घटी भुंदि, मिश्रित सारासहर जंगल, मिश्रित वन पर्वतीय वन, मिश्रित ऊँच-सदाबहार जंगल, बगीचा, बारागाह, कुलूमि (श्रीशैल जंगल), छोटें पास का मैदान, बड़े पास का मैदान, खाटा वन, नदीका एव जलभूमि।
 *** भौतिकी के प्रकार इनमें से एक होना चाहिए: पहाड़ी, समतल, ढलान, सारदार, घाटी, तीर्थ ढलान।

प्रपत्र 2- भरने के अतिरिक्त मार्गदर्शी बिन्दु

1. वितरित की गई फील्ड गाईड एवं वन्यप्राणियों के चिन्ह/साक्ष्य की पहचान पुस्तिका में दिये गये बाघ/तेंदुआ अन्य सह परमक्षियों एवं बड़े शाकाहारी पशुओं के चिन्हों का प्रारूप इस प्रपत्र को भरने के पूर्व ध्यान से पढ़ें।
2. प्रपत्र-2 को अलग-अलग दिनांक के लिये पृथक-पृथक तीन प्रतियों में भरें।
3. जी.पी.एस. निर्देशांक का प्रारूप डिग्री-मिनट-सेकंड में ही दर्ज करें।
4. ट्रांसेक्ट पर जानवर के प्रत्यक्ष दर्शन को दर्ज करते समय चलने की बियरिंग एवं जानवर की बियरिंग दोनों ही दर्ज करें। (ट्रांसेक्ट लाइन यदि घाटी एवं अन्य भौतिकी से गुजर रही है उस अवस्था में चलने की बियरिंग (वॉक बियरिंग) एवं ट्रांसेक्ट बियरिंग अलग हो सकती है)।
5. ट्रांसेक्ट लाइन के चलते समय ऊगते हुए सूरज के कारण असुविधा न हो अतः सूरज के सामने की दिशा में न जाये यह भी ध्यान में रखा जाये।
6. ट्रांसेक्ट लाइन के चलते वक्त जितनी दूर तक जानवर पहचाना जा सके उसे लिखा जाना है।
7. मादा के पेट की ऊंचाई तक आने वाले जानवर (एक साल से कम उम्र) को बच्चे की श्रेणी में लिया जाये।
8. एक बीट में दो ट्रांसेक्ट लाईन डाले गये हों तो ट्रांसेक्ट लाईन क्रमांक में अ, ब लिखा जाये जैसे 105(अ), 105(ब)।
9. एक झुण्ड में दो प्रजातियों के जानवर मिलते हैं तो प्रत्येक प्रजाति को अलग-अलग झुण्ड माना जाये।
10. ट्रांसेक्ट लाइन के प्रारंभ व अंत समय को प्रपत्र में दर्ज करें।

आरेख 3- चौपायों की गणना

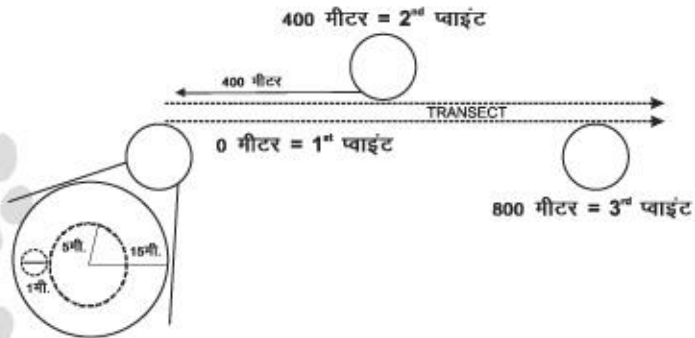


वनस्पति एवं मानवीय व्यवधान के सर्वेक्षण का प्रारूप

03

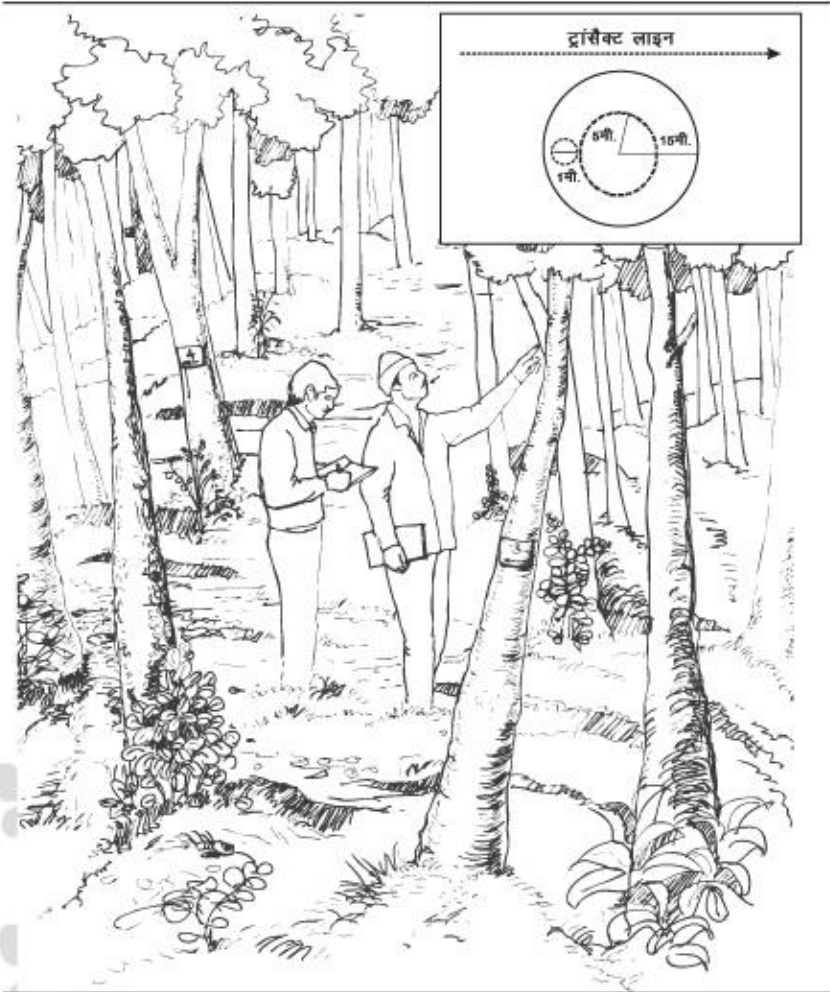
प्राकृतिक परिस्थिति को मापने और मानवीय व्यवधान के स्तरों का निर्धारण उसी लाइन ट्रांसेक्ट पर किया जायेगा जिस पर चौपायों के मिलने की दर का अनुमान लगाया गया था। एक बार एक मौसम में, समय और परिश्रम की बचत के लिये पहले प्रातः लाइन ट्रांसेक्ट पर चौपायों की गणना की जाये और उसी मार्ग पर लौटते हुये वनस्पति एवं मानवीय व्यवधान (और चौपायों के गोबर/लेंडी के लिए भी-खण्ड-4) का सर्वेक्षण किया जाये।

- इस सर्वेक्षण के लिये बीट सर्वेक्षण इकाई होगी। सर्वेक्षण पहले से रेखांकित मार्ग पर किया जायेगा।
- वनस्पति और मानवीय व्यवधान का सर्वेक्षण रेखांकित मार्ग पर प्रत्येक 400 मी. की दूरी पर किया जाये और प्रत्येक प्लॉट के लिए जी.पी.एस. निर्देशांक दर्ज किया जाये। यह जानकारी ट्रांसेक्ट लाईन के प्रारंभ में क्रमशः 0, 400, 800, 1200, 1600, 2000 मीटर पर एकत्रित की जाये तथा कॉलम एक में यह क्रमशः प्लॉट नं. 1, 2, 3, 4, 5, 6 आदि भरा जाये। जब किसी बीट में दो ट्रांसेक्ट लाईन डाली जाती है तो उनको उसी ट्रांसेक्ट लाईन के आई.डी. पर अ एवं ब पर दर्शाया जाये परन्तु प्लाटों का अनुक्रमांक आगे बढ़ेगा। जैसे 105अ एवं 105ब दो ट्रांसेक्ट लाईन एक बीट में है तो 105अ में 6 प्लाट डाला गया तो 105ब में प्लाट क्रमांक 7 से प्रारंभ होगा।
- ट्रांसेक्ट चलने के लिए अगर ट्रांसेक्ट मार्ग पर वनस्पति की छटाई की गई है उस अवस्था में आंकलनकर्ता द्वारा, वनस्पति और मानवीय व्यवधान प्लॉट (आरेख) का आंकलन करने के लिए रेखांकित मार्ग से 15 मी. की सीधी दूरी पर चलकर प्लॉट का आंकलन किया जाए।
- प्रत्येक प्लॉट का आंकलन करते समय मोटे तौर पर वनस्पति और भौतिकी का प्रकार दर्ज किया जाना चाहिए।



आरेख: ट्रांसेक्ट पर पेड़ और मानवीय व्यवधान का आंकलन 15 मी. के अर्धव्यास, झाड़ियों तथा खरपतवार/विदेशीखर-पतवार 5 मी. की अर्धव्यास और शाकीय पौधे, घास तथा भू-आच्छादन 1 मी. की अर्धव्यास का काल्पनिक गोलाकार बनाकर उसमें उनका आंकलन करें।

आरेख 4. पेड़ों की जाति की पहचान, क्रमशः 15मी. एवं 5मी. प्लॉट में हर एक 400मी. में रेखांकित मार्ग पर।



***वन प्रकार इनमें से एक होना चाहिए:** मिश्रित शुष्क, पर्णपाती वन, सागौन वन, साल वन, कृषि/वृक्षारोपण, बांस, चट्टानी वन, घोंकवन (करघई वन), परती भूमि, मिश्रित सदाबहार जंगल, मिश्रित नम पर्णपाती वन, मिश्रित अर्ध-सदाबहार जंगल, बगीचा, चारागाह, क्षुपभूमि (झाड़ीदार जंगल), छोटे घास का मैदान, बड़े घास का मैदान, कांटा वन, नदीयां एवं अर्धभूमि।

****भौतिकी के प्रकार इनमें से एक होना चाहिए:** पहाड़ी, समतल, ढलान, लहरदार, घाटी, तीर ढलान।

● हर एक प्लॉट में वनस्पति एवं मानवीय व्यवधान का वर्गीकरण निम्नलिखित आधार पर किया जाना चाहिए :

अ) वृक्ष की प्रजाति (15 मी. के अर्धव्यास प्लॉट में)

15 मी. अर्धव्यास का गोलाकार प्लॉट बनाकर वृक्ष प्रजातियों का आंकलन करना चाहिए। आंकलनकर्ता द्वारा प्लॉट में सभी वृक्ष प्रजातियों या अधिकतम 10 वृक्ष प्रजातियों (सभी वनस्पतियों > 6 फीट/2मी. ऊँचाई, बाँस सहित) और प्रत्येक पेड़ की प्रजातियों की संख्या दर्ज करने की आवश्यकता है। उदाहरणतः साल के 4 पेड़, जामुन के 2 पेड़, देशी बांस अथवा अन्य बांस प्रजाति के 3 झुंड। उसी प्लॉट में 5 अलग-अलग स्थान से खुले आकाश के छत्र घनत्व का प्रतिशत अनुमान लगाकर और अंततः उसका औसतन मूल्य दर्ज किया जाना चाहिए।

ब) झाड़ियों की प्रजाति (5 मी. अर्धव्यास प्लॉट में)

5 मी. अर्धव्यास का गोलाकार प्लॉट बनाकर झाड़ियों का आंकलन करना चाहिए। आंकलनकर्ता द्वारा प्लॉट में सभी झाड़ियों के प्रजातियों या अधिकतम 10 झाड़ियों के प्रजातियों (3 फीट से लेकर 6 फीट और < 2 मी. की ऊँचाई के बीच की सभी वनस्पति) और झाड़ियों की प्रजातियों का प्रतिशत आच्छादन दर्ज किया जाना चाहिए। उदाहरण: 20% करोंदा, 10% साल, 5% सिंदूर इत्यादि। आंकलनकर्ता द्वारा कुल झाड़ियों के प्रतिशत आच्छादन को 0 से 4 के पैमाने के आधार पर अनुपस्थित (0%), बहुत कम (<25%), कम (25-50%), मध्यम (50-75%) और घने (75-100%) में वर्गीकृत करना होगा।

स) खरपतवार/विदेशी खरपतवार की प्रजाति (5 मी. अर्धव्यास प्लॉट में)

5 मीटर अर्धव्यास के उसी प्लॉट के भीतर (जिसमें झाड़ियों की प्रजाति का आंकलन किया गया है), आंकलनकर्ता द्वारा सभी खर-पतवार झाड़ी प्रजातियों या अधिकतम 10 प्रजातियों (3 फीट से लेकर 6 फीट की ऊँचाई के बीच की सभी वनस्पति) और इन झाड़ी प्रजातियों का प्रतिशत आच्छादन दर्ज किया जाना चाहिए। उदाहरण: 25% लैंटाना कैमरा, 10% पोगोस्टोमन बैंगलेंसिस, 2% सेना टेरा आदि। आंकलनकर्ता द्वारा खर-पतवार/विदेशी खर-पतवार झाड़ी प्रजातियों के प्रतिशत आच्छादन को 0 से 4 के पैमाने के आधार पर अनुपस्थित (0%), बहुत कम (<25%), कम (25-50%), मध्यम (50-75%) और घने (75-100%) में वर्गीकृत करना होगा।

द) घास और शाकीय पौधे की प्रजातियां (1 मी. अर्धव्यास प्लॉट में)

1 मी. अर्धव्यास का काल्पनिक गोलाकार बनाकर प्लॉट का आंकलन करना चाहिए।

आंकलनकर्ता को घास और शाकीय पौधे की सभी प्रजातियों या अधिकतर 3 घास और 3 शाकीय पौधों की प्रजाति (सभी वनस्पति 3 फीट की ऊँचाई से कम) को उसके बहुतायत के आधार पर दर्ज किया जाना चाहिए,

जैसे कि सबसे प्रचुर मात्रा में उपस्थित प्रजातियां पहले और उसके बाद कम प्रचुर मात्रा में उपस्थित प्रजातियों को दर्ज किया जाना चाहिए।

इ) भू-आच्छादन (1 मी. अर्धव्यास प्लॉट में) :

आंकलनकर्ता द्वारा 1 मी. अर्धव्यास के उसी प्लॉट के भीतर (जिसमें घास और शाकीय पौधे की प्रजाति का आंकलन किया गया है), सूखे पत्तों का प्रतिशत दर्ज किया जाना चाहिए। इन सूखे पत्तों को सावधानीपूर्वक हटाने के बाद हरी घास, सूखी घास, शाकीय पौधे, खर-पतवार और खाली भूमि के प्रतिशत आच्छादन का आंकलन किया जाना चाहिए। हरी घास, सूखी घास, शाकीय पौधे, खर-पतवार और खाली भूमि के प्रतिशत का योग 100% होना चाहिए।

फ) मानवीय व्यवधान (15 मी. अर्धव्यास प्लॉट में):

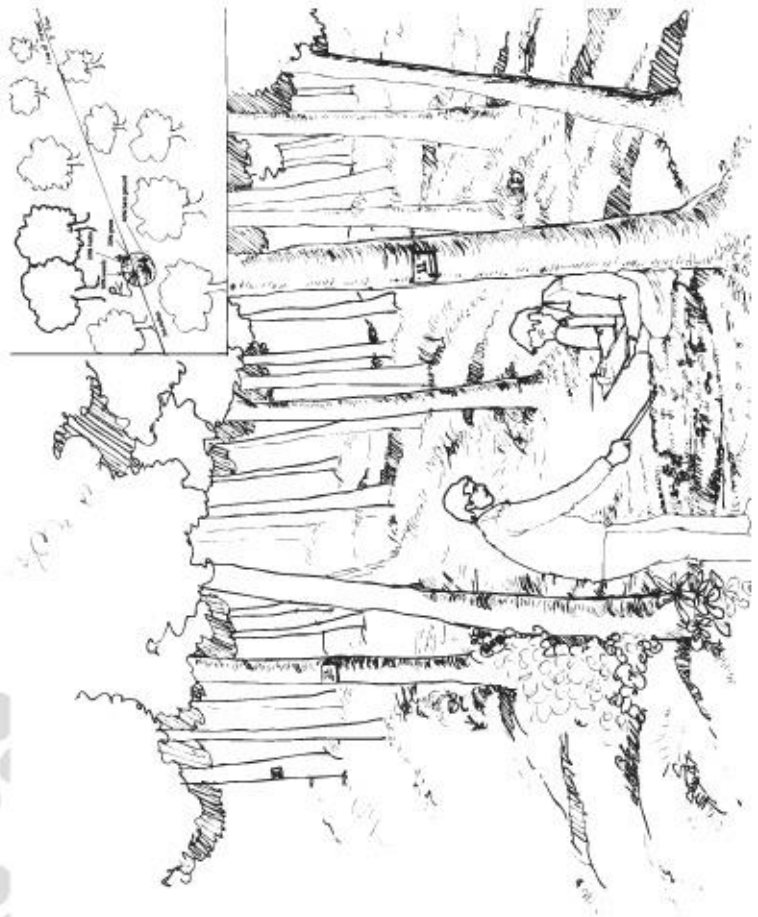
आंकलनकर्ता द्वारा पेड़ों की गिनती के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले 15 मी. अर्धव्यास प्लाट को मानवीय व्यवधान 1) पेड़ों की कटाई की संख्या, 2) शाखाओं की कटाई की संख्या, 3) मनुष्य एवं पालतू जानवरों द्वारा निर्मित पगडंडीयों की संख्या, 4) मनुष्यों के मौजूदगी की संख्या, 5) देखे गए पालतू जानवरों की संख्या और 6) घास और बांस के कटाई के साक्ष्य (हाँ और नहीं) को दर्ज करना होगा। वन विभाग के द्वारा कूप कटाई भी मानवीय व्यवधान में लिया जायेगा।

आंकलनकर्ता को बीट में मौजूद स्थायी निवास स्थल, मानव आबादी एवं पशु आबादी को प्रपत्र-3ब में उल्लेख किए जाने की आवश्यकता है (उसकी सर्वोत्तम जानकारी के आधार पर)। साथ ही साथ बीट में अकांष्टीय वन उत्पाद (एन.टी.एफ.पी.) इक्कठा किए जाने की जानकारी दें। यदि एन.टी.एफ.पी. इक्कठा की जाती है तो आंकलनकर्ता के सर्वोत्तम ज्ञान के आधार पर उसके संग्रहण का परिमाण पाँच श्रेणियों (0-कोई संग्रहण नहीं, 4-संग्रहण की उच्च दर) में करें। आंकलनकर्ता को बीट में पिछले 6 महीने में आग लगने की दर को 5 श्रेणियों (0-नहीं, 4-बहुत अधिक) में दर्ज करना होगा।

आरेख 5- वृक्षों के छत्र घनत्व का आंकलन



आरेख 6- वनस्पति द्वारा आच्छादित भूमि का आंकलन



प्रपत्र-3: वनस्पति, मानवीय व्यवधान एवं मू-आच्छादन का प्रारूप

संकेतकर्ता: बीट: वनस्पतल:
 दिनांक: ट्रांसिक्ट आई.डी.: पक्षेत्र:
 बीट: अक्षांश: N देशांतर: E
 वन प्रकार*: भौतिकी के प्रकार**:

अ एवं स: वनस्पति का सर्वेक्षण

क्र.	वृक्ष प्रजाति (P-3A) (15 मी. के ऊपर व्यास में)		साड़ी प्रजाति (P-3B) (5 मी. के ऊपर व्यास में)		समस्त प्रजाति (P-3C) (5 मी. के ऊपर व्यास में)		साक्षीय पीले (P-3D) (1 मी. के ऊपर व्यास में) प्रमुखता के घटते क्रम में (5-1)		घास (P-3E) (1 मी. के ऊपर व्यास में) प्रमुखता के घटते क्रम में (5-1)	
	प्रजाति	संख्या	प्रजाति	प्रतिशत आच्छादन	प्रजाति	प्रतिशत आच्छादन	प्रजाति	प्रजाति	प्रजाति	प्रजाति
1.										
2.										
3.										
4.										
5.										
6.										
7.										
8.										
9.										
10.										
	कुल घास (5.0 - 1.0):									

** वन प्रकार प्रत्येक से एक बीना प्रकृति: मिठा हडक, पर्णपाती वन, सार्गिन वन, सल वन, सुई/पुनरुपण, बास, पट्टगनी वन, संकेतन (सकई वन), पत्नी सुई, मिठा सनसकार जंगल, मिठिन वन पर्णपाती वन, मिठिन जल-सामकार जंगल, कृषिक, बागगाई, कुपुंगि (अकीदार जंगल), छोटे घास का मैदान, बड़े घास का मैदान, बड़े घास का मैदान, कंटा वन, नदीका एवं अकूटि।

*** भौतिकी के प्रकार हमारे से एक डेग चकिए: चकड़ी, समल, डसग, सहरल, घाटी, तीर डसग।

ब. मानवीय व्यवधान (15 मी. के अर्धव्यास में)

कटे हुए वृक्षों की संख्या	कटी शाखाओं की संख्या	मनुष्य/पालतू पशु द्वारा बनाई गइयों की संख्या	मनुष्य की मौजूदगी की संख्या	पालतू पशु की मौजूदगी की संख्या	घास/बांस की कटाई (हां/नहीं)

क्या बीट में मनुष्यों के रखाई विचार रहते हैं? (हां/नहीं) _____ । यदि हाँ, तो कितने _____ उनकी अनुमानित जनसंख्या _____

पालतू जानवरों की संख्या- मोरी _____, गैद, बकरी _____, अन्य पशु _____ ।

क्या इस बीट में एन.टी.एफ.बी. इकट्ठा की जाती है हाँ ना। अगर हाँ तो एन.टी.एफ.बी. के नाम _____ / _____ / _____ / _____ ।
 बीट में पिछले 12 महीने में आग लगने की दर 0 से 4 की श्रेणी में लिखें (0-नहीं और 4-बहुत अधिक): _____

स. गू-आक्कादन सर्वेक्षण (1 मी. के अर्धव्यास में)

सूखे पत्ते (%)	गू-आक्कादन (पाँवों कोलम का योग 100% होना चाहिए)		
	सूखी घास (%)	हरी घास (%)	शाकीय पौधे (%)

प्रपत्र 3 अ, ब एवं स- भरने के अतिरिक्त मार्गदर्शी बिन्दु

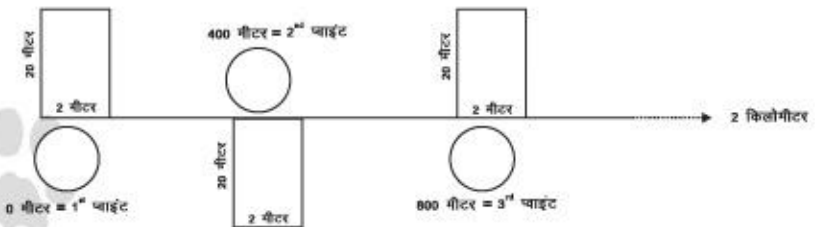
1. वितरित की गई फील्ड गाईड एवं बन्धुप्राणियों के चिन्ह/साक्ष्य की पहचान पुस्तिका को ध्यान से पढ़ें।
2. यह जानकारी ट्रांसेक्ट लाईन के प्रारंभ में क्रमशः 0, 400, 800, 1200, 1600, 2000 मीटर पर एकत्रित की जाये तथा कॉलम एक में यह क्रमशः प्लॉट नं. 1, 2, 3, 4, 5, 6 आदि भरा जाये। जब किसी बीट में दो ट्रांसेक्ट लाईन डाली जाती है तो उनको उसी ट्रांसेक्ट लाईन के आई.डी. पर अ एवं ब पर दर्शाया जाये परन्तु प्लाटों का अनुक्रमांक आगे बढ़ेगा। जैसे 105अ एवं 105ब दो ट्रांसेक्ट लाईन एक बीट में है तो 105 अ में अगर 6 प्लाट डाला गया तो 105 ब में प्लाट क्रमांक 7 से प्रारंभ होगा।
3. यदि विभिन्न प्रजातियों के पौधे एक ही संख्या में पाये जाते हैं तो उन्हें एक ही श्रेणी में दर्शाकर टिप्पणी वाले कॉलम में उल्लेख करें।
4. बाँस 2 मी. की लंबाई से ज्यादा है तो उसे वृक्ष एवं 2 मीटर से कम है तो उसे झाड़ी में दर्ज करें।
5. वृक्ष/बाँस को 20 से.मी. से अधिक गोलाई एवं 2 मीटर से कम ऊँचाई को झाड़ी माना जाये। भले ही वे वृक्ष प्रजाति के हों।
6. कृपया ध्यान में रखें 3 अ, ब, स प्रपत्र प्रत्येक प्लाट में अलग-अलग भरे जायेंगे, उदाहरण के लिये यदि 2 कि. मी. के ट्रांसेक्ट में 6 प्लॉट जो कि 0, 400, 800, 1200, 1600, 2000 मीटर पर डाले जायेंगे जिनके लिए 6 प्रपत्र पृथक-पृथक भरे जायेंगे।
7. बीट में जो ग्राम है उनकी जनसंख्या एवं गाय, भेड़, बकरी, अन्य पशुओं की संख्या पहले से एकत्रित करके रखें।
8. ट्रांसेक्ट लाईन की जिस दिशा में बन्धुप्राणियों के लेंडी एवं गोबर का सर्वेक्षण एकत्रित करते हैं, उसी दिशा में 15 मीटर अर्धव्यास के प्लॉट के केन्द्र बिन्दु से 5 मीटर दूर पर 1 मीटर अर्धव्यास के Circular plot डालकर भूमि आच्छादन (Cover) का सर्वेक्षण करें।
9. सूखे पत्ते के बारे में जानकारी एकत्रित करने के पश्चात पत्ते हटाकर भूमि आच्छादन प्रकार की जानकारी भरी जाये।

चौपायों के गोबर सर्वेक्षण का प्रारूप

04

लाइन ट्रांसैक्ट, जिस पर चौपायों की गणना की गई है, उसी पर गणना करके लौटते समय चौपायों के गोबर का सर्वेक्षण किया जायेगा। यह अभ्यास, चौपायों की गणना के लिए प्रातः काल में लाइन ट्रांसैक्ट सैपलिंग किये जाने के बाद ही किया जा सकेगा और जिस समय वास स्थल एवं मानवीय व्यवधान की सैपलिंग की जा रही होगी।

- लाइन ट्रांसैक्ट पर आंकलनकर्ता हर 400 मी. की दूरी पर 90° के कोण पर 20 मी. लम्बी और 2 मी. चौड़ी पट्टी में चौपायों के गोबर की गिनती करे। (यह कार्य हाथ में 2 मी. की लकड़ी पकड़कर 20 मी. तक चलकर दांये व बांये गोबर की गिनती करते हुए करना है (आरेख 7)। ऐसी 20 मी. x 2 मी. की पट्टी हर 400 मी. के प्लॉट पर है एक बार दांये और अगली बांये करनी है)।
- सभी चौपायों के गोबर को ठीक से पहचान कर, उनकी संख्या प्रत्येक जाति के स्तंभ में लिखें।
- चौपायों के गोबर एवं लेंडियां गिनी जायें। अगर लेंडियों की संख्या 1000 से ज्यादा हो तो 999 दर्ज करें।
- अगर सर्वेक्षण क्षेत्र में बकरियां या भेड़ें चरती हों तो उसका विवरण प्रपत्र में अवश्य लिखें, क्योंकि इनके गोबर का चितल इत्यादि जानवरों के गोबर से अन्तर कर पाना कठिन होता है।
- इस प्रपत्र की अन्तिम लाइन में अपनी सर्वोत्तम जानकारी के अनुसार निरीक्षणकर्ता जानवर के होने, न होने की जानकारी अवश्य लिखे मले ही उनका गोबर न मिला हो।



प्रश्न-4: वन्यप्राणियों एवं मवेशियों की लेंडी/गोबर का सर्वेक्षण

संकेतकर्ता: _____ दिनांक: _____ वन संकेत: _____

रेड/संकेत: _____ बीट: _____ ट्रासेक्ट लाइन क्रमांक: _____

	संकेत	लेंडी	गोबर	संकेत	लेंडी	गोबर	संकेत	लेंडी	गोबर	संकेत	लेंडी	गोबर	संकेत	लेंडी	गोबर	संकेत	लेंडी	गोबर
1																		
2																		
3																		
4																		
5																		
6																		
7																		
8																		
9																		
10																		
11																		
12																		
13																		
14																		
*दो/ती																		

*अपनी निजी जानकारी के अनुसार उपरोक्त खण्डों में पाये जाते हैं? हाँ/नहीं।

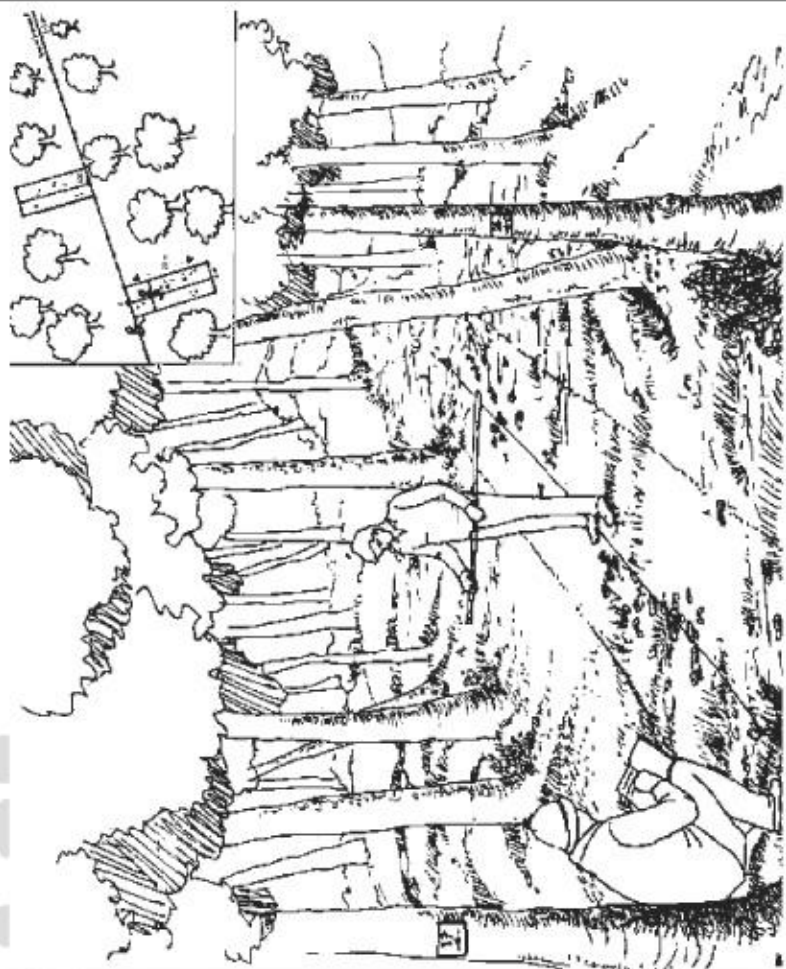
टिप्पणी - 1. क्षेत्र में सूखी/भेड़ पतली है? हाँ/नहीं _____

अनार लेंडियों की संख्या 1000 से ज्यादा हो तो 999 दर्ज करें।

प्रपत्र 4- मरने के अतिरिक्त मार्गदर्शी बिन्दु

1. वितरित की गई फील्ड गाईड एवं वन्यप्राणियों के चिन्ह/साक्ष्य की पहचान पुस्तिका को ध्यान से पढ़ें।
2. यह जानकारी ट्रांसेक्ट लाईन के प्रारंभ में क्रमशः 0, 400, 800, 1200, 1600, 2000 मीटर इत्यादि में एकत्रित की जाये तथा कॉलम एक में यह क्रमशः प्लॉट नं. 1, 2, 3, 4, 5, 6 आदि भरा जाये। जब किसी बीट में दो ट्रांसेक्ट लाईन डाली जाती है तो उनको उसी ट्रांसेक्ट लाईन के आई.डी. पर अ एवं ब पर दर्शाया जाये परन्तु प्लॉटों का अनुक्रमांक आगे बढ़ेगा। जैसे 105अ एवं 105ब दो ट्रांसेक्ट लाईन एक बीट में है तो 105अ में चौथा प्लॉट डाला गया तो 105ब के प्लॉट क्रमांक 7 से प्रारंभ होगा।
3. प्रपत्र की अंतिम लाईन में आपकी जानकारी के अनुसार जानवर हैं, परन्तु यदि गोबर/लेंडी नहीं मिले, तब भी उस प्रजाति के बारे में हा लिखें। यदि आपको ना ही गोबर/लेंडी मिले और ना ही आपकी जानकारी अनुसार उस प्रजाति का जानवर पाये जाते हैं तब उस प्रजाति के बारे में नहीं लिखें।
4. ट्रांसेक्ट लाईन के प्लॉट नं. 1 (0 मी. प्वाइन्ट) में दाहिने तरफ 2 मी. x 20 मी. के प्लॉट में लेंडियों की सर्वेक्षण किया गया तो प्लॉट नं. 2 (400 मी. प्वाइन्ट) में ट्रांसेक्ट लाईन के बांये तरफ 2 मी. x 20 मी. के प्लॉट में सर्वेक्षण किया जाना है। प्लॉट नं. 3 में दाहिनी एवं प्लॉट नं. 4 में बांये इस प्रकार आगे बढ़ना है एवं कुल 6 प्लॉट डालना है, 2 कि.मी. के ट्रांजेक्ट लाइन के लिये।
5. वन्यप्राणी एवं मवेशियों की लेंडी/गोबर सर्वेक्षण के लिये जो प्लॉट डाला जायेगा वो वनस्पति मानवीय व्यवधान एवं भू-आच्छादन के सर्वेक्षण के लिये ट्रांजेक्ट लाइन में डाले गये प्लॉट के विपरित दिशा में होगा।

आरेख 7. चौपायों के गोबर की गिनती



प्रपत्र-6: विद्या संग्रह (आनुवंशिकी हेतु)

संकलनकर्ता: _____ संरक्षित क्षेत्र: _____

क्र.सं.	दिनांक	संपत आई.सी.	जीवोपस निर्देशांक				समाहित प्रजाति**	परिमाणु/बीट	विद्या की अवस्था*	टिप्पणी
			अक्षांश	देशांतर	की.	सी.				
			की.	से.	की.	मी.	की.	से.		
1										
2										
3										
4										
5										
6										
7										
8										
9										
10										
11										
12										
13										
14										
15										
16										
17										

* विद्या की अवस्था - बहुत साजा, साजा, पुराना, बहुत पुराना

** भाष, सैकुआ, जंगली मुला (डोल), भेड़िया, लकड़वा, सिवार, भादु, छोटी बिल्ली प्रजाति एवं गौर का मोहर की संग्रह करें ।

टिप्पणी - संग्रहण को संरक्षित क्षेत्र में रखा जाना सुनिश्चित करें ।

चौपायों की लेंडियाँ और उनके लक्षण

सांभर

सांभर ज्यादातर वन क्षेत्रों में पाया जाता है, परन्तु उनकी बहुतायत पानी वाले पहाड़ी क्षेत्रों में होती है। सांभर की लेंडी बैरल के आकार की होती है। लेंडियाँ एक तरफ उभरी हुई और गोलाकार होती हैं, उसकी लम्बाई 1.5-2 से. मी. एवं व्यास 0.8-1.4 से.मी. होता है। सांभर के छोटे बच्चे की लेंडियाँ चीतल के समान होती हैं परन्तु ऊपर दिये गये विवरण से सांभर को पहचानना आसान होगा। नीलगाय की लेंडी लगभग वयस्क सांभर के समान ही होती है परन्तु सांभर और नीलगाय के वासस्थल अलग होने से दोनों प्रजातियों के एक जगह होने की सम्भावना कम होगी।

चीतल

चीतल अधिकतर समतल या मध्यम उतार-चढ़ाव वाले स्थान पर मिलते हैं। वे ज्यादातर अधिक ढलान वाले पहाड़ी क्षेत्रों में नहीं पाये जाते। उनकी लेंडियाँ बेलननुमा होती हैं और एक सिरा नुकीला होता है। वयस्क चीतल की लेंडी 1.2-1.8 से.मी. होती है और सांभर एवं नीलगाय से पतली होती है। मवेशी की चराई वाले क्षेत्र में चीतल और भेड़-बकरी की लेंडियों में अंतर कर पाना कठिन होता है। इसलिए सावधानीपूर्वक प्रजाति की पहचान करें।

नीलगाय

नीलगाय खुले वन, झाड़ीदार एवं कटीले वनों में पाये जाते हैं। वे कम तादाद में दूसरे वनों में भी पाये जाते हैं। नीलगायों को एक ही जगह पर गोबर करने की आदत होती है, जिससे कि गोबर का ढेर लग जाता है, यह ढेर मार्गों के चौराहों पर अधिकतर देखने को मिलते हैं। नीलगाय की लेंडी लगभग सांभर की तरह लगती है लेकिन उसकी गोलाई ज्यादा बेलननुमा होती है। नीलगाय की लेंडी का पिछला भाग सांभर की तरह नहीं होता है। वयस्क नीलगाय की लेंडी 1.5 से 2 से.मी. लम्बी और उसका व्यास 1 से 1.4 से.मी. होता है। लेंडी का रंग गहरा कालाई और काला होता है। नीलगाय की लेंडियाँ अक्सर ढेर में पाई जाती हैं।

काकड़ (घुटरी, भेड़की)

घुटरी की लेंडियाँ वनों में ही पाई जाती हैं। इसकी सूखे सागौन के वनों में मिलने की संभावना कम है। यह लेंडियाँ लम्बी, बेलननुमा और झुर्रिदार होती हैं और उसकी एक सतह अवतल होती है। दोनों तरफ नुकीली और हुकनुमा भी होती है। इसकी लेंडी एक ही ढेर में कई तरह के रूपों में मिलने की संभावना होती है। लेंडी की लम्बाई 1 से 1.8 से.मी. और व्यास 0.4 से 0.7 से.मी. के लगभग होता है।

चौंसिंधा

चौंसिंधा की लेंडी ज्यादातर गोल या लम्बी होती है। इसकी लम्बाई 0.6 से 1.2 से.मी. और व्यास 0.6 से 0.8 से.मी. होता है। चीतल, चौंसिंधा और घुटरी के वासस्थल कई जगहों पर एक ही होने से तीन प्रजातियों की लेंडियाँ मिलने की संभावना हो सकती है।

मध्य प्रदेश में पाये जाने वाले प्रमुख वन्यप्राणी प्रजातियों का विवरण

मांसाहारी वन्य प्राणियों के साक्ष्य



नर बाघ का पगमार्क (माप लगभग 6 इंच)



मादा बाघ का पगमार्क (माप लगभग 5 इंच)



बाघ का विष्ट



बाघ का गारा



बाघ के खरोंच (पेड़ पर)



बाघ के खरोंच (जमीन पर)

मांसाहारी वन्य प्राणियों के साक्ष्य



नर तेंदुआ का पगमार्क (माप लगभग 3-4 इंच)



मादा तेंदुआ का पगमार्क



तेंदुआ का विष्ठा



तेंदुआ का गारा



लकड़बग्घा का पदचिन्ह (माप लगभग 3-3.5 इंच)



लकड़बग्घा का विष्ठा

मांसाहारी वन्य प्राणियों के साक्ष्य



भालू का पदचिन्ह (माप लगभग 7 इंच)



भालू का विष्ठा



भेड़िया का पदचिन्ह (माप लगभग 3 इंच)



भेड़िया का विष्ठा



सोनकुत्ता का पदचिन्ह



सोनकुत्ता का विष्ठा

मांसाहारी वन्यप्राणियों के साक्ष्य



सियार का पदचिन्ह (माप लगभग 2-2.5 इंच)



सियार का बिष्ठा



जंगली बिल्ली के पदचिन्ह



जंगली बिल्ली का बिष्ठा



लोमड़ी के पदचिन्ह



लोमड़ी का बिष्ठा

मांसाहारी वन्यप्राणियों के साक्ष्य



हनी बैजर का पदचिन्ह



हनी बैजर का विष्ठा



मुशकबिलाव का पदचिन्ह



मुशकबिलाव का विष्ठा

शाकाहारी वन्यप्राणियों के साक्ष्य



चीतल का पदचिन्ह



चीतल की लेंडियां



सांभर का पदचिन्ह



सांभर की लेंडियां



जंगली सुअर का पदचिन्ह



जंगली सुअर का बिष्ठा

शाकाहारी वन्यप्राणियों के साक्ष्य



गौर का पदचिन्ह



गौर का गोबर



नीलगाय का पदचिन्ह



नीलगाय की लेंडियां



कृष्णमृग का पदचिन्ह



कृष्णमृग की लेंडियां

शाकाहारी वन्यप्राणियों के साक्ष्य



भेड़की का पदचिन्ह



भेड़की की लेंडियां



खरहा के पदचिन्ह



खरहा की लेंडियां



शेही का पदचिन्ह



शेही की लेंडियां

नोट: साक्ष्यों के लिए इस्तेमाल किए गए छायाचित्र सांकेतिक हैं, इन्हें केवल पहचान के उद्देश्य हेतु इस्तेमाल किया गया है।

झाड़ी प्रजाति



Calotropis gigantea आक



Clerodendrum serratum भारंगी



Colebrookea oppositifolia मोहनी, बिंदा



Embella basaal बाइबिडंग



Grewia hirsute गुइसकरी



Helicteres isora ऐंठी, मरोइफली



Holarrhena antidysenterica दूधी, कोरिया



Ipomoea carnea बेहवा, बेशरम

झाड़ी प्रजाति



Jatropha curcas

रतनजोत



Mimosa rubicaulis

सिंहकांटा



Tamarix ericoides

झड



Thespesia lampas

वन कपास



Vitex negundo

निगुंडी



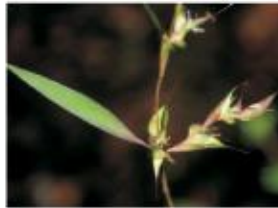
Woodfordia fruticosa

धवई

घरुशु प्रशुशु



Arthraxon hispidus शरुशुशु



Apluda mutica शुशुशु, शुशुशु



Aristida hystrix शरुशुशुशुशु



Bothriochloa intermedia शीशुशुशुशु



Cenchrus ciliaris शुशुशुशुशु



Chloris barbata शरुशुशु



Chloris dolichostachya शरुशुशु, शरुशुशुशु



Dichanthium aristatum शरुशुशु

घास प्रजाति



Colix lacryma-Jobi गुरूलू



Cynodon dactylon दूब



Dactyloctenium aegyptium



Chrysopogon fulvus चिकनिया



Echinochloa colona सुंग घास



Eragrostis tenella भूरभुती



Eulalopsis binata सबई घास



Heteropogon contortus सुकल, कुरल

घास प्रजाति



Panicum sp.

गुल्ल



Paspalidium flavidum

घिबवी



Phragmites karka

तल



Saccharum spontaneum

कांस



Setaria sp.

सुन बासा, सिरी, कोला, कोय

Setaria sp.

सन ज्यार, बोस



Themeda quadrivalvis

छेटी गुनेर



Themeda triandra भौद, बातनी, बुदेन



Vetiveria zizanioides

खस

खरपतवार प्रजाति



Acanthospermum hispidum बिच्चुकांटा



Ageratum conyzoides चिप्पा



Cassia tora चिरोटा, चकोदा



Hyptis suaveolens वनतुलसी



Lantana camara बारामासी



Parthenium hysterophorus गाजरघास



Xanthium indicum गोखरु



Pogostemon benghalensis मरमड़ी

बाघ (Tiger)

परिवार का नाम	: फेलीडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Panthera tigris</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग / व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकटग्रस्त (<i>Endangered</i>) / अनुसूची I
स्थानीय स्तर	: असामान्य
शारीरिक लंबाई	: 2.6-3 मी.
भार	: 135-230 कि.ग्रा.

बाघ की सन्तरी/पीली रंग की खाल पर बड़ी-बड़ी काली धारियाँ होती हैं जो बहुत ही अनोखी होती हैं एवं इसके आधार पर इनकी पहचान की जाती है। इसके पेट के नीचे का भाग सफेद रंग का होता है। इसके कान काले रंग के होते हैं जिनकी पिछली सतह पर सफेद धब्बे होते हैं। आगे के पंजे शक्तिशाली व पूँछ लम्बी धारीवाली होती हैं। इनकी आँख बड़ी गोलाकार एवं नजर तेज होती है इस कारण जंगल में ये शिकार को आसानी से देख सकते हैं। बाघ के सामने के पैर की अपेक्षा पिछले पैर लंबे होते हैं परन्तु सामने के पैर मोटे एवं ताकतवर होते हैं।

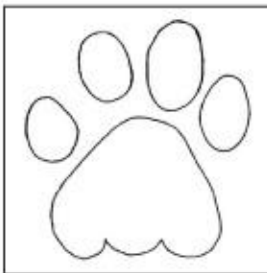


व्यवहार:— बाघ सबसे अधिक हिरण का शिकार करना पसन्द करता है। यह विशेष रूप से साम्बर एवं धीतल का शिकार करता है।

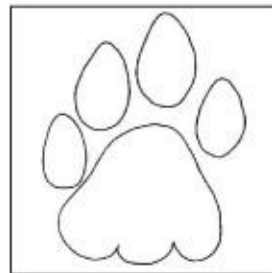
प्राकृतिक आवास:— मिश्रित शुष्क, बांस, साल वन, सागीन वन, पतझड़ी कोंटे व हरे-भरे जंगल व चारागाह।

टिप्पणी:— बाघों के पदचिन्हों के आधार पर उनके लिंग का निर्धारण किया जा सकता है। इसके लिए भूमि धूल भरी होनी चाहिए। बारीक मिट्टी में बने हुए पदचिन्ह (pugmark) अथवा PIP (Pressure Impression Pad) का निरीक्षण करना जरूरी है। इस परीक्षण के दौरान ध्यान देना जरूरी है की बाघों के सामने वाले पंजे के ऊपर पिछला वाला दायाँ पंजा अधिव्यापन (Over lap) न हुआ हो क्योंकि Over lap होने के कारण सामने वाला पंजा ट्रेसिंग के लिए उपयुक्त नहीं माना जाता है, अतः पिछले वाले बाँये पंजे का ट्रेसिंग के लिए चयन किया जाना चाहिए। पद चिन्हों के आधार पर नर एवं मादा बाघों में अंतर निम्न रूप में है :-

1. पूर्ण वयस्क नर बाघ के पदचिन्ह वर्गाकार जबकि मादा के पदचिन्ह आयताकार होते हैं।
2. नर बाघ की ऊँगलियाँ गोलाकार होती हैं, जबकि मादा बाघ की ऊँगलियों का आकार नर की अपेक्षा लंबा एवं नुकीला होता है।



नर बाघ पदचिन्ह



मादा बाघ पदचिन्ह

तेन्दुआ (Leopard)

परिवार का नाम	:	फेलीडे
वैज्ञानिक नाम	:	<i>Panthera pardus</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग / व.जी.अ., 1972 अनुसार	:	असुरक्षित (<i>Vulnerable</i>) / अनुसूची I
स्थानीय स्तर	:	असामान्य
शारीरिक लंबाई	:	1.85-2.15 मी.
भार	:	39-68 कि.ग्रा.

तेन्दुए की साफ पीली खाल पर काले गुलाबी निशान होते हैं। इसका छोटा सिर धब्बों से भरा होता है और इसका जबड़ा शक्तिशाली होता है। इसकी पूँछ लंबी होती है तथा पेट का निचला भाग सफेद होता है। रंग की भिन्नता विशेष रूप से होती है— कभी सुनहरी तो कभी भूरी।

व्यवहार: बड़े बिल्ली प्रजातियों में तेन्दुआ अधिक अनुकूलनशील होने के कारण शेरों के साथ जंगल में रह सकता है, क्योंकि वह छोटे शिकार करके उसको घसीटकर पेड़ों में छुपा कर खाते हैं।

प्राकृतिक आवास: पतझड़ के पत्तों के बीच, हरे-भरे जंगल, झाड़ी वाले जंगल, खुले मैदान और मानव आवास के किनारे।

टिप्पणी:— पूर्ण वयस्क तेन्दुए के साथ बाघ के शावक के पदचिन्हों में तुलना करते समय निम्न बिंदुओं का ध्यान रखना चाहिए।

1. बाघ शावक के पदचिन्ह के साथ मादा बाघिन के पदचिन्ह मिलने के संभावना रहती है।
2. बाघ शावक के पदचिन्हों में ऊंगलियों का आकार गोलाकार एवं फैला हुआ होता है जबकि पूर्ण वयस्क तेन्दुओं के पदचिन्हों में ऊंगलियों का आकार लंबा होता है।
3. बाघ शावक के पदचिन्हों में ऊंगलियों एवं पंजों में अंतर रहता है जबकि पूर्ण वयस्क तेन्दुओं की ऊंगलियों एवं पंजे में यह अंतर कम होता है।
4. पूर्ण वयस्क तेन्दुए की ऊंगलियों का आकार बाघ शावक की अपेक्षा छोटा एवं ऊपर की ओर लंबा होता है।



(बाघ शावक के पदचिन्ह)



(पूर्ण: वयस्क तेन्दुआ के पदचिन्ह)

स्याहगोश (Caracal)

परिवार का नाम	: फेलीडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Caracal caracal</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग / व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकटमुक्त (<i>Least Concern</i>) / अनुसूची I
स्थानीय स्तर	: सामान्य
शारीरिक लंबाई	: 60-70 से.मी.
भार	: 14-22 कि.ग्र.

इस भूरे रंग की बिल्ली के शरीर पर धब्बे नहीं होते। इनके बाल छोटे गुलाबी मटमैले रंग के होते हैं। ये बाल टाँगों के अन्दर की ओर भी होते हैं। आँखों के ऊपर दो काली रेखायें होती हैं। जो इनके मुँह तक जाती हैं। इसकी मुख्य विशेषता इसकी लम्बी पूँछ तथा पतले, नुकीले गुच्छेदार कान होते हैं।

व्यवहार: यह अपना शिकार तेज गति से व फुर्तीलेपन से करती है। और वहीं रहना भी पसंद करती है।

प्राकृतिक आवास: गीले जंगल तथा चट्टानों वाले क्षेत्रों में।



जंगली बिल्ली (Jungle Cat)

परिवार का नाम	: फेलीडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Felis chaus</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग / व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकटमुक्त (<i>Least Concern</i>) / अनुसूची II
स्थानीय स्तर	: दुर्लभ
कुल शारीरिक लंबाई	: 55-60 से.मी.
भार	: 5-6 कि.ग्र.



जंगली बिल्ली का रंग मटमैला भूरा होता है तथा इनके कान थोड़े लाल रंग के तथा उनके किनारे पर छोटे काले गुच्छेदार बाल होते हैं। इनकी खाल बिना धब्बों के होती है केवल लाल रंग की धारियाँ माथे से होकर टाँगों के बाहरी किनारे तक जाती हैं। इनकी आँखों के चारों ओर सफेद रंग के छल्ले से बने होते हैं जो की गोल दिखाई देती हैं। जो बिल्लियाँ दक्षिण भारत में पाई जाती हैं वे थोड़ी स्याह रंग की होती हैं परंतु उनकी कमर पर हल्के रंग के धिल्ली के निशान बने होते हैं।

व्यवहार:— जंगली बिल्लियाँ रिहायशी क्षेत्रों में अधिक दिखाई देती हैं। ये अपने से काफी बड़े जानवरों का भी शिकार कर सकती हैं।

प्राकृतिक आवास:— हरे भरे क्षेत्रों में, झाड़ियों के आस-पास या शहरों के आस-पास तथा गाँवों में।

रजत चित्रित बिल्ली (Rusty Spotted Cat)

परिवार का नाम	: फेलीडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Prionailurus rubiginosus</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग / व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकटनिकट (<i>Near Threatened</i>) / अनुसूची II
स्थानीय स्तर	: दुर्लभ
कुल शारीरिक लंबाई	: 35-40 से.मी.
भार	: 1.1-6 कि.ग्रा.

यह बिल्ली आकार में घरेलू बिल्ली के आकार में आधी तथा संसार की सबसे छोटी बिल्ली मानी जाती है। इन बिल्लियों की बिस्कुटी खाल पर गहरे भूरे रंग के धब्बे बड़े ही पंक्तिबद्ध रूप से शरीर के ऊपर होते हैं। इसके माथे पर लम्बी काली किनारे वाली सफेद धारियां होती हैं। इनकी आंखों के चारों ओर सफेद गोलाकार बना होता है। इसकी टांगें, थुड्डी और पेट के नीचे वाली खाल सफेद होती है। ये घने जंगलों में नहीं होती परन्तु फिर भी बहुत कम दिखाई देती हैं।

व्यवहार:- ज्यादातर यह बिल्ली बारिश के बाद दिखाई देती हैं जब वह अपने पेड़ों पर बने हुए छुपे स्थानों से बाहर निकलती है। इसको मानव जाति से बिल्कुल डर नहीं लगता।

प्राकृतिक आवास:- चट्टानों में, झाड़ियों के आस-पास खुले जंगल, रिहायशी क्षेत्रों में।



खूप्या बाघ (Fishing Cat)

परिवार का नाम	: फेलीडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Prionailurus viverrinus</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग / व.जी.अ., 1972 अनुसार	: असुरक्षित (<i>Vulnerable</i>) / अनुसूची II
स्थानीय स्तर	: असामान्य
कुल शारीरिक लंबाई	: 60-70 से.मी.
भार	: 5-5.8 कि.ग्रा.



ये बिल्लियां अपनी सभी जातियों में से आसानी से पहचानी जाती हैं। इनकी खाल हरे-भूरे रंग की होती है, और दूसरी धब्बेदार बिल्लियों से अलग होती हैं। इनकी टांगें छोटी होती हैं तथा कमर की तरफ लंबी धारियां होती हैं जो गर्दन के पास जाकर समाप्त हो जाती हैं। इसके हल्के रंग के गालों पर गहरे रंग की धारियां होती हैं जो गर्दन के नीचे तक जाती हैं जैसे सामान्य बिल्लियों की होती है। यह बिल्ली तेंदुआ बिल्ली से बड़ी होती है तथा बदरंग चित्रित बिल्ली व मरु बिल्ली से लगभग एक फुट अधिक

लंबी होती है। इसकी पूंछ उन बिल्लियों से छोटी पर मजबूत होती है तथा यह पेड़ों के तनों में तथा पानी के आस-पास मैदानों में रहती है।

व्यवहार: ये बिल्लियां पानी के आस-पास रहकर मछलियों व पानी में रहने वाले जानवरों को मारकर खाती है तथा मैदानों में रहने वाले छोटे-मोटे जानवरों को भी अपना शिकार बना लेती है।

प्राकृतिक आवास:- गीले रहने वाले स्थानों, घने जंगल व झाड़ियों में।

तेंदुआ बिल्ली (Leopard Cat)

परिवार का नाम	: फेलीडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Prionailurus bengalensis</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग / व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकट मुक्त (Least concerned) / I
स्थानीय स्तर	: सामान्य
शारीरिक लंबाई	: 45-75 से.मी.
भार	: 3-4 कि.ग्रा.

तेंदुआ बिल्ली का आकार घरेलू बिल्ली के बराबर होता है। लेकिन यह घरेलू बिल्ली की तुलना में पतली होती है, इसके लंबे पैर होते हैं। साथ ही पैरो की उंगलियों के बीच अच्छी तरह से परिभाषित जाल है। इसका छोटा सिर दो प्रमुख काली पट्टियों और एक छोटी और संकीर्ण सफेद धूथन के साथ चिन्हित है। तेंदुआ बिल्ली का वजन 0.55 से 3.8 किलो ग्राम है, जिनमें सिर की लंबाई 38.8 से 86 सेंटीमीटर कंधे की ऊँचाई लगभग 41 सेमी. है।



तेंदुआ बिल्ली उप प्रजातियों के आधार पर काले रंग के चिन्हों को देखा जा सकता है। यह रोसेट हो सकता है या बिंदीदार धारियों की आकृति की भी हो सकती है।

सोनकुत्ता या ढोल (जंगली कुत्ता) (Asiatic Wild Dog)

परिवार का नाम	: कैनिडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Cuon alpinus</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग / व.जी.अ., 1972 अनुसार	: असुरक्षित (Endangered) / अनुसूची II
स्थानीय स्तर	: स्थानीय रूप से सामान्य
शारीरिक लंबाई	: 90 से.मी.
भार	: 12-18 कि.ग्रा.।

एक विशेष एशियाई लाल-भूरा वन कुत्ता, ढोल के भेड़िये और पालतू कुत्ते से छोटी टांगे, अधिक झबरी पूंछ तथा मोटी धूथन होती है। एशियायी जंगली कुत्ते के रूप में भी जाना जाने वाला यह जंगली कुत्ता, हल्के बलुई पत्थर से जंगयुक्त लाल रंग का होता है। दक्षिण भारत में इसकी खाल गहरे रंग की पायी जाती है। छोटे बच्चे जब पैदा होते हैं तो कजरारे भूरे रंग के होते हैं जो तीन माह बाद ललाई भूरे रंग में परिवर्तित हो जाते हैं। मौसम के अनुसार दल का आकार कम ज्यादा होता रहता है।



व्यवहार:— ढोल छः या सात के दल में शिकार करते हैं और अपने शिकार को उसके मरने से पहले ही खाना प्रारंभ कर देते हैं और कुछ घण्टों में ही उसकी हड्डियां तक चट कर जाते हैं। जब यह शिकार करते हैं तो सीटी बजाते हैं, लपलपाते और गुर्राते भी हैं।

प्राकृतिक आवास:— खुले वन क्षेत्र जिनमें छितरे घास के मैदान हों।

भेड़िया (Indian Wolf)

परिवार का नाम	: कैनिडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Canis lupus</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग / व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकटमुक्त (<i>Least Concern</i>) / अनुसूची I
स्थानीय स्तर	: असामान्य
शारीरिक लंबाई	: 100-130 से.मी.
भार	: 15-20 कि.ग्रा.।

भेड़िये के स्लेटी बाल होते हैं जो काले बालों से मिश्रित होते हैं, विशेषकर पीठ, माथे और पूंछ के सिरे पर। निचला भाग हल्के रंग का होता है। भारतीय उपमहाद्वीप के सबसे बड़े श्वानों में से एक होने के बावजूद, भारतीय भेड़िया, अमेरिका और यूरोप में पायी जाने वाली उप-प्रजातियों से छोटा है। भेड़िया विभिन्न प्रकार के भोजन जिसमें घरेलू जानवर भी सम्मिलित हैं, को सुगमता से खाने का अभ्यस्त है, जिससे इसका सीधा टकराव ग्रामीणों से हो जाता है।

व्यवहार:— भेड़ियों के दल कान, पूंछ तथा चेहरे की मांसपेशियों का उपयोग विभिन्न भंगिमाएं बनाकर 'हुआ-हुआ' करके सम्प्रेषण करते हैं। ये उपक्रम पदानुक्रमिक झगड़े और खेल को इंगित करते हैं।

प्राकृतिक आवास:— शुष्क खुले क्षेत्र, रेगिस्तान, तथा खाली ऊंचे स्थान।



गीदड़ या सियार (Golden Jackal)

परिवार का नाम	: कैनिडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Canis aureus</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग / व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकटमुक्त (<i>Least Concern</i>) / अनुसूची II
स्थानीय स्तर	: असामान्य
शारीरिक लंबाई	: 60-70 से.मी.
भार	: 7-15 कि.ग्रा.।

एक मध्यम आकारिय श्वान, गीदड़ दुबला-पतला, हल्के स्लेटी त्वचावरण वाला होता है। यह लोमड़ी जैसा थिकना नहीं होता और न ही भेड़िये जितना घना। हल्के आवरण के बीच में काले बाल होते हैं। जबकि गले और आंखों और होठों के नीचे का भाग सफेद होता है। उत्तर भारत में पाये जाने वाले गीदड़ अपने प्रायद्वीपीय सहजीवियों से बड़े और भारी होते हैं।

व्यवहार:— यह एक सफल शिकारी होता है। गीदड़ की एक अनुपयुक्त ख्याति सफाईकर्मी की है। यह भौकता है एवं लघु स्वर भी उच्चारित करता है।

प्राकृतिक आवास:— शहरी और अर्द्ध शहरी क्षेत्र तथा वन।



भारतीय लोमड़ी (Indian Fox)

परिवार का नाम	: कैनिडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Vulpes bengalensis</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग/व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकटमुक्त (<i>Least Concern</i>)/अनुसूची II
स्थानीय स्तर	: सामान्य
शारीरिक लंबाई	: 45-60 से.मी.
भार	: 18-32 कि.ग्रा.

सामान्य प्रायःद्विपीय भारतीय और बंगाल लोमड़ी, लाल लोमड़ी से अधिक ऊभरे हुए शरीर तथा अपनी स्लेटी दिखावट और टिप्पे वाली पूंछ के कारण सुगमता से पहचानी जाती है (एक छोटे गीदड़ की तरह)। इसके पैर सदैव इसके शरीर से अधिक भूरे रंग के दिखाई देते पड़ते हैं। इसके कान भूरे रंग के होते हैं जिनका किनारा काला होता है और थूथन पर बालों के छोटे निशान होते हैं।

व्यवहार:— भारतीय या बंगाल लोमड़ियां मुख्य रूप से दिन की गर्मी के दौरान वनस्पति के नीचे छिपते हैं या भूमिगत बिलों में छिपते हैं। इनके बिल बड़े और जटिल होते हैं, जिनमें कई कक्ष एवं रास्ते होते हैं।

प्राकृतिक आवास:— समस्त भारत में, खुले चट्टानी क्षेत्र, रेगिस्तान और आबादी के निकट (1350 मी. ऊँचाई तक), सघन वनों में जाने से कतराती है।



धारीदार लकड़बग्घा (Striped Hyaena)

परिवार का नाम	: हाईनिडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Hyaena hyaena</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग/व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकटनिकट (<i>Near Threatened</i>)/अनुसूची III
स्थानीय स्तर	: असामान्य
शारीरिक लंबाई	: 150-160 से.मी.
भार	: 26-41 कि.ग्रा.।

लकड़बग्घा की झुकी हुई पीठ, पतले पैर एवं शरीर हल्का होता है। इसके पार्श्व और पैरों पर धारियां और कड़े, लंबे बाल होते हैं। पीठ पर एक गहरा उर्ध्वविकार उठान होता है तथा कपोल और वक्ष काले होते हैं।

व्यवहार:— हास्युक्त स्वरोच्चारण जो ठहाके में समाप्त होता है।

प्राकृतिक आवास:— क्षुपावन और मानव आबादी के पास।



भालू (Sloth Bear)

परिवार का नाम	: उर्सिडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Melursus ursinus</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग / व.जी.अ., 1972 अनुसार	: असुरक्षित (<i>Vulnerable</i>) / अनुसूची I
स्थानीय स्तर	: सामान्य
आकार	: कंधे तक ऊँचाई 140-170 से.मी.
भार	: 65-145 कि.ग्रा.

यह एक झबरा काला प्राणी है जिसकी लम्बी थूथन और झुकी-झुकी चाल होती है। यह अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो सकता है तथा संकटापन्न होने पर नाखूनों से हमला करता है।

व्यवहार:- भालू दीमकों एवं चीटियों को अपने अगले दांतों के बीच में स्थित खाली स्थान का उपयोग करके मुँह में चूस लेता है। इसके लंबे नाखून दीमक की बाम्बियों को तोड़ने के काम आते हैं।

प्राकृतिक आवास:- पर्णपाती वन, गुफाएं एवं घास के मैदान।



जंगली सुअर (Wild Pig)

परिवार का नाम	: सुइडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Sus scrofa</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग / व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकटमुक्त (<i>Least concern</i>) / अनुसूची III
स्थानीय स्तर	: सामान्य
शारीरिक लंबाई	: कंधे तक ऊँचाई 90-180 से.मी.
भार	: 90-100 कि.ग्रा.।

बड़ा जंगली सुअर सामान्य सुअर के अपेक्षाकृत काली अयाल वाला गहरे स्लेटी भूरे रंग का होता है। इसका ऊपरी आवरण पूर्वोत्तर में सबसे हल्का तथा दक्षिण भारत तथा पूर्व में गहरे रंग का होता है। दक्षिण भारतीय सुअर आकार में थोड़े बड़े होते हैं। जंगली सुअर पूरे वर्ष बच्चे पैदा करते हैं तथा बच्चे भूरे रंग के होते हैं। जिन पर पीली धारियां होती हैं। यह छद्मावरणीय रंग केवल 6-7 माह तक रहता है। जब तक बच्चे माँ से अलग होकर स्वतंत्र नहीं हो जाते हैं।

व्यवहार:- जंगली सुअर किसी अन्य प्राणी की अपेक्षा अधिक क्षति पहुंचा सकता है क्योंकि ये कभी-कभार ही आक्रामक होते हैं। भीषण लड़ाई के समय इसके मेरूदण्डीय बाल खड़े हो जाते हैं।

प्राकृतिक आवास:- झाड़ियां, घांस के मैदान, मिश्रित पर्णपाती एवं सदाबहार वन।



छोटा भारतीय मुश्कबिलाव (कस्तूरी) (Small Indian Civet)

परिवार का नाम	: विवैरिडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Viverricula indica</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग/व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकट मुक्त (<i>Least concern</i>)/अनुसूची II
स्थानीय स्तर	: सामान्य
शारीरिक लंबाई	: 45-60 से.मी.
भार	: 2.5-3.5 कि.ग्रा.।

यह एक सामान्य छल्लेदार पूंछ वाला धुंधले रंग का प्राणी है जिसके पूरे शरीर पर चित्ते होते हैं। इसका त्वचावरण भूरे से स्लेटी रंग का होता है। काली और सफेद पूंछ में 8-10 गहरे बलय होते हैं। इस सिवेट के मेरूदण्ड पर उठान अनुपस्थित होता है। इसका गला क्रीम रंग का होता है जिस पर दो गहरे रंग के धब्बे होते हैं। इसके सिर के ऊपर बिल्ली की तरह कान, छोटे गोल और एक दूसरे के बहुत समीप स्थित होते हैं जबकि इसकी टांगे गहरे रंग की लम्बी होती हैं।



व्यवहार:— यह बहुत अधिक वृक्षीय नहीं होता। यह सघन घास और झाड़ियों को पसंद करता है। यह बिलो और घट्टानों के नीचे रहना पसंद करता है।

प्राकृतावास:— पर्वतों एवं रेगिस्तान के अतिरिक्त सभी स्थानों पर (2500 मी. तक)

खटस (Palm Civet)

परिवार का नाम	: विवैरिडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Paradoxurus hermaphroditus</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग/व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकट मुक्त (<i>Least concern</i>)/अनुसूची II
स्थानीय स्तर	: सामान्य
शारीरिक लंबाई	: 42-69 से.मी.
भार	: 3-4 कि.ग्रा.।

खटस का अविन्यासित गले और पूंछ से अन्य सामान्य मुश्कबिलाव प्रजातियों से भिन्नता के कारण पहचाना जा सकता है। इसके शरीर का रंग तेज क्रीम रंग से भूरे- काले या धब्बे वाला होता है। गहरे रंग के धब्बे पार्श्व में एक पट्टी बन जाते हैं। इसकी पीठ पर तीन लम्बी-लम्बी धारियां होती हैं जिन्हें निकट निरीक्षण से देखा जा सकता है।



व्यवहार:— एक सर्वाहारी प्राणी, यह नारियल के फलों और शहद को चाव से खाता है। इसी कारण से इसकी ख्याति 'मीठा खोर' प्राणी के रूप में है।

प्राकृतिक आवास:— पर्णपाती और क्षुपा वन और सुवृक्षीय ग्रामीण क्षेत्र।

छोटा भारतीय नेवला (Indian Grey Mongoose)

परिवार का नाम	: हर्पिस्टिडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Herpestes edwardsii</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग/व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकट मुक्त (Least concern)/अनुसूची II
स्थानीय स्तर	: सामान्य
शारीरिक लंबाई	: 35-45 से.मी.
भार	: 0.800-1.40 कि.ग्र.।

छोटा भारतीय नेवला दूसरे नेवलों से ज्यादा सख्त होता है और प्रत्येक बाल में दस समानांतर हल्के और गहरे प्रकाश बैंड होते हैं। इसके पैर इसकी त्वचा से ज्यादा गहरे रंग के होते हैं। पूंछ, सिर और शरीर को जोड़ने पर भी लंबी बैठती है। रेगिस्तान में रहने वाली उप प्रजाति ज्यादा लाल, दक्षिण भारत की ज्यादा भूरी और उत्तर भारत की ज्यादा स्लेटी होती है। यह तीनों प्रजातियां छोटे, धारीदार, गले वाले नेवले से ज्यादा स्लेटी होती है।



व्यवहार :- ये प्रजाति सर्वभक्षक होते हैं। ये अवसरवादी शिकारी होते हैं। यह प्रजाति विषैले सांपों से निपटने की अपनी क्षमता के लिये जाने जाते हैं।

प्राकृतिक आवास:- मध्य, पश्चिमी और प्रायद्वीप के हिस्से। उत्तर में दिल्ली से लेकर पूर्व में बिहार तक।

लाल नेवला (Rudy Mongoose)

परिवार का नाम	: हर्पिस्टिडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Herpestes smithii</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग/व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकट मुक्त (Least concern)/अनुसूची II
स्थानीय स्तर	: सामान्य
शारीरिक लंबाई	: 39-47 से.मी.
भार	: 0.950-1.80 कि.ग्र.।

लाल नेवला की खाल लाल-भूरे रंग कि मिलावटी होती है- खासकर सिर, गले और कंधों पर। इसकी टांगें, खासकर पिछली टांगें भी लाल रंग की होती है। इसकी पूंछ छोटी होती है जो आखिर में काली होती है। इसकी पूंछ हमेशा ऊपर की ओर मुड़ी हुई होती है।



व्यवहार :- इसका व्यवहार भी छोटा भारतीय नेवला जैसे होता है यह दिन एवं रात में भी शिकार करता है।

प्राकृतिक आवास:- मध्य, पश्चिम व भारत प्रायद्वीप के जंगलों में उत्तर में दिल्ली तक और पूर्व में बिहार तक।

बिज्जू (Honey Badger or Ratel)

परिवार का नाम	: मस्टीलिडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Mellivora capensis</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग/व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकट मुक्त / I (Least concern) / अनुसूची I
स्थानीय स्तर	: असामान्य
शारीरिक लंबाई	: 60–70 से.मी.
भार	: 8–10 कि.ग्र.

रजत स्लेटी रंग की एक चौड़ी पट्टी जो सिर से लेकर पूंछ तक जाती है, बिज्जू को एक छोटे भालू से भिन्न करती है। भालूओं की तरह इसका भी धूथन छोटा होता है। यह मोटे परन्तु चमकीले काले बालों वाला प्राणी है। यह वन-तल खोलकर बड़े गड्ढे बनाता है तथा पेड़ों पर चढ़ जाता है। इनके बच्चों में इसकी पृष्ठीय पट्टी और अधिक हल्की या लाल भूरी होती है। दोनों नर व मादा एक से दिखाई पड़ते हैं, जबकि नर अपेक्षाकृत काफी बड़े होते हैं।



व्यवहार:— यह बिज्जू कर्म खोदने के लिए विख्यात है— एक स्थानीय विश्वास, जो इसकी सफाई करने की आदत पर आधारित है। यह एक ऐसा संहारक है, जो ज्यादातर मांस खाता है, जिसका अनुपूरण हल्के शाकाहारी आहार से होता है।

प्राकृतिक आवास:— पर्वतीय, चट्टानी शुष्क क्षेत्र और शुष्क, नम पर्णपाती वन।

भारतीय पैंगोलिन (Indian Pangolin)

परिवार का नाम	: मैनिडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Manis crassicauda</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग/व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकटग्रस्त (<i>Endangered</i>) / अनुसूची I
स्थानीय स्तर	: असामान्य
शारीरिक लंबाई	: 48–58 से.मी.
भार	: 9–10 कि.ग्र.।

भारतीय पैंगोलिन की त्वचा हल्की गुलाबी-सफेद होती है, जिसके अग्र-भाग पर गंदे पीले रंग के स्केल (कवच) लगे होते हैं। इन स्केल्स में भूरे-लाल बाल होते हैं और इसके नीचे के भाग में छोटे धार विहीन नाखून होते हैं, जबकि इसके मुकाबले इसके लंबे पंजे होते हैं।

व्यवहार:— पैंगोलिन जबर्दस्त तौर से फुंकार मारते हैं और बघने के लिए गेंद के रूप में सिमट जाते हैं। इनको वापस खोलना बड़ा मुश्किल होता है। गेंद की तरह सिमट जाना इनकी रक्षात्मक तकनीक का हिस्सा है क्योंकि इनके दांत नहीं होते हैं।

प्राकृतिक आवास:— झाड़ियां, शहरी खेत, मिश्रित वन।



सामान्य भारतीय शश (Black Napped Hare)

परिवार का नाम	: लिपोरिडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Lepus nigricollis</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग/व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकट मुक्त (<i>Least concern</i>)/अनुसूची IV
स्थानीय स्तर	: असामान्य
शारीरिक लंबाई	: 40-50 से.मी.
भार	: 1.8-3.6 कि.ग्र.।

सामान्य भारतीय शश के बाल लाल-भूरे होते हैं, जिसमें काले बाल शामिल रहते हैं। इसकी लाल भूरे रंग की पूंछ और सफेदी युक्त अंडर पार्ट्स होते हैं। दक्षिण भारत में थोड़ा बड़ा होता है और इसकी गर्दन पर काला धब्बा और पूंछ का ऊपरी छोर काला होता है। इस उप प्रजाति को ब्लैक नेप्ड हेयर कहा जाता है। पश्चिम के रेगिस्तानी इलाकों में यह पीले रेतिले रंग का होता है।

व्यवहार:- यह शश अपने शत्रु नर शश से 10 हेक्टेयर तक के क्षेत्र की हिफाजत करता है।

प्राकृतिक आवास:- खुली झाड़ियाँ, छोटे घास के क्षेत्र, ऊंचे मैदान (2400 मीटर तक) और नमकीन दलदलों को छोड़ कर संपूर्ण भारत के वन चारागाह।



भारतीय साही (Indian Porcupine)

परिवार का नाम	: छिस्ट्रीसिडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Hystrix indica</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग/व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकट मुक्त (<i>Least concern</i>)/अनुसूची IV
स्थानीय स्तर	: सामान्य
शारीरिक लंबाई	: 60-90 से.मी.
भार	: 11-18 कि.ग्र.।

यह भारत का सबसे बड़ा साही है। इस गठीले प्राणी के शरीर पर लंबे काले और सफेद कांटे होते हैं और इसकी रीढ़ इसके माथे से लेकर पीछे के हिस्से के मध्य तक उठी दिखाई देती है। दक्षिण भारत के हिस्सों (कर्नाटक, तमिलनाडु और केरल की सीमाओं पर) में एक उप प्रजाति पाई जाती है जिसका नाम लाल साही है, जिसके कांटों पर जंग जैसा प्रभाव होता है। भारतीय साही को जंगल के छोर पर खेतों की फसलों को खराब करते देखा गया है और यह जमीन के स्तर पर पेड़ों की छाल को भी बर्बाद करता है।



व्यवहार:- खतरा भांपने पर साही अपने कांटों को सीधे कर पूंछ के तीरों को अक्रामक अंदाज में खड़खड़ाने लगता है। खतरा जारी रहने पर यह हमलावर की ओर बढ़ता है, और कांटे छोड़ देता है, जोकि हमलावर के शरीर में घुस जाते हैं। यद्यपि यह एक आम घारणा है परंतु साही जानवरों पर यूँ ही कांटे नहीं छोड़ता।

प्राकृतिक आवास:- समस्त भारत के पथरीले क्षेत्र, खुले ग्रामीण क्षेत्र और चौड़ी पत्ती वाले वन। यह बिलाँ, घनी झाड़ियों और लंबी घास में रहता है।

भारतीय बड़ी गिलहरी (Indian Giant Squirrel)

परिवार का नाम	: स्किरिडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Ratufa indica</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग / व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकट मुक्त (<i>Least concern</i>) / अनुसूची II
स्थानीय स्तर	: सामान्य
शारीरिक लंबाई	: 90-97 से.मी.
भार	: 1.5-2 कि.ग्रा.।

इसको मालाबार विशाल गिलहरी भी कहा जाता है। यह भिन्नता लिए चटक रंगो वाली गिलहरी है। इसकी पीठ मैरून और काले रंग की होती है और भीतरी हिस्से क्रीम या भूरे रंग के होते हैं। उत्तर पश्चिम घाटों में यह गिलहरी भूरे-मैरून रंग की होती है, जिसकी भूरी और सफेद पूंछ होती है। दक्षिण में यह काली या गहरी मैरून रंग की होती है जिसकी काली या भूरी पूंछ होती है। मध्य और दक्षिण पूर्व में इसकी पीठ भूरी और अगली टांगे काला रंग लिए होती है। इनकी काली पूंछ होती है जिसका अग्रभाग हल्के रंग का होता है।



व्यवहार:— यह अक्सर किसी शाखा पर लेटी रहती है और इनकी पूंछ लटकती रहती है।

प्राकृतिक आवास:— मिश्रित चौड़ी पत्ती वाले और सदाबहार वन। मध्यप्रदेश के सतपुड़ा के जंगलों में यह गिलहरी प्रजाति बहुतायत संख्या में पाई जाती है।

उड़न गिलहरी (Flying Squirrel)

परिवार का नाम	: स्किरिडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Petaurista philippensis</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग / व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकट मुक्त (<i>Least concern</i>) / अनुसूची II
स्थानीय स्तर	: सामान्य
शारीरिक लंबाई	: 97 से.मी.
भार	: 2 कि.ग्रा.।

यह समस्त भारतीय प्रायद्वीप में पाई जाने वाली सबसे आम गिलहरी है। बाकी सब उड़न गिलहरियां हिमालय और उत्तर पूर्व तक सीमित है और एक प्रजाति पश्चिमी घाट पर भी पाई जाती है। भारतीय विशाल उड़न गिलहरी, लाल विशाल उड़न गिलहरी का नीरस रंगों वाला सहोदर है। इसका कोट कौंधी भूरे रंग से स्लेटी तक होता है। इसके भीतरी हिस्से हल्के सिलेटी और पिछला हिस्सा धारीदार होता है। इसका सिर शरीर के बाकी हिस्से के रंग के जैसा ही होता है। कानों पर लाल भूरे हाशिए होते हैं। इसकी पूंछ भूरी स्लेटी होती है जिसकी कुछ जीवों में ज्यादा गहरी नोक होती है।



व्यवहार:— यह रात्रिचर होते हैं एवं ज्यादातर अपना जीवन वृक्षों में बिताते हैं।

प्राकृतिक आवास:— चौड़ी पत्ती वाले, अर्द्ध सदाबहार वन।

सांभर (Sambhar Deer)

परिवार का नाम	: सर्विडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Rusa unicolor</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग/व.जी.अ., 1972 अनुसार	: असुरक्षित (Vulnerable)/अनुसूची III
शारीरिक लंबाई	: कंधे तक ऊँचाई 150 से.मी.
भार	: 225-250 कि.ग्र.।

सांभर भारत का सबसे बड़ा मृग है, जिसके झबरे, गहरे भूरे रंग के बाल और बड़े फँले हुए सींग होते हैं। मादाएं कम झबरी तथा हल्के रंग की होती हैं। मध्य भारत में प्रौढ़ नर सर्वाधिक बड़े होते हैं तथा इनके आकार के कारण, यह बाघों का पसंदीदा भोजन है। यह सबसे अधिक पाया जाने वाला अकेला वन मृग है।

व्यवहार:- सांभर की मयप्रद ध्वनि एक तेज 'धौंक' है। सांभर अधिकांश रूप से पत्ती खाने वाले हैं और कभी-कभी ही घास चरते हुए दिखाई पड़ते हैं। ये अक्सर उथले पानी में खाते हैं और जब संहारकों द्वारा दौड़ाए जाते हैं तो ये पानी में घुस जाते हैं तथा अपने खुरों से पानी को तेजी से हिलाते हैं जिससे आक्रमणकर्ता को भ्रमित किया जा सकता है। मादाओं का सामिप्य पाने को प्रजनन काल में नर एक दूसरे से लड़ते हैं तथा प्रजनन काल में नर मवेशियों और सूअरों की तरह रम्माते हैं।

प्राकृतिक आवास:- मिश्रित पर्णपाती वन एवं घास के मैदान की झाड़ियां।



बारासिंघा (Hard Ground Barasingha)

परिवार का नाम	: सर्विडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Rucervus duvaucelii branderi</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग/व.जी.अ., 1972 अनुसार	: असुरक्षित (Vulnerable)/अनुसूची I
शारीरिक लंबाई	: कंधे तक ऊँचाई 110-135 से.मी.
भार	: 170-180 कि.ग्र.

बारह नोकों वाले सींगधारी नर मृग को बारासिंघा नाम दिया गया है। व्यस्क नरों का शीत ऋतु में गहरा भूरा तथा ग्रीष्म ऋतु में मादा जैसा हल्का भूरा रंग होता है। कठोर भूमि वाली मध्य भारत की उप प्रजाति की पारिस्थितिकी उत्तर और पूर्वोत्तर में पाये जाने वाली बारासिंघों से भिन्न है।

व्यवहार:- प्रजनन काल में नर जोर से रम्माते हैं। दलदल में मृग कीचड़ में रहते हैं तथा उनके खुर खुले हुए होते हैं।

प्राकृतिक आवास:- घास के मैदान, दलदली क्षेत्र (उत्तर एवं पूर्वोत्तर) तथा साल के वन (मध्य भारत)।

सांभर एवं बारासिंघा में प्रमुख भिन्नताएं:-

1. बारासिंघा के शरीर में स्वरुण रंग के बाल पाये जाते हैं जिसके कारण बारासिंघा का शरीर स्वरुण रंग का दिखई देता है जबकि सांभर की शरीर का रंग भूरा होता है।
2. सांभर के गले में नीचे की तरफ **Sore spot** दिखई देता है जबकि बारासिंघा में नहीं दिखई देता है।
3. मध्यप्रदेश में बारासिंघा कान्हा टाईगर रिजर्व में प्राकृतिक रूप से पाया जाता है, जबकि सांभर प्रदेशों के सभी वन क्षेत्रों में पाया जाता है।
4. बारासिंघा के युवावस्था में उसके शरीर में पीठ के ऊपर सफेद रंग की बिंदुओं के सामान आकृतियां दिखई देती है।
5. बारासिंघा के सींग लंबे एवं ऊपर की ओर चांद की आकृति के सामान मुड़े हुए दिखई देते हैं जबकि सांभर के सींग लंबे एवं बाहर की तरफ फैले हुए होते हैं।



चीतल (Spotted Deer)

परिवार का नाम	: सर्विडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Axis axis</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग/व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकटमुक्त (<i>Least concern</i>)/अनुसूची III
स्थानीय स्तर	: बहुतायत में पाया जाता है
शारीरिक लंबाई	: कंधे तक ऊँचाई 90 से.मी.
भार	: 85 कि.ग्र.

इसके शरीर में भूरे रंग की खाल के उपर सफेद धब्बे होते हैं जिसके चलते इसको **spotted deer** भी बोलते हैं। यह भारत का सर्वाधिक पाया जाने वाला तथा दिखने वाला मृग है। यह देश का अकेला सघन चित्तीदार हिरण है। इसका रंग भौगोलिक स्थिति के अनुसार परिवर्तित हो जाता है। दक्षिण भारत में यह लालिमा युक्त हो जाता है। मृग की अन्य प्रजातियों की भांति नर चीतल के सींग तथा मादा चीतल के सींग नहीं होते हैं।



व्यवहार:- यह लंगूरों के साथ एक ही स्थान में रहकर वृक्षों से उनके द्वारा गिराये गये फल और पत्तियों को खाता है। इसकी तीव्र "एक्क" आवाज है। गहरी 'वाउ' घेतावनी संकेतिक ध्वनि है।

प्राकृतिक आवास:- पर्णपाती वन विशेषकर वन सीमा के आसपास।

मूषक हिरण (Mouse Deer)

परिवार का नाम	: त्रेगुलिडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Moschiola indica</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग / व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकटमुक्त (<i>Least concern</i>)/अनुसूची III
स्थानीय स्तर	: सामान्य
शारीरिक लंबाई	: कंधे तक ऊँचाई 21-30 से.मी.
भार	: 2-4 कि.ग्रा.।

भारत का सर्वाधिक छोटा मृग, चूहा मृग या एशियाई सेवरीटैन, एक अजीब प्रजाति है जिसके उदर में तीन थैलियां होती हैं जबकि अन्य सभी जुगालकों के चार थैलियां होती हैं। इसके बड़े खुर होते हैं तथा त्रिकोण के आकार जैसा शरीर जिससे इसे झाड़ियों के बीच से निकलने में सुगमता होती है। इसका शरीर धब्बेदार ओलिव भूरा होता है। नर या मादा के सींग नहीं होते हैं परन्तु दोनों के लंबे दन्त होते हैं। इस विशेष हिरण के वंशज दक्षिण पूर्व एशिया और पश्चिमी अफ्रीका में है।



व्यवहार:— यह मृग सामान्यतः एक खोखले पेड़ के अंदर नांद बनाता है क्योंकि यह आकार में छोटा होता है और अच्छी तरह से छिप सकता है। इसकी कोई ध्वनि नहीं है: यह सामान्यतः कम दिखाई देता है। गर्म मौसम में यह अपना मुंह खोले रहता है।

प्राकृतिक आवास:— पर्णपाती एवं सदाबहार।

भेड़की / काकड़ (Barking Deer)

परिवार का नाम	: सर्विडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Muntiacus muntjak</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग / व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकटमुक्त (<i>Least concern</i>)/अनुसूची III
स्थानीय स्तर	: सामान्य
शारीरिक लंबाई	: कंधे तक ऊँचाई 50-75 से.मी.
भार	: 14-28 कि.ग्रा.

काकड़ या इण्डियन मुन्टजैक का चमकदार भूरा रंग होता है परन्तु अघोटन में फर्क नहीं होता है। इसके अगले पैर पिछले पैरों से लंबे होते हैं। काकड़ के कौनाइन दांत लंबे होते हैं जो सदैव दिखाई नहीं देते हैं।

व्यवहार:— काकड़ की आवाज को देर सुबह अथवा सांयकाल सुने जाने की अधिक संभावना रहती है। तीव्र शैक एक खतरा की संकेतक है जबकि थोड़ी लंबी और कर्णभेदी आवाज एक सामान्य स्वरोच्चारण है।

प्राकृतिक आवास:— घने पर्णपाती एवं सदाबहार वनों के पर्वतीय एवं नम क्षेत्रों को पसन्द करता है।



कृष्ण मृग (Black Buck)

परिवार का नाम	: बोविडी
वैज्ञानिक नाम	: <i>Antelope cervicapra</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग/व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकटनिकट (<i>Near Threatened</i>)/अनुसूची I
स्थानीय स्तर	: असामान्य
शारीरिक लंबाई	: कंधे तक ऊँचाई 73-83 से.मी.
भार	: 32-42 कि.ग्र.

ऐसा ऐन्टीलोप जो केवल भारतीय उपमहाद्वीप में ही पाया जाता है। वयस्क नर काला मृग गहरे भूरे चमड़ेले काले रंग के होते हैं तथा नीचे से सफेद रंग के होते हैं। इनका रंग क्षेत्र और ऋतु के अनुसार परिवर्तनशील है— यह वर्षाकाल के पश्चात सबसे गहरा दिखाई देता है, जबकि दक्षिण भारत में पाये जाने वाले नर गहरे भूरे रंग के होते हैं। मादा और बच्चे ऊपर से पीले तथा नीचे से सफेद होते हैं। तीसरे वर्ष के अंत तक, नर काला मृग सुन्दर बलयाकार सींग प्राप्त कर लेते हैं।

व्यवहार:— प्रभावशाली नर पूरे वर्ष झुण्ड के साथ रहते हैं जबकि अन्य नर मदकाल में अपना पृथक झुण्ड बना लेते हैं। मदकाल में नर अपनी पूँछ को ऊपर की ओर घुमाकर तथा सींगों को पीठ के समानान्तरण करके इठलाई हुई मुद्रा में चलता है। संकट का संकेत होने पर काला मृग ऊपर की ओर ऐसे उछलता है जैसे मानो कि वह कमानादार तुला पर हो।

प्राकृतिक आवास:— शुष्क पर्णपाती घास के मैदान, खुली झाड़ियाँ तथा कृषि भूमि।



रोजड़ा या नीलगाय (Blue Bull)

परिवार का नाम	: बोविडी
वैज्ञानिक नाम	: <i>Boselaphus tragocamelus</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग/व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकट मुक्त (<i>Least Concern</i>)/अनुसूची III
स्थानीय स्तर	: बहुतायत में पाया जाता है
शारीरिक लंबाई	: कंधे तक ऊँचाई 130-150 से.मी.
भार	: 170-240 कि.ग्र.

भारत के सबसे बड़े ऐन्टीलोप, रोजड़ा के बारे में कहा जाता है कि ये सांड की अपेक्षा घोड़े से मिलता-जुलता प्राणी है। भरे पूरे नर का कन्धा, घोड़े के कंधे जितनी ऊँचाई के बराबर का होता है, पीठ से नीचे की ओर झुका हुआ होता है। वयस्क नीले लौह रंग का होता है जबकि मादा और बछड़े बलुयी भूरे रंग के होते हैं। सामान्यतः शांत रहने वाली नीलगाय, जब खतरे का आभास हो तो जोर से घुर्राती है। ये खेतों पर धावा बोलती है और जहां कहीं ये अधिक संख्या में पाई जाती है, वहां फसल की उपज में अधिक गिरावट देखी जाती है।

व्यवहार:— नियमित स्थानों में मलत्याग करता है, जहां यह तश्तरीनुमा आकार में लीद करते हैं। सहवास काल में नर अपनी पूँछ को नाग जैसी मुद्रा में खड़ी करके मादा को रिज्ञाता है।

प्राकृतिक आवास:— शुष्क पर्णपाती घास के मैदान, खुली झाड़ियाँ तथा कृषि भूमि।



चौसिंगा (Four Horned Antelope)

परिवार का नाम	: बोविडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Tetracerus quadricornis</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग / व.जी.अ., 1972 अनुसार	: असुरक्षित (<i>Vulnerable</i>) अनुसूची I
स्थानीय स्तर	: असामान्य
शारीरिक लंबाई	: कंधे तक ऊँचाई 55-65 से.मी.
भार	: 20 कि.ग्रा.

एक छोटा, हल्के भूरे रंग का एंटीलोप, चौसिंगा कम उम्र में लाल रंग का होता है जो आयु के अनुसार पीले रंग में परिवर्तित हो जाता है। यह थिकारा से थोड़ा गहरे रंग का होता है। जिससे यह थोड़ा बहुत मिलता जुलता है। नर के दो जोड़ी सींग होते हैं जिनकी अगली जोड़ी बहुत छोटी होती है। इसके सींग कीलनुमा होते हैं तथा अन्य अधिकांश एंटीलोपों की तरह वलयाकार नहीं होते हैं। गहरे रंग की पट्टियाँ इसके प्रत्येक पैर तक जाती हैं। चौसिंगा का स्वरोच्चारण एक धीमी सीटी, या काकड़ की भौंक के समान होता है।



व्यवहार:- यह अक्सर पानी के समीप रहता है, जिस पर वह बहुत अधिक निर्भर है। अन्य एंटीलोपों से भिन्न यह अकेला, युगल में या छोटे दलों में दिखाई पड़ता है।



प्राकृतिक आवास:- शुष्क पर्णपाती वन तथा झाड़ियाँ, ऊँची-नीची जगह को पसंद करता है।

टिप्पणी: कुरंग (एंटीलोप) प्रजाति के अंतर्गत चौसिंगा एवं मृग प्रजाति के अंतर्गत बार्किंग डीयर (भेड़की) में सामान्यतौर पर सामान प्रकार दिखाई देते हैं। पर निम्न बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए इनका प्राकृतिक तौर पर आकारकीय अंतर किया जा सकता है।

1. चौसिंगा का आकार बार्किंग डीयर की अपेक्षा बड़ा होता है।
2. चौसिंगा के सिर के ऊपर सामने की तरफ से छोटे एवं पीछे दो बड़े सींग पाये हैं। जबकि बार्किंग डीयर में सींग सामने की तरफ मुड़े हुए नुकीली आकृति में होते हैं।
3. बार्किंग डीयर की पूँछ के दोनों तरफ सफेद रंग की नोच की सामान नुकीली आकृति दिखाई देती है। बार्किंग डीयर में मादा में चेहरे के सामने काले रंग की V प्रकार की आकृति दिखाई देती है। जिनमें छोटे-छोटे काले रंग के बाल होते हैं। इनकी आँखों के नीचे काले रंग की धारियाँ होती हैं। बार्किंग डीयर की पीठ सामने की तरफ मुहं की ओर झुकी हुई आकृति की दिखाई देती है। जबकि चौसिंगा में नहीं होती है।

चिंकारा (Chinkara)

परिवार का नाम	: बोविडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Gazella bennettii</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग / व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकटमुक्त (<i>Least Concern</i>) अनुसूची I
स्थानीय स्तर	: सामान्य
शारीरिक लंबाई	: 60-65 से.मी.
भार	: 23 कि.ग्रा.

एक शुष्क क्षेत्र का निवासी, चिंकारा हल्के चेस्टनट या विस्कुटी रंग का होता है। जिसका चमकीला फर ऊष्मा अवशोषण को न्यूनतम करता है। इसके सींग रूपरेखा में अंग्रेजी के (एस) आकार के होते हैं जो सामने से सीधे दिखाई पड़ते हैं। कभी-कभी ऐसे सींग मादा में भी पाये जाते हैं। चिंकारा का स्वरोच्चारण एक चीक के समान है।



व्यवहार:- चिंकारा कई दिनों तक बिना पानी के जीवित रह सकता है। यह वनस्पति और ओस से पानी प्राप्त कर सकता है तथा शारीरिक रूप से पानी संरक्षित करने हेतु अभ्यस्त है।

प्राकृतिक आवास:- रेगिस्तान और शुष्क क्षेत्र।

गौर (Indian Bison)

परिवार का नाम	: बोविडे
वैज्ञानिक नाम	: <i>Bos gaurus</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग / व.जी.अ., 1972 अनुसार	: असुरक्षित (<i>Vulnerable</i>)/अनुसूची I
स्थानीय स्तर	: सामान्य
शारीरिक लंबाई	: कंधे तक ऊँचाई 165-195 से.मी.
भार	: 800-1200 कि.ग्रा.

सबसे बड़ा गोजातीय प्राणी गौर है। ये चमकीले काले रंग के होते हैं जबकि बच्चे और मादाएं काफी भूरे रंग के होते हैं। नवजात शिशु सुनहरे पीले रंग का होता है और वयस्क होते-होते पीले, हल्के भूरे और फिर लाल-भूरे रंग में परिवर्तित हो जाता है। इनके पैर सफेद रंग के होते हैं।



व्यवहार:- यह आकार में बड़ा होते हुए भी बहुत शर्मीला एवं शांत प्रवृत्ति का होता है। यह प्राणी तंग करने पर कभी कभार ही हमला करता है।

प्राकृतिक आवास:- मिश्रित पर्णपाती एवं सदाबहार पहाड़ी वन और घास के मैदान।



लाल जंगली मुर्गा / मुर्गी (Red Jungle Fowl)

परिवार का नाम	: Phasianidae
वैज्ञानिक नाम	: <i>Gallus gallus murghi</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग / व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकटमुक्त (<i>Least Concern</i>) अनुसूची IV
स्थानीय स्तर	: सामान्य
शारीरिक लंबाई	: नर 65-78, मादा 40-45 से.मी.
भार	: नर 1.2 - 2 कि.ग्रा., मादा 700-800 ग्राम

जंगली मुर्गा घरेलू मुर्गा से मिलता जुलता दिखाई देता है। इसकी लंबी पूंछ होती है, जो कि हंसिए के समान आकृति की दिखाई देती है। इसके माथे के सामने की ओर लाल रंग की ऊपर की ओर खड़ी आकृति की कलगी पाई जाती है।

जंगली मुर्गा के माथे पर सामने की ओर मुर्गे की तुलना में छोटी कलगी पाई जाती है। इसके शरीर में गले के पास पीले रंग के पंख पाए जाते हैं एवं शरीर के नीचे कि तरफ बाकी हिस्सों में भूरे रंग के पंख पाए जाते हैं। मुर्गा का आकार मुर्गे की अपेक्षा छोटा होता है।



स्लेटी मुर्गा / मुर्गी (Grey Jungle Fowl)

परिवार का नाम	: Phasianidae
वैज्ञानिक नाम	: <i>Gallus sonneratii</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग / व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकटमुक्त (<i>Least Concern</i>) अनुसूची IV
स्थानीय स्तर	: सामान्य
शारीरिक लंबाई	: नर 70-80, मादा 35-40 से.मी.
भार	: नर 800-1500 ग्राम, मादा 700-800 ग्राम

इस प्रजाति के नर मुर्गा में गेरु रंग के धब्बे के साथ एक ब्लैक केप होता है, और ग्रे भूरे रंग के शरीर पर पंख के पतले पैटर्न के होते हैं। इनकी लंबी गर्दन में पाए जाने वाले पंख काले रंग के होते हैं और एक छोटी, कठोर, पीले रंग की प्लेट में होते हैं, यह अजीब संरचना उन्हें उच्च-ग्रेड कृत्रिम नक्खियों की आकृति बनाने के लिए लोकप्रिय बनाती है।

मादा मुर्गी निराधार है और उसका नीचला भाग पीले रंग का होता है एवं पैरों पर काले और सफेद रंग की चमक होती है।



मोर (Pea Fowl)

परिवार का नाम	: Phasianidae
वैज्ञानिक नाम	: <i>Pavo cristatus</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग / व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकटमुक्त (Least concern) / अनुसूची-I Part-III
स्थानीय स्तर	: सामान्य
शारीरिक लंबाई	: 100-115 से.मी.
भार	: 2.50 - 4 कि.ग्रा.

भारतीय मोर नीले और हरे रंग के पंखों से घिरे हैं, अधिकतर धात्विक नीले और हरे रंग के हैं। लेकिन हरे मोर में हरे और कांस्य के पंख हैं। दोनों प्रजातियों में पुरुष बड़ा होता है। सिर के पक्षों पर इंद्रधनुषी नीले हरे पंख होते हैं। स्कंधस्थि और पंखों का रंग बदामी, काला होता है। पूंछ लम्बी एवं गहरे भूरे रंग की होती है और उसमें 200 से अधिक पंख होते हैं, और लगभग सभी पंखों पर एक विस्तृत आंख होती है।



हनुमान लंगूर या ग्रे लंगूर (Hanuman or Gray Langur)

परिवार का नाम	: Cercopithecidae
वैज्ञानिक नाम	: <i>Semnopithecus entellus</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग / व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकटमुक्त (Least concern) / अनुसूची-II Part-I
स्थानीय स्तर	: सामान्य
शारीरिक लंबाई	: 70-75 से.मी.
भार	: 10 - 11 कि.ग्रा.



लालमुख बंदर (Rhesus Macaque)

परिवार का नाम	: Cercopithecidae
वैज्ञानिक नाम	: <i>Macaca mulatta</i>
आइ.यू.सी.एन. वर्ग / व.जी.अ., 1972 अनुसार	: संकटमुक्त (Least concern) / अनुसूची-II Part-I
स्थानीय स्तर	: सामान्य
शारीरिक लंबाई	: 45-55 से.मी.
भार	: 7.5 - 8.5 कि.ग्रा.





M-STrIPES

Mobile App "Ecological Module"

के संचालन की तकनीक

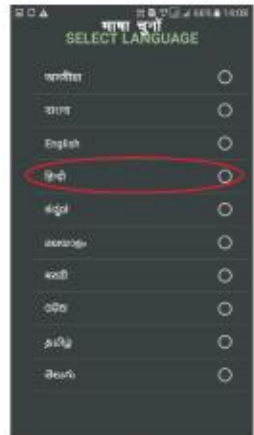
प्रपत्र-1



स्टेप-1
एप प्रारंभिक स्क्रीन



स्टेप-2
होम स्क्रीन



स्टेप-3
भाषा का चुनाव



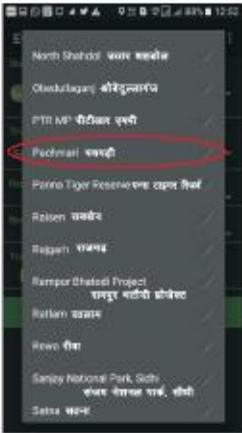
स्टेप-4
राज्य का चुनाव



स्टेप-5
मध्यप्रदेश चुनें



स्टेप-6
वन मंडल का चुनाव करें



स्टेप-7
वनमण्डल का चयन



स्टेप-8
परिक्षेत्र का चयन करें



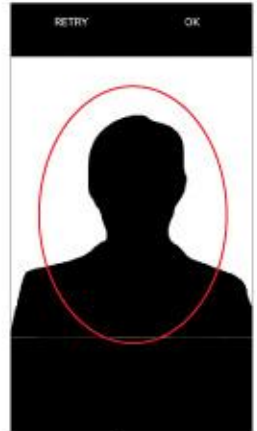
स्टेप-9
परिक्षेत्र का चयन करें



स्टेप-10
बीट का चयन करें



स्टेप-11
जिस नंबर का ट्रेल है
उसे सिलेक्ट करें।

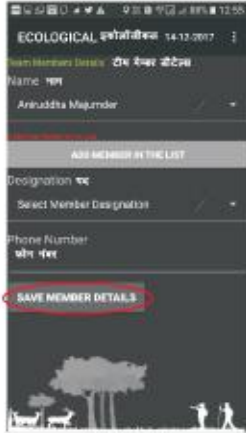


स्टेप-12
समी सदस्यों का फोटोग्राफ लें,
हो सके तो सेल्फी लें।



स्टेप-13

खाली गई जानकारी सही है तो Yes करें।



स्टेप-14

मेंबर सिलेक्ट करें यदि लिस्ट ब्लैंक है तो न्यू मेंबर सेव करें।



स्टेप-15

न्यू मेंबर का नाम लिखें।



स्टेप-16

लिखे हुए नाम लिस्ट में आ जायेंगे अब कोई भी एक नाम जो आपका है उसे सिलेक्ट करें।



स्टेप-17

जिस मेंबर को सिलेक्ट किया है उसका पद (Designation) सिलेक्ट करें।



स्टेप-18

सेव दी मेंबर डिस्टेल पर क्लिक करें यदि नही गयी जानकारी सही है तो ही Yes करें। Yes करने पर मेंबर डिस्टेल सेव हो जायेगी।



स्टेप -19

यदि इंटरनेट उपलब्ध हो तो ऑनलाईन मैप सिलेक्ट करें अन्यथा ऑफ लाईन मैप सिलेक्ट करें।



स्टेप -20

ऑफ लाईन मैप सिलेक्ट करने के बाद फोल्डर जाहीं आपकी एम.बी. टाईल्स फाईल रखी है उसे ब्राऊज करें।



स्टेप -20

एम.बी. टाईल्स फाईल सिलेक्ट करें।



प-22

गईल सिलेक्ट करने ड हो जायेगा, इस | वन आईकन पर क करें।



स्टेप-23

साईन टाईप पर क्लिक करें ।



स्टेप-24

देखे गए चिह्न के प्रकार का चयन करें।



इस बटन का उपयोग Zoom In एवं Zoom Out करने के लिये किया जाता है।



इस बटन पर क्लिक करने पर सेटलाईट व्यू और मैप व्यू प्रदर्शित होगा।



इस बटन पर क्लिक करने पर ट्रेक रुक जायेगा और दोबारा क्लिक करने पर प्रारंभ हो जायेगा।



इस बटन पर क्लिक करने पर फार्म 1 प्रदर्शित होगा।



इस बटन पर क्लिक करने पर डाटा सेव हो जायेगा।



इस बटन पर क्लिक करने पर मैप से बाहर आ जायेगे।



इस बटन के द्वारा KML फाईल (Google Earth File) को अपलोड किया जा सकता है।



इस बटन पर क्लिक करने पर कुछ प्रश्न प्रदर्शित होंगे जिनका जवाब सिलेक्ट कर सेव क्लिक कर सेव कर सकते है।



इस बटन पर क्लिक करने पर आपालकालीन सेवारी जैसे- चिकित्सा, अतिरिक्त सैन्यबल एवं अन्य सेवाओं के लिए अनुरोध किया जा सकता है।



इस बटन पर क्लिक करने पर MBTiles Image प्रदर्शित होने लगेगी।



इस बटन पर क्लिक करने पर स्क्रीन पर लोकेशन का प्रदर्शन बंद व चालू किया जा सकता है।



इस बटन पर क्लिक करने पर स्क्रीन को लॉक किया जा सकता है।



इस बटन को दायरे से बाये स्लाईड करने पर स्क्रीन को अनलॉक किया जा सकता है।

नोट- फार्म 1 पूर्ण होने के बाद सेव बटन पर क्लिक कर डाटा सेव करें। तत्पश्चात् Exit बटन पर क्लिक कर मैप से बाहर आ जाये।



स्टेप-25

देखे गए वन्यप्राणी की प्रजाति को सिलेक्ट करें।



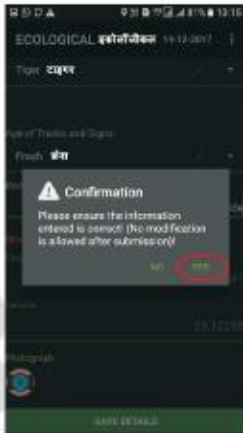
स्टेप-26

वन्यप्राणी का चयन।



स्टेप-27

देखे गए चिन्ह का समय सिलेक्ट करें।



स्टेप-28

यदि रिमार्क हो तो लिखे और टीम मेंबर की फोटो लेकर सेव डिटेल करें यदि सभी जानकारी सही हो तो Yes पर क्लिक करें।



स्टेप-29

यदि अन्य चिन्ह मिलते हैं तो दोबारा फार्म 1 आईकन पर क्लिक करें और पुनः फार्म भरें और यह प्रक्रिया दोहराते रहें। तत्पश्चात Save पर क्लिक कर डेटा सेव करें और Exit पर क्लिक कर बाहर आ जायें। Exit करने पर होम स्क्रीन पर पहुंच जायेंगे।

प्रपत्र-2



स्टेप-01

स्टेट (राज्य) सिलेक्ट करें।



स्टेप-02

डिवीजन सिलेक्ट करें।



स्टेप-03

रेंज सिलेक्ट करें।



स्टेप-04

बीट सिलेक्ट करें।



स्टेप-05

ट्रान्जेक्ट सिलेक्ट करें।



स्टेप-06

रिप्लिकेट सिलेक्ट करें।



स्टेप-07

ड्राइजेक्ट बियरिंग सिलेक्ट करें।



स्टेप-08

मौसम सिलेक्ट करें।



स्टेप-09

भौतिकी का प्रकार सिलेक्ट करें।



स्टेप-10

टीम मेम्बर्स की फोटो लें।



स्टेप-11

यदि रिमाक हो तो लिखे और टीम मेम्बर की फोटो लेकर सेव डिटेल करे यदि सभी जानकारी सही हो तो Yes पर क्लिक करें।



स्टेप-12

मेम्बर का नाम सिलेक्ट करें यदि मेम्बर का नाम लिस्ट में न हो तो Add member name in the list पर क्लिक कर नये मेम्बर का नाम जोड़े।



स्टेप-13

पद का नाम सिलेक्ट करें, एवं मोबाईल नंबर एंटर करें।



स्टेप-14

डाली गई जानकारी सही है तो Yes करें एवं Next पर क्लिक करें



स्टेप-15

यदि इंटरनेट उपलब्ध हो तो ऑनलाईन मैप सिलेक्ट करें अन्यथा ऑफ लाईन मैप सिलेक्ट करें।



स्टेप-16

ऑफ लाईन मैप सिलेक्ट करने के बाद फोल्डर जहाँ आपकी एम.बी. टाईल्स फाईल रखी है उसे ब्राऊज करें।



स्टेप-17

एम.बी. टाईल्स फाईल सिलेक्ट करें।



स्टेप-18

एम.बी. टाईल्स फाईल सिलेक्ट करने के बाद मैप लोड हो जायेगा, इस स्क्रीन पर फार्म दो आईकन पर क्लिक करें।



स्टेप-19

देखे गए वन्यप्राणी की प्रजाति को सिलेक्ट करें।



स्टेप-20

देखे गए वन्यप्राणियों की संख्या दर्ज करें।



स्टेप-21

देखे गए वन्यप्राणियों की संख्या में से युवा वन्यप्राणियों की संख्या दर्ज करें।



स्टेप-22

भौतिकी का प्रकार सिलेक्ट करें।



स्टेप-23

क्षेत्र (Terrain) सिलेक्ट करें।



स्टेप-24

एनिमल बीयरिंग दर्ज करें।



स्टेप-25

देखे गए वन्यप्राणियों की वॉक बीयरिंग दर्ज करें।



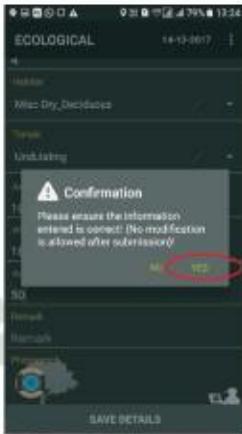
स्टेप-26

काणाय दूरी (एंग्युलर दूरी) दर्ज करें।



स्टेप-27

Continue पर क्लिक करें, यदि रिमार्क हो तो लिखें एवं वन्यप्राणी की फोटो लें, तत्पश्चात सेव डिटेल पर क्लिक करें।



स्टेप-28

डाली गई जानकारी सही है तो Yes करें एवं सेव डिटेल पर क्लिक करें।



स्टेप-29

यदि अन्य वन्य प्राणी मिलते हैं तो दोबारा फार्म 2 आईकन पर क्लिक करें और पुनः फार्म भरें और यह प्रक्रिया दोहराते रहें। तत्पश्चात Save पर क्लिक कर डेटा सेव करें और Exit पर क्लिक कर बाहर आ जायें। Exit करने पर होम स्क्रीन पर पहुंच जायेंगे।

प्रपत्र-3 & 4 प्रपत्र-3A



स्टेप-1

होम स्क्रीन पर प्रपत्र 3 एवं प्रपत्र 4 पर क्लिक करें।



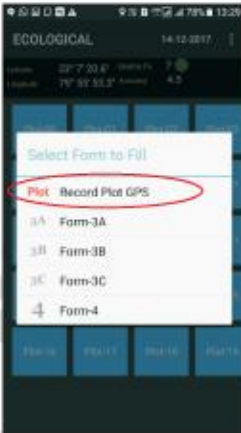
स्टेप-2

स्टेट, डीविजन, रेंज, बीट, ट्रांजेक्ट पहले की तरह सिलेक्ट करें।



स्टेप-3

प्लॉट नंबर सिलेक्ट करें।



स्टेप-4

प्लॉट नंबर सिलेक्ट कर "रिकार्ड प्लॉट जीपीएस" पर क्लिक कर जीपीएस रिकार्ड करें।



स्टेप-5

डाली गई जानकारी सही है तो Yes करें।



स्टेप-6

Yes क्लिक करने के बाद प्लॉट पीले रंग का दिखाई देने लगेगा इस पर क्लिक करें।



स्टेप-7
फार्म 3A पर क्लिक करे।



स्टेप-8
वृक्ष पर क्लिक करे।



स्टेप-9
वृक्ष की प्रजाति सर्च करें।



स्टेप-10
चुनी गई वृक्ष प्रजाति।



स्टेप-11
चुनी गई वृक्ष प्रजाति की संख्या दर्ज करें।



स्टेप-12
चुनी गई वृक्ष प्रजाति की दर्ज संख्या।



स्टेप-13

पूर्वानुसार अन्य वृक्ष प्रजाति सर्च कर उनकी संख्या दर्ज करें ।



स्टेप-14

सेव डिटेल पर क्लिक करें ।



स्टेप-15

वृक्ष प्रजाति का फोटोग्राफ ले एवं सेव डिटेल करें ।



स्टेप-16

डाली गई जानकारी सही है तो Yes करें ।



स्टेप-17

झाड़ी प्रजाति पर क्लिक करें ।



स्टेप-18

झाड़ी प्रजाति सर्च कर उनकी संख्या दर्ज करें ।



स्टेप-19

पूर्वानुसार झाड़ी प्रजातियां सर्च कर उनकी संख्या दर्ज करें एवं सेव डिटेल कर Continue करें।



स्टेप-20

Shurby Weed पर क्लिक करें।



स्टेप-21

Shurby Weed प्रजाति सर्च कर उनकी संख्या दर्ज करें।



स्टेप-22

सेव डिटेल पर क्लिक करें।



स्टेप-23

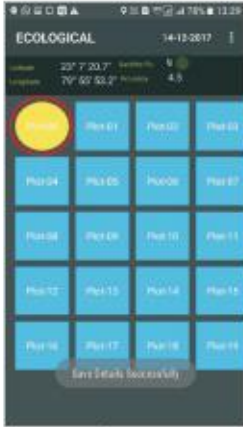
केनोपि कवर, श्रव एबन्डेंस, श्रवी वीड एबन्डेंस, हेबीटाट बीड, टैरेन सिलेक्ट करे यदि रिमार्क हो तो लिखें। प्लाट का फोटो लें एवं सेव डिटेल क्लिक करें।



स्टेप-24

बाली गई जानकारी सही है तो Yes करें।

प्रपत्र-3B



स्टेप-25

पीले रंग के प्लॉट पर क्लिक करें।



स्टेप-26

फार्म 3 बी पर क्लिक करें।



स्टेप-27

फार्म 3 बी



स्टेप-28

बुड़ कटिंग, लोपिंग, ह्यूमन ट्रेल, लाईवस्टोक सीन, बेन्चू कटिंग की डिटेल् भरे फोटोग्राफ ले और Next पर क्लिक करें।



स्टेप-29

खाली गई जानकारी सही है तो Yes करें।



स्टेप-30

यदि यहां स्थाई रूप से लोग निवास करते हैं तो Yes करें अन्यथा नहीं करें। NTFP कलेक्शन हो तो Yes करें अन्यथा नहीं करें। सेब डिटेल् पर क्लिक करें।



स्टेप-31

खाली गई जानकारी सही है तो Yes करें।

प्रपत्र-3C



स्टेप-1

पीले प्लाट पर क्लिक करें।



स्टेप-2

फार्म 3 सी पर क्लिक करें।



स्टेप-3

ग्रास पर क्लिक करें।



स्टेप-4

ग्रास की प्रजाति सर्च कर सिलेक्ट करें एवं सेव डिटेल करे।



स्टेप-5

हर्ब पर क्लिक करें।



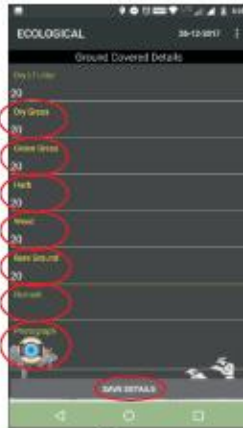
स्टेप-6

हर्ब की प्रजाति सर्च कर सिलेक्ट करें एवं सेव डिटेल करे।



स्टेप-7

Dry LF Litter पर क्लिक कर प्रतिशत दर्ज करें।



स्टेप-8

Dry Grass, Green Grass, Herb, Weed, Bare Ground का प्रतिशत दर्ज करें, यदि रिमार्क हो तो लिखें एवं फोटोग्राफ क्लिक करें व सेव डिटेल करें।



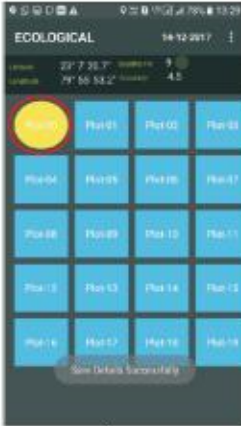
स्टेप-9

खाली गई जानकारी सही है तो Yes करें।

नोट- Dry Grass, Green Grass, Herb, Weed, Bare Ground का कुल प्रतिशत 100 होना चाहिये। यदि 100 से कम या ज्यादा हुआ तो APP द्वारा डिटेल सेव नहीं होगी। (Dry LF Litter का प्रतिशत स्टेप-8 के 100 प्रतिशत में नहीं गिना जायेगा।)

$$\% \text{ Dry Grass} + \% \text{ Green Grass} + \% \text{ Herb} + \% \text{ Weed} + \% \text{ Bare Ground} = 100 \%$$

प्रपत्र-4



स्टेप-1

पिले प्लाट पर क्लिक करें।



स्टेप-2

फार्म 4 पर क्लिक करें।



स्टेप-3

देखे गए वन्यप्राणी प्रजाति को सर्च कर सिलेक्ट करें।



स्टेप-4

सिलेक्ट किए गए वन्यप्राणी की विधा की गिनती कर दर्ज करें।



स्टेप-5

पूर्वानुसार अन्य देखे गए वन्यप्राणी की प्रजाति सर्च कर सिलेक्ट करें एवं उनकी विधा की गिनती कर दर्ज करें।



स्टेप-6

देखे गए वन्यप्राणी की दर्ज विधा संख्या।



स्टेप-7

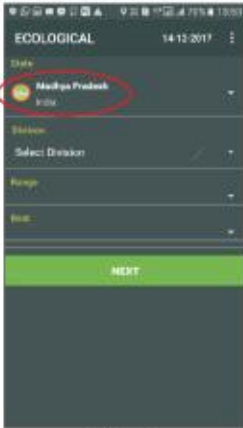
यदि भेड़ और बकरियां चरते हैं तो Yes करें अन्यथा No करें एवं सेव डिटेल् पर क्लिक करें।



स्टेप-8

सेव डिटेल् पर क्लिक करने के बाद प्लॉट ग्रीन कलर का हो जाएगा जिसका मतलब है कि फार्म 3A, 3B, 3C व फार्म 4 पूर्ण रूप से भर चुके हैं।

प्रपत्र-5



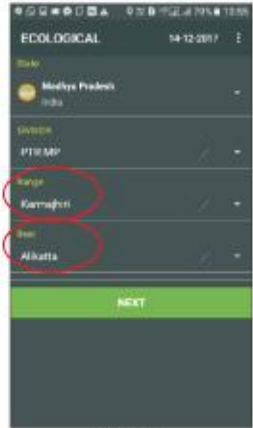
स्टेप-1

स्टेट (राज्य) सिलेक्ट करें।



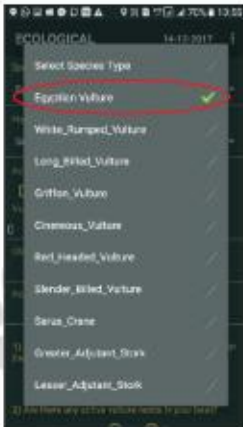
स्टेप-2

डीविजन (संभाग) सिलेक्ट करें।



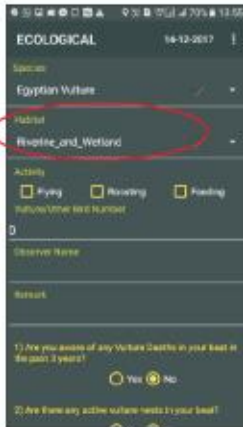
स्टेप-3

रेंज और बीट सिलेक्ट करें।



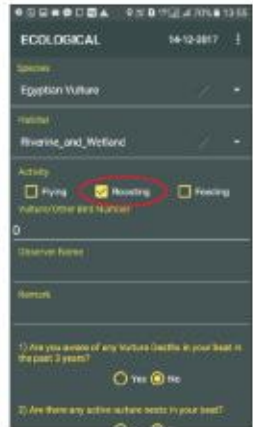
स्टेप-4

गिद्ध प्रजाति व अन्य विलुप्त प्रजाति को सिलेक्ट करें।



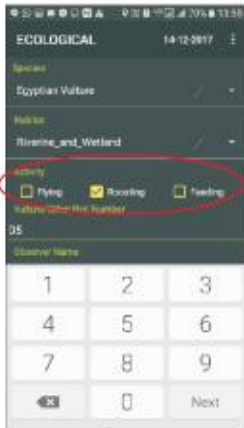
स्टेप-5

भौतिकी (Habitat) सिलेक्ट करें।



स्टेप-6

देखी गई गिद्ध या विलुप्त प्रजाति की गतिविधि दर्ज करें।



स्टेप-7

देखी गई गिद्ध या विलुप्त प्रजाति की संख्या दर्ज करें व यदि प्रजाति का कोई अन्य नाम हो तो दर्ज करें।



स्टेप-8

यदि बीट में पिछले तीन सालों में किसी गिद्ध प्रजाति या अन्य विलुप्त प्रजाति की मौत हुई है तो Yes करें अन्यथा No करें यदि बीट में किसी गिद्ध प्रजाति या अन्य विलुप्त प्रजाति का घोंसला है तो Yes करें अन्यथा No करें।



स्टेप-9

डाली गई जानकारी सही है तो Yes करें।

मध्यप्रदेश के वनों में पाई जाने वाली प्रमुख वनस्पति प्रजातियाँ

Tree

Scientific Names	Local / Common Names
<i>Acacia auriculiformis</i>	Austrelian Babool, Betal Tree
<i>Acacia leucophloea</i>	Khejda
<i>Albizia procera</i>	Chichwa, Malkarari gurar, Kardec, Karha, Karhi, Khakra
<i>Albizia saman</i>	Raintree
<i>Anacardium occidentale</i>	Cashew, Kaju
<i>Anacolosia densiflora</i>	Kalmanikom
<i>Anageissus pendula</i>	Krdhai
<i>Annona reticulata</i>	Atha, Ramphal
<i>Anogeissus accuminata</i>	Gorahasal
<i>Anogeissus latifolia</i>	Dhawa dhawda, Dhokra, Dhawda, Dhava, Dhoa, Dhaora, Dharra, Dhava
<i>Anogeissus sericea</i>	Dhao, Dhankra, Ghavad
<i>Anogeissus pendula</i>	Aabla
<i>Anthocephalus chinensis</i>	Kadamb
<i>Antiaris toxicaria</i>	Arayanjily
<i>Antiaris poxicaria</i>	Upas Tree, Ako, Ipoh
<i>Antidesma ghaesembilla</i>	Amthi, Gondarli, Jhondharli, Jhodrali, Vanmasuri
<i>Aphanamixis polystachya</i>	Chemmmaram
<i>Aporosa lindleyana</i>	Vetti
<i>Aporosa bourdillonii</i>	Vetty
<i>Araucaria columnaris</i>	Monkey puzzle tree
<i>Areca catechu</i>	Chamarpushpa, Guvak, Guwa, Khapur, Pug, Pugi, Pungi, Supari, Udveg
<i>Artocarpus heterophyllus</i>	Kathahal
<i>Artocarpus gomezianus</i>	Lakuch, Lakooch, Lakoochi, Badahara, Barhal, Dahua, Dahua
<i>Artocarpus heterophyllus</i>	Plavu
<i>Artocarpus hirsutus</i>	Anjily Aini

<i>Artocarpus integrifolia</i>	Anjily
<i>Azadirachta indica</i>	Aryaveppu Veppu
<i>Azanza lampus</i>	Kapaas, Van Kapas
<i>Balanites aegyptiaca</i>	Engudee, Higonta, Higor, Hingot, Hingota
<i>Balanites roxburghii</i>	Hingan or Hingun
<i>Bauhinia malabarica</i>	Aamta, Arampuly, Amti, Asto
<i>Bauhinia purpurea</i>	Keolar
<i>Bauhinia retusa</i>	Kat Mahul, Kirala, Kevlari, Koliyar
<i>Bauhinia semla</i>	Semla, Kandla, Karial, Chakera
<i>Bauhinia vahlii</i>	Mahoi, Mahua bela, Mahul mahulpatta, Maljhan
<i>Bauhinia variegata</i>	Kachnar, Keyoler, Khanar
<i>Bauhinia racemosa</i>	Katmauli, Jhinjher
<i>Betula pendula</i>	Birch
<i>Bignonia suaveolens</i>	Padar, Pandri, Pandra
<i>Biophytum reinwardtii</i>	Mothi lajwanti, Lajjalu
<i>Biophytum sensitivum</i>	Choti lajvanti, Lajalu, Lakshana, Lanjni, Laxmana, Mukkutti
<i>Bischofia javanica</i>	Bhillar, Paniala, Kein, Kanji
<i>Bogi poma</i>	---
<i>Bombax ceiba</i>	Elavu
<i>Borassus flabellifer</i>	Doub Palm, Palmyra palm, Tala palm, Toddy palm or Wine palm
<i>Boswellia serrata</i>	Salai
<i>Bridelia crenulata</i>	Kasai
<i>Bridelia retusa</i>	Akaj, Mulluvenga, Kajariya, Kasai kaja, Kashai, Kasi, Kataiya, Khaja
<i>Bridelia squamosa</i>	Kasai, Khasi
<i>Buchanania cochinchinensis</i>	Chironji, Charoli
<i>Buchanania lanzan</i>	Achar, Char, Chironji
<i>Butea monosperma</i>	Palas bel, Palash khakhra, Dhakchawala, Chwala, Chhavla
<i>Butea parviflora</i>	Palas Bel
<i>Caesalpinia decapetala</i>	Ralan, Arlu, Kingan, Alai

<i>Calophyllum elatum</i>	Cherupunna
<i>Calophyllum inophyllum</i>	Punna
<i>Canarium strictum</i>	Guggal
<i>Capparis decidua</i>	Kareel, Karel, Karil, Karly
<i>Carallia brachiata</i>	Varangu
<i>Careya arborea</i>	Bhuai, Bhui, Kambhi, Kibhi, Kumbhi, Kumi
<i>Caryota urens</i>	Mari
<i>Casearia tomentosa</i>	Chiliala, Chila
<i>Cassia fistula</i>	Dagdaua, Dhanbher, Girmala, Amaltas, Amata, Banchook, Real
<i>Cassia siamea</i>	Seemia, Kassod
<i>Cassine glauca</i>	Bhutakasi
<i>Casuarina equisetifolia</i>	Kattadimaram
<i>Catunaregam spinosa</i>	Mainher, Ghata
<i>Ceiba pentandra</i>	Kapok
<i>Celtis cinnamomea</i>	Poothiyunathi
<i>Celtis tetrandra</i>	Andia
<i>Cephalostachyum pergracile</i>	Balan Bans
<i>Chloroxylon swietenia</i>	Gheria, Ghiria, Ghiriya, Bheria, Bhira, Bhariya, Bharta, Bharuhi, Bhatodi, Bhavdi, Bhelna, Bheri, Jheria
<i>Cinnamomum verum</i>	Elavagram Karuva
<i>Citrys acida</i>	Nimbu, Nilbu, Kagaji, Nibu
<i>Cleistanthus collinus</i>	Garadi, Garari, Gaurar, Oduk, Karra
<i>Cochlospermum gossypium</i>	Galgal, Ganiar
<i>Cochlospermum religiosum</i>	Gabdu, Galgala, Ganer, Googal
<i>Cocos nucifera</i>	Nariyal
<i>Commiphora wightii</i>	Guggul
<i>Cordia dichotoma</i>	Devas, Dahivan, Gondi, Lasoda Labher, Lasoda Lasre
<i>Cordia macleodii</i>	Dahi Palash, Dhengan, Dahipalas, Goandi, Labher lasoda
<i>Cordia myxa</i>	Dhahplash, Lasod, Lasora
<i>Cordia sinensis</i>	Gondi

<i>Cordiamacleodii</i>	Dahiman, Dahipalas, Dhengan, Gon
<i>Crataeva adansonii</i>	Barna
<i>Crataeva magna</i>	Barana
<i>Crataeva religiosa</i>	Banna
<i>Crateva unilocularis</i>	Baruna, Garlic Pear
<i>Cullenia excelsa</i>	Vediplavu Mullanpali
<i>Dalbergia lanceolaria</i>	Dhobin, Lokhndi, Fasi
<i>Dalbergia latifolia</i>	Dhoban, Kala Sheesam
<i>Dalbergia paniculata roxb</i>	Dhoban, Fansi, Velleetty, Dhobin Phansi, Ghovan, Chovan
<i>Dalbergia sissoo</i>	Sisau, Sisham
<i>Delonix regia</i>	Gulmohar
<i>Delonix elata</i>	Chhota gulmohar, Wite gulmohar
<i>Desmodium oojainense</i>	Sandan, Tinnas
<i>Dicrostachys cinerea</i>	Goya khair, Goya
<i>Dillenia aurea</i>	Karmata
<i>Dillenia indica</i>	Pattipunna
<i>Dillenia pentagyna</i>	Chota kola, Chhota kallai, Bakela, Kala, Korkut, Kela
<i>Diospyros assimilis</i>	Karimathali
<i>Diospyros cordifolia</i>	Bhaketendu
<i>Diospyros ebenum</i>	Karimaram
<i>Diospyros embryopteris</i>	Makod tendu
<i>Diospyros melanoxyton</i>	Abnus, Kendu, Tendu, Timburni
<i>Diospyros microphylla</i>	Elicheviyan, Kattuthuvara
<i>Diospyros montana</i>	Patavan, Makd tendu, Bis tendu, Bistendu, Kala tendu
<i>Dipterocarpus bourdilloni</i>	Bourdilloni
<i>Dipterocarpus caudatus</i>	Keruing
<i>Dolichandrone falcata</i>	Mandal, Medala, Medsingh, Medsingi
<i>Dysoxylum malabaricum</i>	Akil
<i>Ehretia laevis</i>	Datranga, Datrangi, Dantrakha, Datranga bajradanti, Charmor datrangi
<i>Elaeocarpus ganitrus</i>	Jajrasi, Arn, Jamras, Jamraasi, Rudraksha

<i>Elaeocarpus serratus</i>	Kara
<i>Elaeodendron glaucum</i>	Bhutakas, Urn
<i>Ensete superbum</i>	Van kela
<i>Enterolobium saman</i>	Urakkamthungi
<i>Eriolaena hookeriana</i>	Bhithi, Bhothi, Bhoti
<i>Erythrina coralloidendron</i>	Alai
<i>Erythrina suberosa</i>	Gadha palash, Hadua, Hendua, Pangra, Panjra, Pangar, Panjhra
<i>Erythrina variegata</i>	Mandra, Murikku, Murukku, Paangra
<i>Eucalyptus grandis</i>	Eucaly
<i>Eucalyptus spp</i>	Ukliptas
<i>Eucalyptus tereticornis</i>	Eucalyptus, Eucalypus
<i>Euodia lunuankenda</i>	Euodia
<i>Euphorbia nivulia</i>	Katathohar, Senhur, Sij, Thor
<i>Feronia elephantum</i>	Kabit, Kainthan
<i>Ficus arnottiana</i>	Parash peepal
<i>Ficus asperrima</i>	Ficus
<i>ficus beddomei</i>	Ficus
<i>Ficus benghalensis</i>	Bad, Bargad barh, Bargad, Bargat, Barh, Bath, Piply
<i>Ficus callosa</i>	Kadaplavu
<i>Ficus carica</i>	Aanjeer, Anjir
<i>Ficus exasperata</i>	Brahma's banyan
<i>Ficus hispida</i>	Parakom, Gohlar daduri, Gohlar, Cut amar, Kathgoolar, Kathuar, Kathumar
<i>Ficus infectoria</i>	Pakad, Pakhar
<i>Ficus lacor</i>	Paakad, Kaheemal, Peepal, Pipar pakar
<i>Ficus microcapra</i>	Para pipal
<i>Ficus mollis</i>	Kathvar
<i>Ficus palmata</i>	Anjir
<i>Ficus racemosa</i>	Gular, Umar, Golari, Doomar, Athi
<i>Ficus religiosa</i>	Peepal

<i>Ficus retusa</i>	Parash Pipal
<i>Ficus semicordata</i>	Bhui dhumar, Bhuidhumar, Bhuidumar
<i>Ficus tinctoria</i>	Gashti, Gasthee
<i>Ficus tomentosa</i>	Ficus
<i>Ficus virens</i>	Pakar
<i>Flacourtia indica</i>	Kekey, Kakoona, Kenkad bilangra, Kahai, Kakai gorghati, Kakai kahai, Kakai kekad, Kakai, Kaken, Khakher
<i>Flacourtia montana</i>	Lololica
<i>Flacourtia ramontchi</i>	Kaker, Kanker
<i>Garcinia gummigutta</i>	Kudampuli
<i>Gardenia latifolia</i>	Banderladdu, Paniabillo, Papda, Papri
<i>Gardenia resinifera</i>	Deekamali paprel, Deekamali
<i>Gardenia turgida</i>	Chamakarar, Chamar karari, Chamarkarar, Fetra, Kharar, Kharhar
<i>Garuga pinnata</i>	Ghari, Kakad, Kakdia, Kanker, Kekad, Kenkra
<i>Glochidion zeylanicum</i>	Kumbala
<i>Gluta travancorica</i>	Chenkurinji
<i>Gmelina arborea</i>	Gabhari, Gamara, Gamari, Gamari siven khamer, Kumbil, Khamer
<i>Grevillea robusta</i>	Silver Oak, Silk Oak
<i>Grewia optiva</i>	Dhaman dhaban
<i>Grewia serrulata</i>	Chatfurali, Chutarli
<i>Grewia tiliifolia</i>	Ghamun, Dhamin dhaban, Dhamin, Dhaman, Dhankat, Ghamun, Dhamin dhaban, Dhamin, Dhaman, Dhankat, Chadachi unnam
<i>Grewia sclerophylla</i>	Bedi, Bendi
<i>Gymnacranthera canarica</i>	Undapine
<i>Haldina cardifolia</i>	Mahrukh, Manjakadambu, Haldu
<i>Hardwickia binata</i>	Kulavu, Vatu
<i>Helicteres isora</i>	Yethi, Chakhedi, Atai, Atalodakan, Maddod Palnt, Marod, Marodfali, Muchhail, Marod poudha, Makor fali, Bhonvermal

<i>Hevea brasiliensis</i>	Rabar
<i>Holarrhena antidysenterica</i>	Kunda ghas
<i>Holarrhena pubescens</i>	Kkoreya, Kureta, Kuda
<i>Holigarna arnottiana</i>	Charu
<i>Holoptela integrifolia</i>	Chirol, Chrola, Aval, Kanju
<i>Hopea parviflora</i>	Malabar ironwood, White kongu, Hopea
<i>Hydnocarpus pentandra</i>	Marotti
<i>Hymenodictyon excelsum</i>	Bhanbarsal, Bhainstad, Bhuvarlal, Bhorsal
<i>Hymenodictyon orixense</i>	Bhudkut, Bhormal
<i>Ixora parviflora</i>	Kaunch
<i>Ixora pavetta</i>	Katai
<i>Jacaranda acutifolia</i>	Dona
<i>Jacaranda mimosifolia</i>	Jekerenda
<i>Khandi prosopiscineraria</i>	Marval
<i>Kigelia africana</i>	Jhadphnook, Jhadfanoos
<i>Knema attenuata</i>	Chorapali
<i>Kydia calycina</i>	Baranga pula, Baranga, Barga, Poola, Pula verga
<i>Lagerstroemia parviflora</i>	Ladia, Lendia, Leidhaya, Lenata, Fasi
<i>Lagerstroemia flosreginae</i>	Manimaruthy, Jarul
<i>Lagerstroemia indica</i>	Kariya Seja
<i>Lagerstroemia lanceolata</i>	Vellilavu
<i>Lagerstroemia microcarpa</i>	Venteak
<i>Lannea coromandelica</i>	Gaurjan, Moven mavai, Moyan moni, Mohati mowa, Mode, Mohani, Moyan, Mavai, Uthi
<i>Lannea grandis</i>	Mohan, Moyak, Uthy
<i>Leea crispa</i>	Hasiya thapur
<i>Leucaena leucocephala</i>	Safed babool
<i>Limonia acidissima</i>	Belsendha, Bilsena, Kabeet
<i>Limonia crenulata</i>	Billsena, Binaa, Vinyal
<i>Litsea chinensis</i>	Maida kakri
<i>Litsea glutinosa</i>	Maida lakadi

<i>Litsea monopetala</i>	Maida
<i>Lophopetalum wightianum</i>	Venkottai
<i>Mangifera indica</i>	Mango, Aam
<i>Madhuca longifolia</i>	Mahua
<i>Madhukamini longifolia</i>	Kamini, Orange, Jasmine
<i>Machilus macrantha</i>	Kulamavu
<i>Magnolia champaca</i>	Chembakom
<i>Mallotus philippensis</i>	Mohini, Mallotus philippensis, Roli
<i>Mangifera indica</i>	Aam
<i>Mangolia champaca</i>	Champa, Son champa
<i>Manilkara hexandra</i>	Kharni
<i>Melia azadirachta</i>	Bakain, Bhayan
<i>Melia dubia</i>	Malaveppu
<i>Miliusa tomentosa</i>	Kaari, Karli
<i>Miliusa velutina</i>	Dom Sal
<i>Millettia pinnata</i>	Kanji, Karang, Karanj, Ungu
<i>Millingtonia hortensis</i>	Aakash, Akash, Neem
<i>Mimosa xylocarpa</i>	Kadamaram
<i>Mimusops elengi</i>	Maulshri, Molshree, Bakul, Kharechi, Khinni
<i>Mimusops hexandra</i>	Khirmi
<i>Mitragyna parviflora</i>	Mundi, Kaim, Kalam
<i>Moghania bracteata</i>	Chapati, Lapti
<i>Moringa oleifera</i>	Munga
<i>Morus alba</i>	White Mulberry, Sahtoot
<i>Morus australis</i>	Mulberry, Sahtoot
<i>Morus laevigata</i>	King white mulberry, Sahtoot
<i>Morus macroura</i>	King white mulberry, Sahtoot
<i>Murraya exotica</i>	Meethi neem
<i>Murraya koenigii</i>	Meetha neem, Murra, Kariveppu
<i>Naringi crenulata</i>	Binyas
<i>Nauclea purpurea</i>	Purple Neo-cheesewood

<i>Neolamarckia cadamba</i>	Attithekku, Kadam
<i>Nuclea purpurea</i>	Neerkadambu
<i>Ochlandra travancorica</i>	Indian Reed Bamboo
<i>Ochroma lagopus</i>	Balsa
<i>Olea dioica</i>	Edana
<i>Oroxylum indicum</i>	Jaymangal, Palakapayyani
<i>Palaquium ellipticum</i>	Pali azhanthal payyani_
<i>Pandanus tectorius</i>	Ketki, Kewara
<i>Parkia biglandulosa</i>	Chendul-ka-jhar
<i>Parkinsonia aculeata</i>	Parkinsoniya
<i>Phoenix acaulis</i>	Chuae, Chind chui, Chond Lajvanti, Banskari, Kusara Ghas, Vhhind
<i>Phoenix sylvestris</i>	Chand, Chhind
<i>Phyllanthus emblica</i>	Aabla, Aamla, Aanwla, Aavla, Amra, Amla, Avalee, Anmla
<i>Ptilostigma malabaricum</i>	Malabar orchid
<i>Ptilostigma racemosum</i>	Aastha, Apta, Amti, Astara, Austra, Astura, Asto, Astha, Bosa
<i>Pinus rasdiata</i>	Pine
<i>Pithecellobium dulce</i>	Jangal Jalebi
<i>Plumeria rubra</i>	Champa
<i>Polyalthia fragrens</i>	Polyalthia
<i>Ployalthia longifoila</i>	Ashoka
<i>Pongamia pinnata</i>	Karanj
<i>Presicaria barbata</i>	Kozhivalan
<i>Prosopis cineraria</i>	Chakur, Chenkur, Chhaikur, Chhindur, Chhokur, Chaker, Khajadi, Khejra
<i>Prosopis juliflora</i>	Prosopis, Vilayati babul, Vilayati_
<i>Prunus ceylanica</i>	Attanary
<i>Pseudomonas syringae</i>	Canker
<i>Pterocrpus marsupium</i>	Beeja, Beeja Saal, Bija, Bijahara, Bijan, Bijhara, Vencottah
<i>Pterocarpus santalinus</i>	Redsander, Raktachandan

<i>Pterospermum acerifolium</i>	Kanher
<i>Pterospermum rubiginosum</i>	Malamthodali
<i>Putrjiva roxburghii</i>	Jiapoot, Putrjiva
<i>Quercus infectoria</i>	Madanfai
<i>Randia uliginosa</i>	Kalafethar, Kalapather, Katal, Randia
<i>Ricinus communis</i>	Caster, Erand arandi
<i>Radermachera xylocarp...</i>	Katori, Vedamkorana
<i>Salix tetrasperma</i>	Bhanjri
<i>Salmalia malabarica</i>	Bad, Baicha, Bensa
<i>Salvadora oleoides</i>	Sciam, Semar, Gadela, Pilu
<i>Santalum album</i>	Peelu, Pomla, Chandan
<i>Saphindus emarginatus</i>	Aritha, Ritha
<i>Sapindua mukorossi</i>	Ritha
<i>Sapindus laurifolius</i>	Reedha, Ritha, Bhilwa
<i>Sapindus trifoliatus</i>	Reetha, Passacottah
<i>Saraca asoca</i>	Passacottah
<i>Sarcocephalus missionis</i>	Attivanchi
<i>Scheichera oleosa</i>	Kosam, Kusum, Poovam
<i>Schrebera swieteniodes</i>	Moikha, Poovam, Ghanto, Ghator, Chantha mpkha
<i>Semecarpus anacardium</i>	Cherumaram, Biba
<i>Senegalia catechu</i>	Beeva, Bhilawa, Bhilma, Bhilwa, Deshi khair, Dhavara, Kahir, Karingali
<i>Senegalia ferruginea</i>	Gadkhair
<i>Senna siamea</i>	Sena, Kesiya
<i>Sesbania grandiflora</i>	Til, Jangli, Tillee, August
<i>Shorea robusta</i>	Yello star
<i>Soymida febrifuga</i>	Shoragam, Bahyadanda, Bhur, Hadron, Hdharoon, Rohan, Rohani
<i>Spatholobus roxburghii</i>	Rohan rohina, Rohan, Rohani, Rohinee
<i>Spondia mangifera</i>	Akarkara
<i>Steculia urens</i>	Kulo, Karai

<i>Steeospermum personatum</i>	Pathiri, Pandari, Padal
<i>Sterculia balanghas</i>	Panineerchamba
<i>Sterculia colorata</i>	Udar
<i>Sterculia foetida</i>	Peenari, Sterculia Roxb.Karch
<i>Sterculia villosa</i>	Thondy, Udal
<i>Stereospermum colais</i>	Adal, Karingazha, Pathiri
<i>Stereospermum personatum</i>	Paadle
<i>Stereospermum xylocarpum</i>	Paadar, Paadle, Padal, Padri, Katori, Edankorana
<i>Streblus asper</i>	Pandari, Daiar
<i>Streblus taxoides</i>	Majani, Chopadi
<i>Strychnos nuxvomica</i>	Kanjiram, Kuchla
<i>Strychnos potatorum</i>	Kaya
<i>Swietenia mahagoni</i>	Mahogney
<i>Symplocos cochinchinensis</i>	Mahagony, Lodhra, Lodh
<i>Symplocos laurina</i>	Pachotty
<i>Syzygium chavaran</i>	Saferi, Chavaran
<i>Syzygium cumini</i>	Jamun
<i>Syzygium gardneri</i>	Jamun
<i>Syzygium heyneanum</i>	Tholnjavaal, Chhoti Jaamun, Kat Jamun
<i>Syzygium lanceolatum</i>	Jamun Choti
<i>Syzygium montanum</i>	Njaval Poriyal
<i>Syzygium munronii</i>	Poriyal
<i>Syzygium salicifolium</i>	Njara, Kath jamun
<i>Syzygium samarangense</i>	Panineerchamba
<i>Tabernaemontana divaricata</i>	Sag, Teak, Chandni
<i>Tabernaemontana heyneana</i>	Kunninpala
<i>Tamarindus indica</i>	Ernli
<i>Tamarix aphylla</i>	Imli, Pulimaram tamarind
<i>Tectona grandis</i>	Bagh mochh
<i>Terminalia alata</i>	Asan, Saj

<i>Terminalia arjuna</i>	Cowa
<i>Terminalia bellirica</i>	Aajan, Arhun, Arjun, Arjun Kahu, Arjun kahva, Harad, Harra, Arjun koha kahu, Bhera, Behara
<i>Terminalia catappa</i>	Thanni, Bahera, Deshibadam
<i>Terminalia chebula</i>	Kadukka
<i>Terminalia elliptica</i>	Barsaja
<i>Terminalia indica</i>	Sadad sajad, Saaj, Thembavu, Seja, Kahoua,
<i>Terminalia paniculata</i>	Kindal Tree, Flowering Murdah
<i>Tetrameles nudiflora</i>	Cheeni
<i>Thespesia populnea</i>	Jungli Bhindi Bankapas, Jungle Kapas, Jangi Kapas, Paras Pipal, Propolina
<i>Toddalia bilocularis</i>	Nilgiri White Ironwood
<i>Toona ciliata</i>	Antmool, Chandanavembu
<i>Trema orientalis</i>	Dhadhani, Potrush
<i>Vachellia nilotica</i>	Babul
<i>Vernonia arborea</i>	Karana
<i>Wendlandia exserta</i>	Chatptee, Livan Chatpati, Livan Chatpati
<i>Woodfordia fruticosa</i>	Dhawai halduli, Dhavai, Dhavi, Harjudi
<i>Wrightia tinctoria</i>	Dhantappala, Dhaudhi, Dudhi, Dudai, Doodhi, Kalidudhi, Duthi, Dudhi_Indrajau, Meetha Indroz, Dudhia, Dudhi Jhadi, Meetha, Indrajai, Meta
<i>Wrightia tomentosa</i>	Dudai, Dudhia, Dudhi
<i>Xeromphis ulginosa</i>	Kala Fentra
<i>Xylia xylocrpa</i>	Deang
<i>Xylocarpus</i>	Radermachera
<i>Zanthoxylum rhetsa</i>	Mullilam
<i>Ziziphus jujuba</i>	Bair
<i>Ziziphus mauritiana</i>	Bera, Livan chatptee, Plum
<i>Ziziphus rotundifolia</i>	Barari, Charvari, Chjvere
<i>Ziziphus rugosa</i>	Chunbaya, Churana

मध्यप्रदेश के वनों में पाई जाने वाली प्रमुख वनस्पति प्रजातियाँ

Shrub

Scientific Names	Local / Common Names
<i>Abelmoschus crinitus</i>	Kaamraj, Van bhindi
<i>Abelmoschus esculentus</i>	Bhindi
<i>Abutilon indicum</i>	Atibala, Kakai Kanghi, Kanghi
<i>Abutilon persicum</i>	Badi Kanghi
<i>Abutilon polyandrum</i>	Chhota Bans
<i>Acacia arabica</i>	Babul
<i>Acacia caesia</i>	Chilati bari gurar
<i>Acacia campbellii</i>	Arn
<i>Acacia catachu</i>	Khair
<i>Acacia farnesiana</i>	Guh babool, Gukikar, Gandh babool
<i>Acacia lenticularis</i>	Chikva, Bada khair, Kirangi
<i>Acacia leucophaea</i>	Hiver, Ragna, Ramja, Rinjhoda, Reua
<i>Acacia concinna</i>	Kochi, Reetha, Shikakai
<i>Acanthospermum</i>	Bichhukata
<i>Acrocarpus fraxinifolius</i>	Karavenga
<i>Adiantum capillusveneris</i>	Hanspadi, Hansraj
<i>Alangium salviifolium</i>	Akola, Kolha
<i>Albizia amara boivin</i>	Kastar
<i>Albizia chinensis</i>	Chichwa, Karang, Karanji
<i>Albizia falcataria</i>	Peelivaha
<i>Albizia lebeck</i>	Arma, Chichola, Kala Siras, Chirota, Chichva, Black Siras, Kala Saja, Vaka, Nenmenivaka
<i>Albizia odoratissima</i>	Arwaan, Chachela, Chichva, Chichola, Chichwa, Bansa, Kunnivaha, Pulivaka, Karimthakara
<i>Albizia odorata</i>	Chikoda
<i>Alkanna tinctoria</i>	Ratan Jot
<i>Allium leptophyllum</i>	Van Lahasun
<i>Alopecurus myosuroides</i>	Black Grass
<i>Amberboa ramosa</i>	Brahmdandi
<i>Annona squamosa</i>	Sharifa, Sitafal
<i>Antana aculeata</i>	Vidyanasani

<i>Anthospermum hispidulum</i>	Bichukanta
<i>Antidesma acidum</i>	Khatuaa, Khuthua
<i>Antidesma diandrum</i>	Ambadi, Abadi, Jondharli, Katma, Khadua, Khtuva
<i>Ardisia solanacea</i>	Budera
<i>Artabotrys odoratissimus</i>	Madanmast
<i>Baliospermum mantanum</i>	Ban Bhanti, Danti, Jamalgota, Jungli, Jamalgota
<i>Barleria cristata</i>	Dudsibhaji, Dudsi, Morani, Mukaro, Karnta, Karonta, Katsarai, Koranta
<i>Berberis aristata</i>	Daru haldi
<i>Bixa orellana</i>	Latkan
<i>Bridelia stipularis</i>	Ghonta
<i>Butea superba</i>	Bela plas, Palash bel, Badrosin
<i>Caesalpinia pulcherrima</i>	Guletura
<i>Callistemon citrinus</i>	Botal Brush
<i>Calotropis gigantea</i>	GendulaGhass, Aak, Akaona
<i>Calotropis procera</i>	Aakola, Akav, Akman, Akon, Akona, Modar
<i>Calycopteris floribunda</i>	Kukranji
<i>Canthium parviflorum</i>	Kadbar
<i>Capparis horrida</i>	Hing
<i>Carissa opaca</i>	Karonda, Vannimbu
<i>Carissa spinarum</i>	JangliKarauda, Kanoda, Karamdi
<i>Carvia callosa</i>	Matorna
<i>Cascabela thevetia</i>	PeelaKaner
<i>Casearia graveolens</i>	Gilchi, Girchee, Girchi, Barri, Birri
<i>Cassia odorata</i>	Tarwar
<i>Catharanthus roseus</i>	Sadabahar
<i>Catharanthusroseus</i>	Barahmasi, Baramasi
<i>Catunaregam nilotica</i>	Katul
<i>Cestrum nocturnum</i>	Rahratia, Rat Ki Rani
<i>Cheilanthes farinosa</i>	Farinosa
<i>Cheilocostus speciosus</i>	Keokand, Keu Kand, Kevkand
<i>Cissus quadrangularis</i>	Hadjoor, Harjudi
<i>Cissusarnottiana</i>	Madash
<i>Clausenapentaphylla</i>	Ratanjoot

<i>Clerodendron phlomoides</i>	Eanee
<i>Clerodendron serratum</i>	Dhabai, Mormal, Bharangi
<i>Clerodendrum</i>	Clerodendrum
<i>Clerodendrum indicum</i>	Bhandar, Bhat, Bharahgi
<i>Clerodendrum infortunatum</i>	Bhandrer, Bhat, Bhot, Kaleevansha, Kalibanda,
Peringalam	
<i>Cleodendrum phlomidis</i>	Inni
<i>Clerodendrum serratum</i>	Chapati, Barangee
<i>Coffea arabica</i>	Coffee
<i>Colebrookea oppositifolia</i>	Mohati, Bhandar, Bhandari, Bhandr, Kalabassa
<i>Crotalaria sericea</i>	JangliSun, Vansan
<i>Cycas circinalis</i>	Eentha
<i>Dalbergia volubilis</i>	Birach, Birch
<i>Datura metel</i>	Dhatura, Dhatura, Kala, Datoora
<i>Desmodium pulchellum</i>	Chapra, Chapti, Chitti, Chipti
<i>Desmodium velutinum</i>	Chikari, Chikati
<i>Desmodium ferrugineum</i>	Jogilat
<i>Desmodium heterocarpon</i>	Asian Tick, Trefoil
<i>Desmodium latifolium</i>	Chapati, Lipti, Lapti
<i>Dioscorea aculeata</i>	Gataru, Ghud, Chabba
<i>Dioscorea pubera</i>	Bansora, Banskari, Basona, Basora
<i>Dodonaea viscosa</i>	Mehandi, Bara, Badghad, JangliMehendi, Karata
<i>Embelia ribesburm</i>	Bai, Birang
<i>Embelia robusta</i>	Choorra, ChotiGangarua, Bhargal, Baibiran, Bhargal,
Baivading, Kopadulli	
<i>Embelia tsjeriam cottam</i>	Marod, Fail
<i>Embelia ribes</i>	Baibirang
<i>Equisetum diffusum</i>	Hadjodi, Harjodi
<i>Eranthemum pulchellum</i>	JangliTulsi, Van Tulsi, Gulsham
<i>Eranthemum purpurascens</i>	Jangle Tulshi, Van Tulshi, Gulsham
<i>Euphorbia antiquorum</i>	Dhoodhi
<i>Euphorbia ligularia</i>	Dhuar
<i>Euphorbia neriiifolia</i>	Golthooar, Dhur, Thuhar
<i>Euphorbia pilulifera</i>	Laldoodhi
<i>Euphorbia triucalli</i>	BhuiAnwala, Prajati, Kanphal

<i>Euphorbia longifolia</i>	Euphorbia
<i>Flemengia</i>	VarArhar
<i>Flemingia bracteata</i>	Chhapki, Chippa, Chippa
<i>Flemingia macrophylla</i>	Vanchana, Barasalpan, Charbeed, Chakhedan, Chakhetan, Chatkhen, Chekhetan
<i>Flemingia semialata</i>	Van Chana, JangalRahar, Van Rahar
<i>Flemingia stricta</i>	Rairahati, Chepti, Bhaisatad
<i>Flemingia stricta</i>	Dengla
<i>Flueggea micricarpa</i>	Dikamali, Van Suli
<i>Gardenia lucida</i>	Falsa
<i>Grewia asiatica</i>	Khursi
<i>Grewia eriocarpa</i>	JangliRabar
<i>Grewia flavescens</i>	Ban Sulai, Vansuli
<i>Grewia helicterifolia</i>	Gatrani, Gangerua, Gursakri, Ganagerua, Ghursuklu, Bakel, Khatara
<i>Grewia hirusta</i>	Gatarani, Ganger, Ganerua, Bandsuli, Bankilee, Basuli
<i>Grewia rothii</i>	Grewia
<i>Grewia spp</i>	Phalsa
<i>Grewia subinaequalis</i>	Jher, Khair
<i>Grewia tenax</i>	Baikal
<i>Gymnosporia montana</i>	Baikal
<i>Hamiltonia suaveolens</i>	Madar, Bhombarmal
<i>Hedyotis herbacea</i>	Padappan
<i>Hemidesmus indicus</i>	Anantmool,
<i>Hibiscus rosa chin.</i>	Chembarathi
<i>Holostemma annularis</i>	Karhera
<i>Homonoia riparia</i>	Jalbait
<i>Hydrangea aspera</i>	Aspera
<i>Hygrophila auriculata</i>	Bhankari
<i>Indigofera cassioides</i>	Jurrela, Jangli Neel, Barini
<i>Indigofera oblongifolia</i>	Gokhru
<i>Indigofera pulchella</i>	Jhamoli, Jhairola, Baroni, Chirola, Birhul, Jecrola, Bhiroli
<i>Indigofera tinctoria</i>	Leelger, Biroli
<i>Ipomoea batatas</i>	Shakarkand, Sakla
<i>Ipomoea camera</i>	Besram, Sadabahar, BeshramPungara, Ethane

<i>Ipomoea carnea</i>	Didonia, Mojna, Besharam
<i>Isachne bourneorum</i>	Eli Karuka
<i>Ixora arborea</i>	Lokadi
<i>Ixora coccinea</i>	Chethi
<i>Jasminum officinale</i>	Mongra, Mulla
<i>Jasminum sambac</i>	Bela, Motiya, Mogra
<i>Jatropha curcus</i>	Barenda, Ratan Jot, RatanJoyti, Rattangot
<i>Jatropha gossypifolia</i>	Gossypifolia, Bharanda, Kikalidara
<i>Kirganelia reticulata</i>	Makore
<i>Lantana camara</i>	Chabeni, Phulchuiya, Putush, Lantana, Makoy, Baramasi, Kongini, Raimunia, Vidhyasani
<i>Lawsonia inermis</i>	Mehandi, Inermis
<i>Leea asiatica</i>	Hariya
<i>Leea macrophylla</i>	Kand, Korum, HanthiPanw, Hathikand, Hathpan, Patphan
<i>Leea robusta</i>	Koam, HasiSapti, Hasishdaba
<i>Loranthus longiflorus</i>	Banda
<i>Madar calotropis</i>	Aak
<i>Madhukamini exotica</i>	Kamini, Orange Jasmine
<i>Macaranga indica</i>	Vatta
<i>Marsdenia tenacissima</i>	Chatki
<i>Maytenus emarginata</i>	Maytenus, Bharti,Rehkal
<i>Maytenus senegalensis</i>	Bakal
<i>Melastoma malabathricum</i>	Palor
<i>Mesua ferrea</i>	Churuli
<i>Michelia doltsopa</i>	PelaChampa
<i>Millettia auriculata</i>	Gaaj, Gag, Gohilar, Golahari
<i>Mimosa diplotricha</i>	Anathottavadi
<i>Mimosa hamata</i>	Chilati
<i>Mimosa himalayana</i>	Aar
<i>Mimosa pudica</i>	Chhuimui, Lajni, Lajwanti
<i>Mimosa rubicaulis</i>	Aar, Chilati, Laajvanti, Eli
<i>Moghania strobilifera</i>	Chepti
<i>Morinda coreia</i>	Indian Mulberry
<i>Morinda pubescens</i>	Aal
<i>Morinda tinctoria</i>	Aal, Aale, Arar

<i>Moringa tinctoria</i>	Indian Mulberry, Aal
<i>Murraya paniculata</i>	Madhukani, Madhukamini, Othil, Anthil, Hathil
<i>Nerium indicum</i>	Kaner
<i>Nerium tinctorium</i>	Kambippala
<i>Nilgiranthus ciliatus</i>	Karimkuringji
<i>Nyctanthes arbortristis</i>	Sayari, Sasaru, Seharua, Atai, Harsingh, Kher Saddu, Khikhadu, Khirsadi, Berkhatta, Khirsadu
<i>Nyctanthes opuntia</i>	Chappal-Sendh, Nag phani
<i>Olax scandens</i>	Arad Falli, Garoodfalli, Harduli, Harguli, RaktBel
<i>Opuntia elatior</i>	Chappal-Sendh, Nag phani
<i>Petalidium barlerioides</i>	Madmadi, Murmundi, Madmadi, Inderjata
<i>Petridium sp.</i>	Pannel
<i>Premna serratifolia</i>	Arni
<i>Propolis chilensis</i>	Propopis
<i>Punica granatum</i>	Annar
<i>Pygmaea premna herbacea</i>	Bharangi, Prajati
<i>Randia aculeata</i>	Randia
<i>Rhus mysorensis</i>	Rhus
<i>Rhus parviflora</i>	Khatua, Phoolwala, Khattaphal, Rhusparnflora, Rhus
<i>Rauvolfia serpentina</i>	Phoolwala, Khattaphal, Rhusparnflora
<i>Rauvolfia tetraphylla</i>	Varchandrika
<i>River hypocrateriformis</i>	Phalsa
<i>Rosa centifolia</i>	Rose, Arandi
<i>Salacia oblonga</i>	Salacia
<i>Salvadora persica</i>	Pilu, Pomla
<i>Sauromathum venosum</i>	Sauromathum
<i>Securinega virosa</i>	Panchadhara, Chkedan
<i>Senegalia pennata</i>	SafedKher, Gadkhair, ChotiChilati, Chilatichoti
<i>Senna auriculata</i>	Chamar, Aawali
<i>Senna obtusifolia</i>	Tarwar, Aawli, Chakora, Chirota, Puwar, Chirotha
<i>Senna occidentalis</i>	Kasaundi
<i>Smilax macrophylla</i>	Ram Datoun
<i>Solanum indica</i>	Kateri
<i>Solanum indicum</i>	Bharkataia, Ringani
<i>Solanum mauritianum</i>	Ringani, Van Tambacco

<i>Solanum surattense</i>	JangliBengan, Makai, Makoya, Bhatkantai, Bhatkranti, Choto Keketio, Bhavkatiya, Chhoti Ketaki
<i>Solanum torvum</i>	Bhata, Cateri
<i>Sophora interrupta</i>	Bhatkaiya
<i>Sorghum bicolor</i>	Salamri
<i>Strobilanthes auriculatus</i>	Lamani, Bhander, Kurmodi
<i>Strobilanthes callosus</i>	Marudona, Muruadona
<i>Strobilanthes oppositifolia</i>	Maruadana, Bhandara
<i>Syringa emodi</i>	Pachotty
<i>Tamarix dioica</i>	Jhaou, Dhad, Damjadu, Chaue
<i>Tamarix ericoides</i>	Jhadu, Jahu, Damjadu
<i>Tamarix gallica</i>	Jhaou, Jaru
<i>Tephrosia candida</i>	Unhali, Vanhali, Unghali,
<i>Thespesia lampas</i>	Parwa, Wild Ladyfinger, Propolina, Van Kapas
<i>Triumfetta rhomboidea</i>	BadiJalJatan, Chirpat
<i>Urena lobata</i>	Oorpam, GolChirpa
<i>Urena sinuata</i>	Lapti
<i>Vachellia farnesiana</i>	Katangi, Babul
<i>Vernonia divergens</i>	Mohati, Mahni
<i>Viscum orientale</i>	Red-Berry, Mistletoe, Budu, Pudu, Hurchu
<i>Vitex negundo</i>	Leghda, Karinochi
<i>Vitex trifolia</i>	Panee Ka Sambhaloo
<i>Vitis quadrangularis</i>	Hadjod
<i>Waltheria indica</i>	Dhawai, Halduli
<i>Woodfordia floribunda</i>	Dhawai, Jilbulce, Dhavai, Ghavai, Dhabai, Dilbuti, Jilbuli
<i>Wrightia antidysenterica</i>	Dhudhi, BadiDudhi, Kudakappala, Kurentha, Kudnoo, Kukretha, Kurshi
<i>Ziziphus nummularia</i>	JharBeri
<i>Ziziphus oenoplia</i>	Ber, Ghutia, Bharanda,
<i>Ziziphus mummularia</i>	Jharber, Ber, Berbira, Beri
<i>Ziziphus xylopyrus</i>	Ghator, Ghont, Ghata, Ghutia, Ghuthar, Ghotiya, Ghothar,

Grass

<i>Scientific Names</i>	<i>Local / Common Names</i>
<i>Andropogon</i>	Andropogon
<i>Andropogon bladhii</i>	Palwan, Palwal
<i>Andropogon citratus</i>	Lemon grass
<i>Andropogon contortus</i>	Lampa
<i>Andropogon intermedius</i>	Ghoansee, Ghonsee, Ghonsi, Kali, Ghoshi
<i>Andropogon pumilus</i>	Dewaratan, Devartari
<i>Apluda mutica</i>	Pholhera, Phooidara, Phoolera ghash, Phoolwar, Fulera, Fulesh, Fulvar
<i>Apluda aristata</i>	Gandhi murmur, Fulehra, Phulera, Phuliyari
<i>Arisaema tortuosum</i>	Van makka
<i>Aristida adscensionis</i>	Aristida
<i>Aristida depressa</i>	Lamb, Arestida, Lapla, Kakabahari, Kakhbhari
<i>Aristida funiculata</i>	Khadda
<i>Aristida hystrix</i>	Lapooori, Laptiya, Lapuci, Lapusari
<i>Aristida purpurea</i>	Aristeda
<i>Aristida setacea</i>	Aristida long, Ghadauch, Jhani
<i>Arthraxon ciliaris</i>	Arthraxon, Celiris, Lodi, Basin, Bhadora, Khas khas
<i>Arthraxon quartianum</i>	Baskariya, Basin
<i>Arundinella setosa</i>	Furbahari
<i>Arundinella tuberculata</i>	Phulera
<i>Bambusa bambos</i>	Bambo, Kantabans, Katak bas, Katang bans
<i>Bambusa vulgaris</i>	Bans, Bamboo
<i>Bothriochloa intermedia</i>	Beard grass
<i>Bothriochloa odorata</i>	Fooli, Kandi
<i>Bothriochloa pertusa</i>	Bankela, Palwan, Palwal, Lapri, Fulera, Malhar, Fulera, Fulela
<i>Brachiaria eruciformis</i>	Chendi
<i>Brachiaria ramosa</i>	Popati
<i>Cenchrus</i>	Cenchrus
<i>Cenchrus ciliaris</i>	Chacheda, Bharsahonda, Anjan, Kus, Anjas, Badi chind, Barshagenda, Ukri

<i>Cenchrus setigerus</i>	Dhaman ghas, Chlorisbarbata
<i>Cenchrus sp</i>	Cenchrus
<i>Cenchrus pennisetiformis</i>	Buchbucha
<i>Chionac hnegigantea</i>	Karpia
<i>Chrysopogon aciculatus</i>	Chhuriya
<i>Chrysopogon fulvus</i>	Goria
<i>Chrysopogon montanus</i>	Chira, Senha, Chikua, Chikula, Chilka, Chira, Senha
<i>Chrysopogon zizaniodes</i>	Mamas, Khasi, Khus, Urai, Ramcham
<i>Coxi lacrymajobi</i>	Samkru, Gurlu
<i>Cymbopogon citratus</i>	Lemon grass
<i>Cymbopogon martinii</i>	Rosa ghas, Rosa, Rusatikhari
<i>Cymodon dactylon</i>	Duba, Dube, Dudh, Dubha, Doob ghas, Dubi
<i>Cyperus digitatus</i>	Cyperus
<i>Cyperus involucratus</i>	Pahari gondra
<i>Cyperus kyllinga</i>	Nirvishi
<i>Cyperus procerus</i>	Cheriya korai
<i>Cyperus rotundus</i>	Gondila, Gondra, Muthanga, Valiya korai
<i>Cyperus scariosus</i>	Nagarmotha
<i>Cyperus squarrosus</i>	Bearded flatsedge
<i>Dactyloctenium aegyptium</i>	Kodi
<i>Dendro calamus strictus</i>	Bans patti, Bamboo, Bambu, Bansh, Bans, Bamboo
<i>Desmostachya bipinnata</i>	Daab, Dab, Davoli, Kush
<i>Dichanthium annulatum</i>	Chhoitimarvel, Choti marbel, Marvel, Bhurbel, Kel
<i>Dichanthium sp.</i>	Ponda
<i>Dichrostachys cinerea</i>	Bhirbira, Bileti, Birbira, Viletee
<i>Digitaria griffithii</i>	Raee, Poopullu
<i>Digitaria ischaemum</i>	Machuri, Machera, Machera ghas
<i>Digitaria sanguinalis</i>	Crabgrass, Hairy Finger-grass, Large crabgrass
<i>Digitaria stricta</i>	Digitaria
<i>Echinochloa colona</i>	Jangli jhangora, Jharwa, Jirio, shama
<i>Echinochloa crusgalli</i>	Sanwak, Sama
<i>Eleusin indica</i>	Balraj Pandhar
<i>Eragrostis amabilis</i>	Chapedi, Cherota, Laposri, Bhurbhusi, Cherata, Bhurbhri

<i>Eragrostis emabilis</i>	Katathohar, Senhur, Sij, Thor
<i>Eragrostis diarrhena</i>	Aalua
<i>Eragrostis gangetica</i>	Bharbhushi, Bhurbhosi, Phuljhadi
<i>Eragrostis interrupta</i>	Chhoti bhurbhuni, Bhurbhushi, Choti Bhurburi
<i>Eragrostis pilosa</i>	Chiriyā ghans, Chiriyā ghans, Phuler
<i>Eragrostis plumosa</i>	Indian lovegrass
<i>Eragrostis poaeoides</i>	Eragrostis
<i>Eragrostis sp</i>	Eragrostis
<i>Eragrostis tenella</i>	Bhurbhushi
<i>Eragrostis unioloides</i>	Bhurbushi, Van phoa, Kus
<i>Erianthus munja</i>	Mooz
<i>Eriocolon intebus</i>	Eriocolon
<i>Eulalia trispicata</i>	Chunai, Chind
<i>Eulaliopsis binata</i>	Babel, Baber sabaj, Baber sabai, Baber
<i>Hemarthria compressa</i>	Whip grass, jove grass
<i>Heteropogon contortus</i>	Lampa_kush, Lal sukali, Lampa, Lampi, Lampora
<i>Imperata cylindrica</i>	Gramineae chhir, Dabhi, Cheer, Chhirghans
<i>Ischaemum aristatum</i>	Kekat, Kandi
<i>Ischaemum indicum</i>	Murainagrass
<i>Ischaemum laxum</i>	Museli, Mushan, Muchel, Mosel, Phusel
<i>Ischaemum pilosum</i>	Kunda
<i>Ischaemum rugosum</i>	Bhadpor
<i>Iseilema prostratum</i>	Choramusan, Ukari
<i>Iseilemalaxum</i>	Chirai chara, Fusel, Masari
<i>Melanocenchris</i>	Fulari
<i>Oplismenus burmannii</i>	Venupatrika, Wavy-leaf basketgrass, Bidari hullu
<i>Oplismenus compositus</i>	Basingha
<i>Panicum antidotale</i>	Ghamor gharrum
<i>Panicum distichum</i>	Kali kutki
<i>Panicum montanum</i>	Penicum
<i>Panicum repens</i>	Pullu
<i>Panicum sanguinale</i>	Finger grass
<i>Paspalidium flavidum</i>	Gathuwa, Dhunia ghass, Chichwi, Kanankozha

<i>Paspalidium punctatum</i>	Chatka
<i>Petophorum pterocarpum</i>	Kondachinta
<i>Pennisetum pedicellatum</i>	Dinanath
<i>Plantago ovata</i>	Eesbagol
<i>Polypogon monspeliensis</i>	Dinanath, Rabadia
<i>Saccharum arundinaceum</i>	Vedamkorana
<i>Saccharum bengalense</i>	Saccharum
<i>Saccharum munja</i>	Moonj
<i>Saccharum spontaneum</i>	Munj, Munja ghaas, Munja, Kans
<i>Scleria levis</i>	Mokha ghata, Moka, Churia
<i>Sehima nervosum</i>	Serkhan, Bhuseli, Khadi
<i>Sehima sulcatum</i>	Senar, Shenda, Seen, Muchcheial
<i>Setaria glauca</i>	Agasi, Munga, Kolia
<i>Setaria pumila</i>	Bandra, Kotul, Chipta
<i>Sorghum halepense</i>	Jwar, Chikani ghash, Baru, Katumar
<i>Sporobolus diander</i>	Jhurbhusi, Usari
<i>Sporobolus coromandelianus</i>	Ambazham, Amra, Ambazham
<i>Sporobolus indicus</i>	Chiriya ka dana, Phalli, Phooli
<i>Sporobolus pulchellus</i>	Phalli, Phooli, Chaturali, Bhurbhusi
<i>Sporobolus tenuissimus</i>	Peenari,
<i>Tetrapogon tenellus</i>	Chotahalkusa
<i>Themeda arundinacea</i>	Dekhna, Bhond
<i>Themeda caudata</i>	Gunher
<i>Themeda cymbaria</i>	Pothapulla
<i>Themeda quadrivalvis</i>	Pothapulla, Ganer, Gramineae gunher, Gondradi
<i>Themeda triandra</i>	Gonedh, Bhand guner, Parwa
<i>Thysanolaena maxima</i>	Paras papal, Fulbahari, Fulhari, Phulduharia
<i>Triticum aestivum</i>	Ganhua
<i>Triticum aestivum</i>	Mudandai, Gehu, Pattarchati

Herb

<i>Scientific Names</i>	<i>Local / Common Names</i>
<i>Abelmoschus ficulneus</i>	Amraj, Van bhindi
<i>Abelmoschus moschatus</i>	Muskdana
<i>Abrus precatorius</i>	Gomchi gonja, Gomchi
<i>Acacia donaldi</i>	Chamrol
<i>Acalypha indica</i>	Khokli, Kubbi
<i>Acanthospermum hispidum</i>	Gokhru
<i>Achyranthes aspera</i>	Adajhda, Apamarg, Chhurchita, Lapti, Latjira Bhuski
<i>Achyranthes bidentata</i>	Onga
<i>Acmella olercea</i>	Akarkara
<i>Acontitum heterophyllum</i>	Atish
<i>Acorus calamus</i>	Bach, Vayambu
<i>Actinopterys dichotoma</i>	Mayur Shikha
<i>Actinopterys radiata</i>	Morpankhi
<i>Actinodaphne hookeri</i>	Eyyoli
<i>Adansonia digitata</i>	Khursiani imli, Vilayti emli
<i>Adhatoda beddomei</i>	Malabar nut
<i>Adhatoda zeylanica medic</i>	Adussa
<i>Adiantum philippense</i>	Jirola
<i>Aegle marmelos</i>	Makredu, Bel katar, Belpatra, Bel, Bila, Bilpatra
<i>Aerva lanata</i>	Gorkhaganja, Jhikli
<i>Agalinis aspera</i>	Atijhada
<i>Agaricus campestris</i>	Chatraka, Khumi, Gucchi, Chhata, Chhatona, Phenchhatar, Sanpakichhatri, Sarpa chatra
<i>Agave americana</i>	Amal cactus, Gwarpatha
<i>Agave sisalana</i>	Aegew, Ketke
<i>Ageratum conyzoides</i>	Ghamira, Agireya, Ageratum, Ajavapan, Ajgandha, Gayakharpatwar, Bason, Koni Joyndis, Koomi
<i>Ageratum houstonianum</i>	Nilo gandhe, Gandhe jhaar

<i>Ailanthus excelsa</i>	Arlu, Gouranem, Mahaneem, Maharukh
<i>Ailanthus triphysa</i>	Matti Perumaram
<i>Albizia amara</i>	Kaintha, Kastar, Kastar
<i>Aleurites moluccana</i>	Latjeera
<i>Alloteropsis sp</i>	Alloteropsis
<i>Aloe barbadensis</i>	Gavarphata, Ghee kunwar
<i>Aloe vera</i>	Ghrutkumari
<i>Alpinia galanga</i>	Kolinji
<i>Alsonia scholaris</i>	Indian pulai, White cheesewood, Devil tree, Blackboard tree, Milkwood pine, Dita bark, Bitter bark
<i>Alternanthera pungens</i>	Kanti
<i>Alternanthera sessilis</i>	Gotewar, Bada gathua, Jwaiweed, Putarra
<i>Alysicarpus bupleurifolius</i>	Alysicarpus
<i>Alysicarpus monilifer</i>	Murangi
<i>Alysicarpus longifolius</i>	Jangali gailia, Gubal
<i>Alysicarpus rugosus</i>	Sauri
<i>Alysicarpus vaginalis</i>	Davai
<i>Amaranthus spinosus</i>	Kateli chulai, Kateli
<i>Amaranthus viridis</i>	Choulai
<i>Abelmoschus moschatus</i>	Latakasturi
<i>Abeus precatorius</i>	Ratti, Gunchi, Gunja
<i>Abutilon indicum</i>	Kanghi
<i>Abutilon persicum</i>	Madam, Atibala
<i>Ammannia baccifera</i>	Murjhana
<i>Amorphallus campanulatus</i>	Zamin Kand
<i>Amorphophallus sylvaticus</i>	Jungli suran
<i>Amorphophallu smargaritififer</i>	Jatakushi
<i>Ampelocissus arnottiana</i>	Panbel
<i>Anacyclus pyrethrum</i>	Akarkara
<i>Andrographis echioides</i>	Jungali Kalmegh

<i>Andrographis paniculata</i>	Yata Cheerota, Chirayata, Chrapta, Bhui Neem, Kadu Chirayta
<i>Anisochilus carnosus</i>	Jangli salviya, Karimthumba
<i>Anisomeles indica</i>	Basing, Bhandari, Jangali Tulsi
<i>Arachis hypogaea</i>	Van mungfali
<i>Argemone mexicana</i>	Peel dhootar, bhandar
<i>Asparagus racemosus</i>	Asparagus
<i>Asphodelus tenuifolius</i>	Piyaji
<i>Atylosia scarabaeoides</i>	Jangli matar, Vankurthi, Vantoor
<i>Bacopa monnieri</i>	Bakopa bramhi, Brahmi jalbramhi
<i>Barleria montana</i>	Korat, Korta
<i>Barleria prionites</i>	Piyabans, Bajrdanti, Kasraia Katshaiya, Piyabans
<i>Basella alba</i>	Poaibhaji, Pool bhaji
<i>Bidens biternata</i>	Chippa
<i>Bidens pilosa</i>	Chippa gol, Kuri
<i>Blepharis maderaspatensis</i>	Dudhiya
<i>Blumea balsamifera</i>	Kukundr
<i>Blumea fistulosa</i>	Duggi
<i>Blumea lacera</i>	Kakronda, Bhamurda, Jangli muli
<i>Blumea mollis</i>	Gondla
<i>Blumea opsisflava</i>	Pocha
<i>Boerhavia diffusa</i>	Bishmar, Patharchata, Purnanwa, Purrwa, Bishmar
<i>Borreria articularis</i>	Vasuka
<i>Borreria hispida</i>	Boerraria
<i>Brassica sp.</i>	Van rai
<i>Bryonia laciniosa</i>	Shivlingi, Bahuputara, Garunarur, Bilanja
<i>Bryophyllum</i>	Pattharchata
<i>Bryophyllum pinnatum</i>	Patharchati, Patthar chatta, Jakhame hayat
<i>Caesalpinia bonduc</i>	Gatern
<i>Calophyllum wightianum</i>	Cheruthekku
<i>Canscora decussata</i>	Bhuinim Prajati

<i>Careya herbacea</i>	Chhoti kumbhi, Bhu kumbhi
<i>Caryopteris wallichiana</i>	Banrangee, Barangi
<i>Casearia elliptica</i>	Chila, Berry, Bhairo, Kirchi
<i>Cassia absus</i>	Chaksoo
<i>Cassia tora</i>	Chakoda, Chamakarar, Fuwadi, Puadiya, Panwar, Puar, Ramdanda
<i>Catharanthus pusillus</i>	Morya
<i>Celosia argentea</i>	Kikalidara
<i>Centella asiatica</i>	Mandukparni, Mandupakarni, Bramhi, Kudangal
<i>Centipeda minima</i>	Chikalli
<i>Centratherum anthelminticum</i>	Karjiri
<i>Ceratophyllum demersum</i>	Brihatpushpi
<i>Clerodendrum thomsoniae</i>	Mirchi, Khandi, Bleeding heart wine, Bleeding glory bower, Bag flower
<i>Chenopodium album</i>	Bhatua bhetusag
<i>Chlorophytum arundinaceum</i>	Girya musli
<i>Chlorophytum borivilianum</i>	Cho
<i>Chromolaena odorata</i>	Tivra gandha
<i>Cleome burmanii</i>	Kattukaduku
<i>Cleome gynandra</i>	Hurhul hurhur
<i>Coix gigantea</i>	Gararoo Garru Bhos
<i>Coix lacrymajobi</i>	Gadela, Gandhel, Gangarua, Garou, Garru rakshi, bari
<i>Colocasia indica</i>	Jangli arbi
<i>Combretum nanum</i>	Dwarf bushwillow
<i>Commelina benghalensis</i>	Kanaa kanakua
<i>Convolvulus prostratus</i>	Shankh pushpi
<i>Coptis teeta</i>	Mamira
<i>Corchorus aestuans</i>	Chech
<i>Corchorus depressus</i>	Aoundhfali
<i>Corchorus olitorius</i>	Alisan, Alisan, Rajaan
<i>Cordia latifolia</i>	Lasoda gondi, bada lasoda

<i>Crinum asiaticum</i>	Kanval
<i>Crinum defixum</i>	Amarylideaceae
<i>Crinum latifolium</i>	Madhu parnika
<i>Crotalaria alibida</i>	Jangli san
<i>Crotalaria bialata</i>	Rattlepod
<i>Crotalaria juncea</i>	Manilasan, Bansa, Banshal
<i>Crotalaria pallida</i>	Jangal methi
<i>Cucumis trigonus roxb</i>	Bhakoola
<i>Cuminum cyminum</i>	Vanjeera
<i>Curculigo orchoides</i>	Kali musli
<i>Curcuma amada</i>	Aam haldi, Jangli haldi
<i>Curcuma aromatica</i>	Van haldi
<i>Curcuma caesia</i>	Kaali haldi
<i>Curcuma zedoaria</i>	Manjakoova
<i>Cyanotis arachnoida</i>	Panchi
<i>Datura stramonium</i>	Dhatura safed, Dhatura white, Datura
<i>Daucus carota</i>	Gajar ghan, Gajar
<i>Desmodium album</i>	Chepti
<i>Dendrophthoe falcata</i>	Bada, Banda
<i>Desmodium triflorum</i>	Desmodium, Floris
<i>Desmodium cephalotes</i>	Chihpti
<i>Desmodium dichotomum</i>	Lipsu, Lipti
<i>Desmodium gangeticum</i>	Orila
<i>Derris scandens</i>	Gonj, Tup-bel
<i>Dioscorea bulbifera</i>	Kadav, Kand, Vishkand
<i>Dipteracanthus prostratus</i>	Kali dhawani
<i>Dolomiaea macrocephala</i>	Jhari-dhoop, Dhoop (Lahaul), Gugul (Kinnaur), Dhoop lakkar
<i>Drimia indica</i>	Flycatcher, Sundew, Dew plant
<i>Echinops echinatus</i>	Uont katara

<i>Eclipta prostrata</i>	Ghamera bhangraja, Bhrangraj, Bhringraj, Bhrungraj, Kayyonni
<i>Elephantopus scaber</i>	Gojibhya, Van tambaku
<i>Elytraria acaulis</i>	Paysaga
<i>Emilia sonchifolia</i>	Muyalcheviyan, Hirankhuri
<i>Enicostemma verticillatum</i>	Chota chirayata, Katvinayi, Naame, Nahli, Nawari
<i>Eulophia herbacea linds</i>	Bilora
<i>Euphorbia hirta</i>	Dudhy, badi dudhai
<i>Evolvulus alsinoides</i>	Evlovulus
<i>Evolvulus nummularius</i>	Bhui aonla
<i>Exacum pumilum griseb</i>	Chireta
<i>Flemingia involucrata</i>	Flemingia
<i>Garcinia gummifera</i>	Dekamali
<i>Gardenia gummifera</i>	Dikamali, Bandar Laddu, Kurk
<i>Gilnus oppositifolius</i>	Khakhra
<i>Gloriosa superba</i>	Menthonni, Kalihari
<i>Glycyrrhiza glabra</i>	Mulethi, Mulethi
<i>Guizotia abyssinica</i>	Jagani
<i>Gymnema sylvestre</i>	Gadhwall, Gadmar, Bekal
<i>Habenaria marginata</i>	Van pyaaj
<i>Hedychium coronarium</i>	Puthalam
<i>Hedychium spicatum</i>	Kapoorkachari
<i>Hemigraphis letebrosa</i>	Bhangra
<i>Heraclium candolleianum</i>	Chittelam
<i>Hibiscus cannabimus</i>	Ambari
<i>Hibiscus sabdariffa</i>	Amrau
<i>Hibicus vitifolius</i>	Van kapus
<i>Hydrocotyle rotundifolia</i>	Bhamani
<i>Hyoscyamus niger</i>	Khurasani ajwain
<i>Hyptis suaveolens</i>	Jungli tulsi, Van tulsi
<i>Impatiens balsamina</i>	Balsam

<i>Indigofera cordifolia</i>	Gokhru
<i>Indigofera glandulosa</i>	Jhurjhuri, Jhujhroo
<i>Ipomoea reptans</i> poir.	Patusrii
<i>Jasminum multiflorum</i>	Kunda
<i>Justica wynaadensis</i>	Kurinji
<i>Justicia betonica</i>	Mokandar, Kev, Kand, Kokandar
<i>Justicia adhatoda</i>	Adhatoda, Adusa, Kala bansa
<i>Kaempferia galanga</i>	Kacholam
<i>Launaea procumbens</i>	Dobhi
<i>Leonotis nepetifolia</i>	Bara guma, Lal guma
<i>Leomurus cardiaca</i>	Vangonda
<i>Lepidagathis incurva</i>	Seto phuli
<i>Lepidium sativum</i>	Aheli
<i>Leucas cephalotes</i>	Gomari, Drond pospi
<i>Leucas aspera</i>	Bhodki
<i>Limnoplila rugosa</i>	Mithee patti
<i>Linum usitatissimum</i>	Alsi
<i>Liparisrheedei</i>	Jeevakam
<i>Malyer abruspreicatorius</i>	Coral bead vine, Ratti
<i>Marchantia nepalensis</i>	Markesiya
<i>Marsilea quadrifolia</i>	Chouptiya
<i>Melilitus indicus</i>	Van methi
<i>Melochia corchorifolia</i>	Ladaber
<i>Merremia aegyptia</i>	Baudi
<i>Merremia tridentata</i>	Kunda
<i>Millettia extensa</i>	Bikni
<i>Moniera cuneifolia</i>	Bramhi
<i>Monochoria vaginalis</i>	Chapetee
<i>Murdannia spirata</i>	Grass
<i>Musa paradisiaca</i>	Gangalikela
<i>Musa sapientum</i>	Jangli kela, Van kela

<i>Nelsonia canescens</i>	Bijnauri, Raksi
<i>Nelumbo nucifera</i>	Kamal
<i>Nepeta hindostana</i>	Memeri
<i>Nervilia aragoana</i>	Sthalapadma
<i>Nicotiana rustica</i>	Van tambaku
<i>Nymphaea nouchali</i>	Kumudani
<i>Nymphaea pubescens</i>	Safed kumudni, Lal kumudani, Lal ratalu
<i>Ocimum americanum</i>	Van tulsi, Kaali tulsi
<i>Ocimum basilicum</i>	Jangli tulsi, Marbabdi, Baabui tulasi, Babai, Babui, Tulsi mameri, Van tulsi
<i>Ocimum canum</i>	Jangli tulsi, Mamri, Van tulsi
<i>Ocimum grantissimum</i>	Jangal tulsi, Van tulsi, Ram tulasi
<i>Ocimum tenuiflorum</i>	Krishna tulsi, Van tulsi
<i>Ocimum basilicum</i>	Jangli tulsi, Marbabdi, Baabui tulasi
<i>Oryza sativa</i>	Chorati
<i>Oryza granulata</i>	Deodhan
<i>Ottelia alismoides</i>	Van shijada
<i>Oxalis corniculata</i>	Amrul shak
<i>Oxalis richardiana babu</i>	Oxalis
<i>Parthenium hysterophorus</i>	Gajar ghans, Gajar
<i>Paspalum scrobiculatum</i>	Methapullu, Kodon
<i>Pennisetum hohenackeri</i>	Mavai, Mavai, Muvae, Moya
<i>Pennisetum glaucum</i>	Kutki grass
<i>Pergularia daemia</i>	Dudhivel utren, Doodhibhel, Uttran, Bel
<i>Persicaria barbata</i>	Bearded knotweed, Water milkwort
<i>Peucedanum nagpurensis</i>	Peucedanum
<i>Phyllanthus amarus</i>	Bhui amala
<i>Phyllanthus niruri</i>	Ambala, bhui aawla, Keezhanelli
<i>Plumbago zeylanica</i>	Chataar, Chitrak
<i>Pogotemon benghalensis</i>	Kora

<i>Polygala chinensis</i>	Ashok, Beejnoree, Bijnori, Binori
<i>Polygonum barbatum</i>	Jalbait
<i>Polygonum chinense</i>	Bijnori
<i>Polygonum plebeium</i>	Machoi
<i>Portulaca oleracea</i>	Badi lona, Khursa, Portulacaceae
<i>Pseudarthria viscida</i>	Moovila
<i>Psidium guajava</i>	Bihi, Jaam
<i>Psorales coryliflora</i>	Amrood, Bihi, Amrud, Babchi
<i>Randia dumetorum</i>	Madam, Maner manphool, Medal memar, Mainhar, Mangfal Randia
<i>Ruta graveolens</i>	Rue, Common rue or herb-of-grace
<i>Rungia pectinata</i>	Rungia, Rojda
<i>Rungia repens</i>	Kharmor, Rungia
<i>Ruta graveolens</i>	Rojda
<i>Salcia fruticosa</i>	Munja, Ekanayakam
<i>Scoparia dulcis</i>	Mithi patti, Ghoda tulusi
<i>Securinega leucopyrus</i>	Meethi patti, Dengala, Dhengdu, Panchadhara
<i>Selaginella ciliaris</i>	Paonia, Pavaoriya, Poneya, Ponin ghash, Kamraj prajati
<i>Senna alexandrina</i>	Ravni, Rauni, Ael, Aaril
<i>Senna tora</i>	Chirota puar, Bofli
<i>Sesamum indicum</i>	Safed til
<i>Sida acuta</i>	Sal, Kareta, khareri, Kharota
<i>Sida cordata</i>	Faredu
<i>Sida cordifolia</i>	Bariyari, Kharenta
<i>Sida hederifolia</i>	Mahabla, Biryari
<i>Sida rhombifolia</i>	Mamas, Khareti, Kurumthotti
<i>Smithia conferta</i>	Ramdatun, Ramdatun, Karaua, Kottavadi, Van chana
<i>Solanum melongena</i>	Van bhata
<i>Solanum nigrum</i>	Baigan, Brinjal
<i>Solanum villosum</i>	Badi kateri

<i>Solanum virginianum</i>	Makoc, Katai, Bhatkataiya
<i>Sphaeranthus indicus</i>	Gorakhmundi
<i>Spilanthes paniculata</i>	Panicled, Spot flower
<i>Swertia chirayita</i>	Chiryata, Chirata, Chirchita, Chirchiri, Chichita
<i>Tacca leontopetal.</i>	Thondi
<i>Tacco leontopetaloides</i>	Tacco
<i>Tagetes patula</i>	Genda
<i>Tanacetum dolichophyllum</i>	Dhoop, Guggul
<i>Taraxacum javanicum</i>	Kanphooli
<i>Taraxacum officinale</i>	Dudhhi
<i>Tephrosia purpurea</i>	Piya bans, Vajradanti
<i>Trapa natans</i>	Muthassari
<i>Trianthema portulacastrum</i>	Jilmila, Jilmil majni, Potrush, Gothaapra, Biskhapri
<i>Tridax procumbens</i>	Ghavpala, Ghanpala, Pattarchati, Pathrali
<i>Triumfetta bartramia</i>	Chirpat, Anduli
<i>Triumfetta pentandra</i>	Lipti, Chikti
<i>Triumfetta rotundifolia</i>	Chikto
<i>Triumfetta pilosa</i>	Golchippa, Chikti, Karkadia
<i>Uraria picta</i>	Toon Patoh
<i>Urgenia indica</i>	Jangli pyaj, Van pyaz
<i>Vanda parviflora</i>	Arkid
<i>Vateria indica</i>	Vellapine, Chhoti pile phool
<i>Ventilago calyculata</i>	Basana, Kavti, Keonti bel, Kevati, Kyotibel, Paper Bela
<i>Vernonia anthelmintica</i>	Janaga jeera, kali jiri
<i>Vernonia cinerea</i>	Kalajeera, Poovankurunthal
<i>Vigna trilobata</i>	Jangli mung
<i>Vitex penduncularis</i>	Mayurpadi, Morpava, Morpai
<i>Vitis latifolia</i>	Panee ka sambhaloo, Dokarbel
<i>Withania somnifera</i>	Lanjo, Asgand, Ashvagandha

Climber

<i>Scientific Names</i>	<i>Local / Common Names</i>
<i>Ampelocissus latifolia</i>	Dukae bel
<i>Appelocissus latifolia</i>	Amraula
<i>Aristolochia bracteolata</i>	Kitmar
<i>Aristolochia grandiflora</i>	Panjara ghash
<i>Aristolochia indica</i>	Gilhari, Ishwarmul, Karalakam
<i>Caesalpinia sepiaria</i>	Chilari, chilati, Ari, Kirkich
<i>Cajanuscrassus</i>	Jungli ramash
<i>Cajanusscarabaeoides</i>	Ban arahar
<i>Calamus rotang</i>	Chooral
<i>Calastrus paniculata</i>	Mal-kangani
<i>Calonyction muricatum</i>	Bhingari
<i>Canavalia gladiata</i>	Badhi sem, Jangali sem
<i>Cardiospermum</i>	Soapberry
<i>Cardiospermum halicacabum</i>	Kanphooti
<i>Cayratia carnosa</i>	Omendora
<i>Cayratia trifolia</i>	Jangli angoor
<i>Celastrus paniculatus</i>	Malkangni, Khakhundan, Ragun
<i>Cissampelos pareira</i>	Bichhu kand
<i>Citrullus colocynthis</i>	Iandavan, Indrayan Lata, Bagdor
<i>Clematis smilacifolia</i>	Clematis
<i>Clematis triloba</i>	Banda, Bhandar siti
<i>Clitoria ternatea</i>	Aparajita
<i>Coccinia grandis</i>	Kundru

<i>Cocculus hirsutus</i>	Chirenta, Jaljamni, Jaljamun, Patal Gaduri
<i>Combretum albidum</i>	Handi, Hathi sandan, Hadi
<i>Combretum decandrum</i>	Piver bel
<i>Coscinium fenestratum</i>	Maramanjil
<i>Cryptolepis buchanani</i>	Dhudhibel, Dodhi bail
<i>Cucumis prophetarum</i>	Kachriya
<i>Cuscuta reflexa</i>	Amarbel
<i>Daemia extensa</i>	Vediparuthy
<i>Dioscorea alata</i>	Chupri alu
<i>Dioscorea hispida</i>	Baichandi
<i>Dregea volubilis</i>	Khamal
<i>Holostemma adakodien</i>	Chhirvel
<i>Rivea hypocrateriformis</i>	Rivea
<i>Ichnocarpus frutescens</i>	Dhoodhi, Dhimarbel, Chudhana, Kataai
<i>Ipomoea lobata</i>	Mina
<i>Ipomoea pestigridis</i>	Pulichuvadi, Putrain
<i>Jasminum grandiflorum</i>	Chameli, Van Chamali
<i>Jasminum malabaricum</i>	Kusar, Ran mogra, Mudgara
<i>Lablab purpureus</i>	Jangli tuar
<i>Lagenaria siceraria</i>	Kadavi tumbi
<i>Melothria maderaspatana</i>	Bilari
<i>Mikania cordata</i>	Mikenia
<i>Momordica charantia</i>	Karela, kathilla, poraru
<i>Momordica dioica</i>	Murela, Padora

<i>Mucuna pruriens</i>	Jangali kemach, Kachkungi, Kaivach, Karthoti, Kewanch
<i>Physalis minima</i>	Farfendua
<i>Piper longum</i>	Peepli
<i>Pueraria tuberosa</i>	Bodrikand
<i>Rubia cordifolia</i>	Manchatti, Manjeti, Raktbirar
<i>Smilax zeylanica</i>	Ram datoun
<i>Terramnus labialis</i>	Sarpoka, Sarppakhi, Piya bans, Vishkanti, Prajapati
<i>Tinospora cordifolia</i>	Sugner, Giloy, Chittamruthu
<i>Tribulus terrestris</i>	Gokaru, Gekharu, Ghogar, Ghoghru, Ghokhoor
<i>Trichosanthes cucumerina</i>	Chachinda, Chichonda
<i>Trichosanthes dioica</i>	Kundaru, kundru kand
<i>Trichosanthes palmata</i>	Kaheera
<i>Tylophora indica</i>	Vallippala
<i>Vallis solanacea</i>	Babool, Babul kikar, Dhodhera, Dudhbel
<i>Vanda tessellata</i>	Vanda, Nai, Perasara
<i>Ventilago madraspatana</i>	Lalbel, Keoti, Kirvai

STATE FOREST RESEARCH INSTITUTE JABALPUR

(An Autonomous Institute of Forest Department, Govt. of Madhya Pradesh)

CONTACT US

www.mpsfri.nic.in

sdfri@rediffmail.com

sfriwildlife@gmail.com

Landline: 0761- 2666529, 2665540 (Ext-254)

Fax: 0761 - 2661340